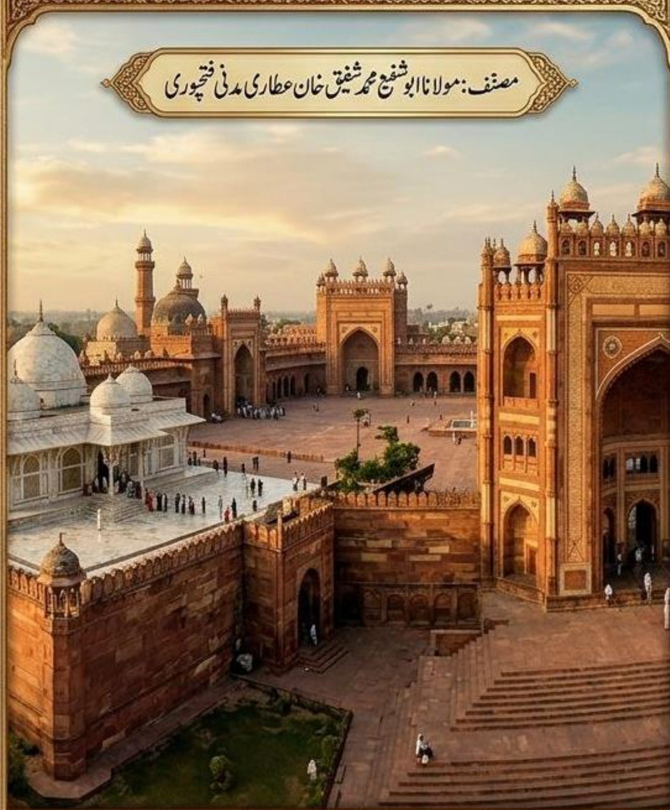
फतेहपुर सीकरी की तारीख



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

फ़तेहपुर सीकरी की तारीख़ पर लिखी जाने वाली

110 साल पुरानी किताब बनाम

रहनुमाए फतेहपुर सीकरी

1335 हिजरी / 1916 ईस्वी

मुसन्निफ़:अल्लामा सईद अहमद मारहरवी

अल मारूफ़

फतेहपुर सीकरी की तारीख

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

1447 हिजरी / 2026 ईस्वी

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

तमाम हुक़ूक़ ब हक्के मुरत्तिब महफ़ूज़ हैं

फतेहपुर सीकरी की तारीख पर लिखी जाने वाली 110 साल पुरानी

किताब बनाम

रहनुमाए फतेहपुर सीकरी

1335 हिजरी **1916 ईस्वी**

मुसन्निफ़:अल्लामा सईद अहमद मारहरवी

अल मारूफ़

फतेहपुर सीकरी की तारीख

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

1447 हिजरी **2026 ईस्वी**

पेज : 240 **क़ीमत : 300**

CONTACT NUMBER: +91 8808693818

EMAIL: SHAFIQMADANI26@GMAIL.COM

फेहरिस्त

तारीखे तबाअत

तारीख है येह देखिए तारीखे फतेहपुर
अकबर ने इस जगह का रखा नाम दारून्नूर
तारीख इस में लिखी है शैख सलीम की
आबाद जिनके दम से हुआ है येह फतेहपुर

"तारीख है येह देखिए तारीखे फतेहपुर" इस के अदद **2026** बनते हैं और **2026 ईस्वी** में येह किताब छप कर मंजरे आम पर आई है

"तारीख इस में लिखी है शैख सलीम की" इस के अदद **1447** बनते हैं और **1447 हिजरी** में येह किताब छप कर मंजरे आम पर आई है।

अज़ बिस्मिल फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

इस किताब के बारे में

सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी) ने **"रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी"** अल मारूफ़ **"फ़तेहपुर सीकरी की तारीख़"** नामी किताब पर काम करने की इब्तिदा शैख़ुल इस्लाम हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मज़ार शरीफ़ पर **24 जुमादल उख़रा 1447 हिजरी ब मुताबिक़ 16 दिसंबर 2025 ईस्वी** बरोज़ मंगल दोपहर तक़रीबन **12 बज कर 12 मिनट** पर किया।

कम्पोज़िंग, तर्तीब व तस्हील के बाद **12 शाबान 1447 हिजरी** ब मुताबिक़ **1 फरवरी 2026 ईस्वी** बरोज़ इतवार फ़तेहपुर के रहने वाले **मुहम्मद तौक़ीर अत्तारी** के साथ फ़तेहपुर सीकरी गया ताकि वहां जा कर मक़ामात के लोकेशन का **QR Code** और तस्वीर तैयार कर के किताब में शामिल करे।

मक़ामात के लोकेशन का **QR Code** और तस्वीर शामिले किताब कर के ब मक़ाम फैज़ाने मदीना नगला मेवाती आगरा, **22 शाबान 1447 हिजरी** ब मुताबिक़ **11 फरवरी 2026 ईस्वी** बुध की रात **1 बज कर 11 मिनट** पर इस किताब का काम मुकम्मल किया। अल्हम्दु लिल्लाह

अल्लाह पाक मेरी इस अदना सी काविश को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए और नजात का ज़रिया बनाए। आमीन

तारीख़ महेज़ वाक़िआत का अंबार नहीं होती, बल्कि येह क़ौमों के उरूज व ज़वाल, फ़िक्रो फ़न, अक़ीदतो सियासत और रूह व माद्दा के बाहमी तसादुम व इत्तिसाल की ज़िंदा तस्वीर होती है। बर्रे सग़ीर की

तारीख़ में बाज़ मक़ामात ऐसे हैं जो ईंट, पत्थर और इमारत से कहीं बढ़ कर एक अह्द, एक नज़रिया और एक तहज़ीबी रूह की नुमाइंदगी करते हैं। फ़तेहपुर सीकरी इन्ही दरख्शां मक़ामात में से एक है।

फ़तेहपुर सीकरी वो सर ज़मीन है जहां सल्तनते मुग़्लिया के जाहो जलाल ने आँख खोली, जहां फ़िक्रे अकबरी ने शक्ल पाई, जहां दरवेशी और सुल्तानी ने एक ही आँगन में क़ियाम किया, और जहां हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की रुहानी निगाह ने तारीख़ का रुख मोड़ दिया। येह मक़ाम सिर्फ़ क़िलों, दरवाज़ों, मसाजिद और महल्लात का मजमुआ नहीं बल्कि अक़ीदत, सियासत, फ़न्ने तामीर, समाजी निज़ाम और मज़हबी रुजहानात का ऐसा संगम है जिसकी मिसाल पूरे हिन्दुस्तान में कम मिलती है।

ज़ेरे नज़र किताब **"रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी"** अल मारूफ़ **"फ़तेहपुर सीकरी की तारीख़"** इसी हमागीर पसे मंज़र को सामने रखते हुए मुरत्तब की गई है। इस की ख़ुसूसीयत येह है कि मुसन्निफ़ ने फ़तेहपुर सीकरी को महेज़ सय्याह की नज़र से नहीं देखा बल्कि मुअर्रिख़, मुहक़्क़िक़, मज़ारात के अक़ीदत मंद और तहज़ीबी नक़्क़ाद सब की आँख से इस शहर को परखा है। यही वजह है कि पढ़ने वाले को यहां क़िला, मस्जिद, दरवाज़ा, बाज़ार, महल और सराये ही नहीं मिलती बल्कि उनके पसे पर्दा छुपी हुई कहानियां, रुहानी निस्बतें और तारीख़ी माअनवियत भी मिलती है।

किताब के अबवाब इस बात की गवाही देते हैं कि मुसन्निफ़ ने मौज़ू को निहायत मेहनत, जुस्तजू और दियानत के साथ बयान किया है। कहीं हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की हयाते तय्यिबा और

रुहानी फ़ैज़ान का तज़्किरा है, कहीं अकबर के फ़िक्री तजरिबात और दीनी मैलानात का ग़ैर जानिब दाराना जायज़ा, कहीं फ़न्ने तामीर की बारीकियों पर गुफ़्तगु है तो कहीं अवामी ज़िंदगी, बाज़ारों, सराओं और रोज़मर्रा तहज़ीब की झलक दिखाई देती है। इस किताब को महेज़ एक गाईड नहीं बल्कि एक मुस्तनद तारीख़ी हैसियत हासिल है।

सबसे अहम बात येह है कि मुसन्निफ़ ने रिवायत और तहक़ीक़ के दर्मियान ऐसा दर्मियाना रास्ता इख्तियार किया है जिस से ना तो अक़ीदत मजरूह होती है और ना तहक़ीक़ की रूह मुताअस्सिर होती है। यही खूबी इस किताब को आम पढ़ने वाले के लिए दिलकश और अहले इल्म के लिए काबिले एतिमाद बनाता है।

मुख़्तसरन येह कहा जा सकता है कि **"रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी"** अल मारूफ़ **"फ़तेहपुर सीकरी की तारीख़"** उन लोगों के लिए ना गुज़ीर है जो फ़तेहपुर सीकरी को सिर्फ देखना नहीं चाहते बल्कि समझना, महसूस करना और तारीख़ के आईने में इस की अस्ल सूरत पहचानना चाहते हैं। येह किताब पढ़ने वाले को सिर्फ इत्तिला नहीं देती, बल्कि उसे एक ऐसे सफ़र पर ले जाती है जहां हर सफ़ा एक नया सबक़ देता है और हर बाब तारीख़ से हम कलाम हो जाता है।

इस किताब में फ़तेहपुर सीकरी के तमाम अहम मक़ामात का तफ़्सीली तआरुफ़ मौजूद है, हर मक़ाम के साथ लोकेशन का **QR Code** दिया गया है ताकि पढ़ने वाला आसानी के साथ गूगल मैप के ज़रिये दुरुस्त मक़ाम तक पहुंच सके। हर तारीख़ी और रुहानी मक़ाम की वाज़ेह तस्वीर शामिल की गई है, जिस से पढ़ने वाले को मक़ाम को समझने और महसूस करने में आसानी हो।

किताब में तारीख़, तहज़ीब, औलियाए किराम के आसार और मक़ामात की मुख़्तसर मगर जामेअ मालूमात इस अंदाज़ से पेश की गई हैं कि येह किताब ज़ाइरीन, तलबा, मुहक़्क़िक़ीन और आम पढ़ने वाले सब के लिए यकसाँ मुफ़ीद है।

मुख़्तसर येह कि येह किताब देखने, पढ़ने और समझने तीनों चीज़ों का फाइदा देती है। दुआ है कि येह इल्मी काविश मक़बूले आम व ख़ास हो, और तारीख़ के इस अज़ीम वरसे को नई नस्ल तक सही तनाज़ुर में पहुंचाने का ज़रिया बने। आमीन

कलाम

पढ़ कर के देखें दीं की हकीकत किताब में
लिखी है कैसी कैसी हिदायत किताब में
चुन चुन के फूल लाए हैं उम्मत के वास्ते
कुरआं हदीस की है इबारत किताब में
जो ढूँढता है राहते क़ल्बो जिगर, सुनो
मिल जाएगी उसे भी सुकूनत किताब में
तालीम का वो नूर, ज़हानत की रौशनी
मौजूद है वो सारी ही हिकमत किताब में
तुमको तो सिर्फ पढ़ने की फुर्सत भी है कहां
लगती है कितनी खून की मेहनत किताब में
बेखुद हर एक नुक्ते को आसान कर दिया
हज़रत शफीक की है येह खिदमत किताब में

बेखुद मांडलवी राजस्थान

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम व नसब

मौलवी सईद अहमद ज़ुबैरी मारहरवी 1875 ईस्वी में ब मक़ाम क़स्बा मारहरा ज़िला एटा यूपी इंडिया में पैदा हुए। **मौलवी सुल्तान अहमद** (मुतावफ़्फ़ा 1914 ईस्वी) उनके वालिद माजिद एक निहायत क़ाबिल, दियानतदार, मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे। **आपकी वालिदा** क़ुरआन और उर्दू पढ़ना जानती थीं।

तालीम

मौलवी सईद अहमद मारहरवी ने मारहरा के एक मकतब में तालीम पाई, **उर्दू, फ़ारसी के इलावा अंग्रेज़ी** से भी वाक़िफ़ियत थी और मुहल्ले भर में सिवाए उनके अंग्रेज़ी जानने वाला कोई ना था। तमाम मुहल्ले बल्कि बाज़ दफ़ा क़स्बा भर के तार वग़ैरा यही पढ़ा करते थे। **सौमो सलात यानी रोज़ा नमाज़** के सख़्ती से पाबंद थे और अपने शागिर्दों को भी पाबंदी की सख़्त ताकीद फ़रमाते थे।

1889 ईस्वी में उर्दू मिडल का इम्तिहान पास किया, इसी दौरान आप की वालिदा का इंतिक़ाल हो गया। इसी ज़माने में आप के वालिद शाहजहाँपुर में बच्चों को पढ़ाया करते थे लिहाज़ा वालिदा के इंतिक़ाल के बाद आप अपने वालिद के पास **शाहजहाँ पुर तशरीफ़ ले गए** और वहीं मिशन हाई स्कूल में दाख़िला लिया मगर आप का दिल वहां ना लगा और आखिरे कार **तलाशे मआश के वास्ते** शाहजहाँ पुर को ख़ैर बाद कहा।

तलाशे मआश और आगरा

1894 ईस्वी बग़र्ज़े तलाशे मआश **आगरा आए** और ऐसे आए कि वहीं के हो के रह गए। आग़ाज़े मुलाज़िमत में तहसील आगरा में क़ाइम मक़ाम नायब नाज़िर मुक़र्रर हुए, उस के बाद **1899 ईस्वी में** दस रुपये माहाना तनख्वाह पर **कलैक्टरी आगरा में** बतौरे मुहर्रिर मुहाफ़िज़ ख़ाना मुक़र्रर हुए।

क़ौमी खिदमत

1909 ईस्वी से क़ौमी ख़िदमात का आग़ाज़ किया और कई शिकस्ता हाल मसाजिद की मरम्मत का काम शुरू करवाया।

इस दौर में आगरा के अंदर मुसलमान बच्चों की तालीमी हालत बड़ी नागुफ़्ता बेह थी सिवाए एक मदरसा के जो आगरा की जामा मस्जिद में था कोई और मकतब या मदरसा शहर भर में नहीं था कि जहां अच्छी तालीम हासिल करें। और इस की तरफ़ किसी की तवज्जोह भी ना थी कि बच्चों को लिखना पढ़ना आ जाये। पस इस दीनी ख़िदमत के तहत आप ने **आगरा में 23 मई 1911 ईस्वी को मदरसा मुहम्मदिया** के नाम से जारी किया जिस को तीन लोग मिल कर चलाते थे: **(1)** सईद अहमद मारहरवी, **(2)** मौलवी मुहम्मद शुऐब टोंकवी, **(3)** मुंशी आबिद अली।

मदरसे की शुरुआत

1912 ईस्वी में इस मदरसा में अरबी तालीम का आग़ाज़ हुआ और हर साल दर्से निज़ामी के तहत हदीस शरीफ़ का दौर होने लगा, **सालाना चार पाँच तलबा** फ़ारिग़ुत्तहसील होते थे।

मदरसे के दो हिस्से हो गए एक हिस्सा इब्तिदाई तालीम का जहां मकातिबे इस्लामिया का सरकारी मंज़ूर शुदा निसाब पढ़ाया जाता था और दूसरा हिस्सा **दौरए हदीस** का।

एक सानिहा

जुलाई सन 1913 ईस्वी में मौलवी मुहम्मद शुऐब साहिब ने अपने वतन टोंक में सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया और मुंशी आबिद अली साहिब का तबादला आगरा से बाहर हो गया इस तरह येह तीन साथी एक दूसरे से बिछड़ गए और मस्जिदो मदरसा की निगरानी और इस के चलाने का **सारा बोझ मौलवी सईद अहमद पर** आ पड़ा।

शुऐब मुहम्मदिया हाई स्कूल और मुखालिफ़त

मदरसा मुहम्मदिया ख़ासी तरक़्क़ी कर रहा था और अब उस का **माहाना ख़र्च 35 रुपये** के क़रीब हो गया था। तलबा की तादाद रोज़ ब रोज़ बढ़ रही थी । लेकिन मुसलमानों की जैसी आदत है कि अपने मुख्लिस कार कुनों और ख़ुद्दाम की हिम्मत अफ़ज़ाई और मदद करने के बजाये मुख़ालिफ़त शुरू कर देते हैं और क़ौमी कामों में तरह तरह के रोड़े अटकाते हैं। ऐसा ही मुआमला मौलवी सईद अहमद के साथ भी हुआ।

एक तरफ़ तो **माली मुश्किलात** का सामना, दूसरी तरफ़ किस्म किस्म की **मुख़ालिफ़तें और चेमेगोइयां** शुरू हो गईं, निहायत फालतू किस्म के गुमनाम ख़ुतूत आना शुरू हुए, कई दफ़ा **जान के लाले पड़** गए। लेकिन उन्होंने हिम्मत व पामर्दी से तमाम मुख़ालिफ़तों का मुक़ाबला किया और क़दम पीछे ना हटाया।

मुखालिफत का सबब

सारी **मुख़ालिफ़त का सबब** येह था कि सईद अहमद एक ग़ैर जगह का रहने वाला आगरा में ऐसा नामवरी का काम क्यूँ कर रहा है।

इसी दौरान में मदरसे के एक होनहार तालिबे इल्म को उस के बाप ने बग़र्ज़ अंग्रेज़ी तालीम मदरसा मुहम्मदिया से उठा कर मिशन स्कूल में दाख़िल कर दिया इस वाक़िअे ने मौलवी सईद अहमद साहब को बेहद मुताअस्सिर किया और उन्होंने एक **अंग्रेज़ी स्कूल क़ाईम करने** का तहय्या कर लिया। पैसे पास नहीं, ख़ुद आगरा के मुसलमानों जिन की बहबूद के लिए येह सब कुछ किया जा रहा था मुख़ालिफ़त पर कमर बस्ता मगर इस हिम्मत के पुतले ने ख़ुदा के भरोसे पर **सितंबर 1913 ईस्वी** को **शुऐब मुहम्मदिया स्कूल** क़ाईम कर ही दिया।

अगर इस स्कूल का नाम सईदिया होता तो कोई रोकने वाला ना था लेकिन येह उसी वक़्त हो सकता था जब ख़ुद सईद अहमद को नामो नमूद की ख्वाहिश होती। उन्होंने अपने अज़ीज़ दोस्त मरहूम मौलवी मुहम्मद शुऐब की यादगार में उन के नाम से स्कूल को मंसूब किया और पांचवें दर्जा तक अंग्रेज़ी तालीम का इंतिज़ाम कर दिया गया। उस वक़्त बे सरो सामानी का येह आलम था कि मास्टर साहिब ने कोई एक माह तक बच्चों को टाट के फ़र्श पर बिठा कर पढ़ाया। उनका मुशाहिरा 15 रुपया था। शुरुआत में सिर्फ **18 तलबा** थे। साल ब साल क्लासों का इज़ाफ़ा होता रहा यहाँ तक कि **1920 ईस्वी में** येह मदरसा हाई स्कूल हो गया फिर इंटर तक।

सग़ीरा फ़ातिमा निस्वां हाई स्कूल

आगरा में मुसलमान **लड़कियों की तालीम** के वास्ते कोई दर्स गाह ना थी। अंजुमन के मक़ासिद में लड़कियों के लिए स्कूल का क़ियाम भी था। मौलवी सईद अहमद के एक क़रीबी रिश्तेदार हाफ़िज़ मुहम्मद सईद मारहरवी की छोटी लड़की ने जिस का नाम सगीरा फ़ातिमा था जवानी के आलम में कि शादी को एक साल भी पूरा ना हुआ था इस दारे ना पाएदार से रेहलत की यानी इंतिक़ाल हो गया। मौलवी सईद अहमद साहब के मशवरे से हाफ़िज़ साहिब ने मरहूमा का ज़ेवर और जहेज़ का तमाम सामान **ईसाले सवाब के तौर पर** अंजुमन को दे दिया, और इस रक़म से **सगीरा फ़ातिमा निस्वां स्कूल** की शुरुआत दिसंबर 1918 ईस्वी में चार तालिबात से की गई।

तब्लीगी सरगर्मियाँ

इस तरह के कई काम आप ने सर अंजाम दिये मसलन:

मौज़ा सांधन, तहसील केरावली, ज़िला आगरा में मदरसा सिद्दीकिया का क़ियाम।

मौज़ा रुन्कता में मदरसा फ़ैज़ुल इस्लाम का कियाम।

आगरा छावनी रेलवे स्टेशन के क़रीब मौज़ा रसूलपुर में मदरसा फ़ैज़े आम।

मौज़ा मिढाकुर, नगला बंजारान, मौज़ा कराहिरा में भी मदारिस का क़ियाम किया।

शुऐब मुहम्मदिया स्कूल में बालिग़ान यानी बड़े लोगों के लिए रात में मदरसा शबीना जारी किया।

इस्लामी किताबों की फ़राहमी के लिए कुतुब ख़ाना मुहम्मदिया का क़ियाम 1916 ईस्वी में किया।

क़दीम यानी पुरानी और नादिर चीज़ों की हिफ़ाज़त के लिए अजाइब ख़ाना क़ाईम किया।

ला वारिस लाशों के कफ़न दफ़न के लिए तजहीज़ो तकफ़ीन ला वारिसान का एहतिमाम किया।

अंजुमन के फ़ंड से **ग़रीबों के मदद** के लिए इम्दाद ग़ुरबा व मसाकीन नामी कमेटी बनाई। मुसलमानों को सूदी क़र्ज़ लेने से बचाने के लिए **इस्माईल कर्ज़े हसना** फ़ंड क़ाईम किया जिसमें बिग़ैर सूद के लोगों को क़र्ज़ दिया जाता था।

1930 ईस्वी में ईदे मीलादुन्नबी ﷺ की तहरीक शुरू की जिसके तहत 12 रबीउल अव्वल को बड़े एहतिमाम के साथ **जुलूसे ईदे मीलाद** निकाला जाता था।

उन दिनों इर्तिदाद का फ़ित्ना काफ़ी ज़ोर पकड़ रहा था लिहाज़ा उस की सरकूबी के लिए **तब्लीग़ो हिफ़ाज़ते इस्लाम** नामी कमेटी क़ाईम की जो देहातों में जा कर दीन की तब्लीग़ करती थी।

वफ़ात पुर मलाल

1946 ईस्वी को आगरा में सफ़रे आखिरत इख्तियार किया और मज़ार **शुऐब मुहम्मदिया स्कूल हींग मंडी** की मस्जिद में ज़ियारत गाह ख़ास व आम है।

मुसन्निफ़ की किताबें

मुसन्निफ़ की चंद किताबें येह हैं:

(1)-मुरक़्क़ा अकबराबाद (2)-आसारे ख़ैर

(3)-मशाहीरे अकबराबाद (4)-गुलदस्तए मुहम्मदिया

(5)-उमराए हनूद (6)-बोस्ताने अख़्यार

(7)-रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी (8)-ख़ुतूत

(9)-फूलों का हार (10)-क़ौमी फुलवारी

सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी) ने मुसन्निफ़ की इन किताबों में से **'बोस्ताने अख़्यार'** और **“रहनुमाए फतेहपुर सीकरी”** पर काम कर दिया है जो कि आपके सामने है, अब **''मुरक़्क़ा अकबराबाद''**,और **''आसारे ख़ैर''** पर तर्तीबो तस्हील का काम जारी है इंशाअल्लाह बहुत जल्द येह किताबें भी ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता हो कर आपके सामने होंगी।

सगे अत्तार अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फतेहपुरी

अल्लामा सईद अहमद मरहरवी के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



मुरत्तिब का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी से क़ुरआने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ’ज़मगढ़ में

मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तस्नीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 50 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईसवी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक़र्रिर और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

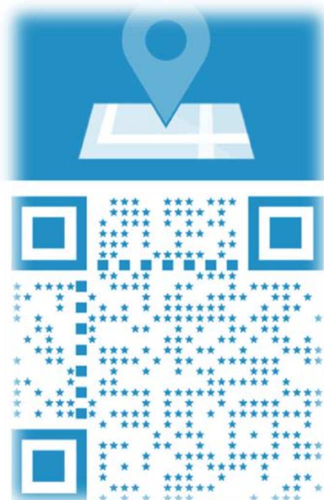
अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी की किताबों को डाउनलोड करने का QR Code



जमियातुल मदीना फैज़ाने सिद्दीके अकबर आगरा के Location का QR Code

जिस जमियातुल मदीना में हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी 2014 ईस्वी से अब (2026 ईस्वी) तक तदरीस फरमाते हैं।





اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم
اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
सीरत
हज़रत शैख सलीम चिश्ती
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
पैदाइश :884 हिजरी
वफ़ात :979 हिजरी
आप इस बाब में पढ़ सकेंगे
खानदानी हालात
नसब नामा पिदरी
पैदाइश मुबारक
बचपन की करामत
सैरो सयाहत
बैअतो खिलाफत
सफ़रे हरमैन शरीफैन
सलातीन से ताल्लुक
शादी और औलाद
वफ़ात
सीरते मुकद्दस
फरमान व करामत
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सन्ना दिल्ली

सीरत हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

रहमतुल्लाह अलैहि

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने सरचश्मा फ़ैज़ व इरशाद से एक आलम को सैराब फ़रमाया।

ख़ानदानी हालात

आप रहमतुल्लाह अलैहि के आबाओ अज्दाद अजोधन से हिजरत कर के लुधियाना आए कुछ अरसा लुधियाना में रहे, फिर दिल्ली में सुकूनत इख्तियार की, आपके वालिदैन दिल्ली से तर्के सुकूनत कर के फ़तेहपुर सीकरी में रहने लगे।

आप रहमतुल्लाह अलैहि हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैहि के वालिद का नाम हज़रत बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि है। और आप रहमतुल्लाह अलैहि की वालिदा का नाम बीबी अहद रहमतुल्लाह अलैहिा है। हज़रत शैख़ मूसा चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई हैं।

नसब नामा पिदरी

आप रहमतुल्लाह अलैहि का नसब नामा वालिद की जानिब से इस तरह है:

शैख़ सलीम बिन बहाउद्दीन बिन शैख़ सुल्तान बिन शैख़ आदम बिन शैख़ मूसा बिन शैख़ मौदूद बिन शैख़ बदरुद्दीन बिन शैख़ फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहिम ।

पैदाइश मुबारक

आप रहमतुल्लाह अलैहि दिल्ली के उस वक़्त के एक मुहल्ला **"सराय अलाउद्दीन ज़िंदा पीर"** में 884 हिजरी में पैदा हुए। आप रहमतुल्लाह अलैहि के पैदाइश के साल में इख्तिलाफ़ है, बाज़ ने आप रहमतुल्लाह अलैहि का पैदाइश साल 897 हिजरी लिखा है।

नाम

आप रहमतुल्लाह अलैहि का नाम शैख़ सलीम है और अरब में आप रहमतुल्लाह अलैहि को शैख़ु हिंद के लक़ब से पुकारा जाता है।

बचपन की करामत

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने पैदा होते ही सज्दा किया। आप रहमतुल्लाह अलैहि की पेशानी में धान का एक दाना चुभ गया। उस दाने का निशान पेशानी पर तमाम उम्र रहा। एक बार इस वाक़िआ का ज़िक्र करते हुए आप रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि धान के दाने चुभने से काफ़ी तकलीफ़ होती थी। उस को निकालना चाहा लेकिन इस ख़्याल से नहीं निकाला कि लोगों में इस बात का चर्चा होगा।

बचपन का सदमा

अभी आप रहमतुल्लाह अलैहि कमसिन ही थे कि वालिदैन का साया सर से उठ गया। आप रहमतुल्लाह अलैहि की परवरिश आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई के साये में हुई, आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैहि ने आप रहमतुल्लाह अलैहि की तर्बीयत पर काफ़ी ध्यान दिया।

बुलूग़त की उम्र को पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सफ़र का इरादा किया, अपने बड़े भाई से इजाज़त मांगी, आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई हज़रत शैख मूसा चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि ने आप रहमतुल्लाह अलैहि को इजाज़त नहीं दी और कहा: कि मेरी कोई औलाद नहीं है, और तुम ही मेरी औलाद हो और मैंने तुम्हें अपनी औलाद की तरह पाला है। येह सुन कर आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने बड़े भाई से कहा कि ना उम्मीद ना होना चाहिए, आप रहमतुल्लाह अलैहि के यहां लड़का पैदा होगा, आप रहमतुल्लाह अलैहि का घर रौशन होगा, चुनांचे ऐसा ही हुआ, नौ महीने के बाद शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैहि के यहां लड़का पैदा हुआ।

तालीम

आप रहमतुल्लाह अलैहि के बड़े भाई के यहां जब लड़का पैदा हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने रख़्ते सफ़र बाँधा। फ़तेहपुर सीकरी से सरहिंद तशरीफ़ लाए और अल्लामा शैख़ मज्दुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि से उलूमे ज़ाहिरी की तकमील की, जिस ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैहि का क़ियाम सरहिंद में था, आप रहमतुल्लाह अलैहि कभी कभी क़स्बा बदाली जाते और हज़रत शैख़ ज़ैनुल आबिदीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मज़ार से फ़ुयूज़ व बरकात हासिल करते।

सैरो सयाहत

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने 931 हिजरी में हरमैन शरीफ़ की ज़ियारत की, कुछ अरसा मक्का शरीफ में क़ियाम फ़रमाया, फिर मदीनए मुनव्वरा में पहुंच कर दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में रहने लगे, फिर अरब, अजम, खुरासान, बसरा, शाम की सैरो सयाहत फ़रमाई, फिर उस के बाद अरब वापस आए।

हिन्दुस्तान को वापसी

अरब से आप हिन्दुस्तान वापस आए और फ़तेहपुर सीकरी में गोशा नशीन हो कर इबादात, मुजाहिदात और रियाज़ात में मशग़ूल हुए। ख़ानक़ाह तैयार कराई, बाग़ लगाया और कुवें खुदवाए।

बैअतो ख़िलाफ़त

सैरो सयाहत के दौरान आप रहमतुल्लाह अलैहि बहुत से बुज़ुर्गों और दरवेशों से मिले और उनसे फुयूज़ो बरकात हासिल किए। हज़रत शैख़ इब्राहीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के दस्ते हक़ परस्त पर आप रहमतुल्लाह अलैहि बैअत हुए और उनसे खिरकए ख़िलाफ़त पाया।

सफ़र हरमैन शरीफ़

हैमों बक़्क़ाल की फ़ित्ना परदाज़ी की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैहि को दोबारा वतन से बाहर जाना पड़ा, आप रहमतुल्लाह अलैहि 962 हिजरी में बैतुल्लाह पहुंचे और सैरो सयाहत के बाद 976 हिजरी में वापस हुए।

सलातीन से तअल्लुक़ात

इलावा उमरा के सलातीन भी आप रहमतुल्लाह अलैहि के मोअतक़िद थे। ख़वास ख़ां जो उमराए किबार में से था, आप रहमतुल्लाह अलैहि से बहुत अक़ीदत रखता था, कई बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैहि के मोअतक़िद थे। शेर शाह, सलीम शाह और अकबर बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैहि से इरादतो अक़ीदत रखते थे और बहुत ख़ुलूस, मुहब्बत, इज़्ज़त और ताज़ीम व तकरीम के साथ आप रहमतुल्लाह अलैहि से पेश आते थे।

शादी और औलाद

पहले सफ़र से वापसी के बाद जब फ़तेहपुर सीकरी तशरीफ़ लाए तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने शादी की। आप रहमतुल्लाह अलैहि के तीन लड़के थे :

(1)ताजुद्दीन सबसे छोटे साहबज़ादे थे, इनका इंतिक़ाल ढाई साल की उम्र में हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैहि के दो और लड़के थे।

(2) शैख़ बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के विसाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैहि के सज्जादा नशीन हुए और

(3) क़ुतुबुद्दीन बादशाह जहांगीर के ज़माने में ऊंचे ओहदे पर फ़ाइज़ हुए।

वफ़ात

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने 29 रमज़ान 979 हिजरी को विसाल फ़रमाया। **मज़ार फ़ैज़े आसार** फ़तेहपुर सीकरी में मरजए ख़ास व आम है।

खुल्फ़ा

आप रहमतुल्लाह अलैहि के बाद आप रहमतुल्लाह अलैहि के साहिबज़ादे हज़रत शैख़ बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि आप रहमतुल्लाह अलैहि के सज्जादा

नशीन हुए। अरब में जब आप रहमतुल्लाह अलैहि का क़ियाम हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सैय्यिद मुहम्मद वली रहमतुल्लाह अलैहि, शैख़ महमूद शामी रहमतुल्लाह अलैहि और शैख़ रजब अली रहमतुल्लाह अलैहि को खिरकए ख़िलाफ़त से मुम्ताज़ फ़रमाया, इनके इलावा आप रहमतुल्लाह अलैहि के मुम्ताज़ खुल्फ़ा येह हैं।

(1)---शैख़ अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाह अलैहि

(2)--- शैख़ इमाम सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैहि

(3)--- इमाम सैय्यिद हुसैन रहमतुल्लाह अलैहि

(4)--- शैख़ रुकनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि

(5)--- शैख़ याक़ूब रहमतुल्लाह अलैहि

(6)---शैख़ हम्माद रहमतुल्लाह अलैहि

(7)---शैख़ मुहम्मद ग़ौरी रहमतुल्लाह अलैहि

(8)--- शैख़ कबीर रहमतुल्लाह अलैहि

(9)--- शैख़ मुहम्मद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि

(10)--- शैख़ कमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि

(11)--- शैख़ फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि

सीरत मुक़द्दस

शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि साहिबे इल्म व फ़ज़्ल, जामेअ शरीअत व तरीक़त बुज़ुर्ग थे, ज़ोहदो तक़्वे, रियाज़त, मुजाहिदात, तर्क व तजरीद, तहम्मुल, बुर्दबारी में यगानए ज़माना थे, जब तक आप रहमतुल्लाह

अलैहि बहुत कमज़ोर व ज़ईफ़ ना हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैहि ने तै के रोज़े नहीं छोड़े, आप रहमतुल्लाह अलैहि को पुराना सिरका और ठंडी तरकारियां बहुत मर्ग़ूब यानी पसंद थीं, ठंडे पानी से रोज़ाना ग़ुस्ल फ़रमाते थे, कैसी ही सर्दी हो आप रहमतुल्लाह अलैहि के लिबास में कोई तब्दीली नहीं होती थी, जाड़े के मौसम में भी बारीक कुर्ता ज़ेबे तन फ़रमाते थे, नमाज़ अव्वल वक़्त पढ़ते थे, लोगों को उन बातों से जो शरीअत के ख़िलाफ़ हैं रोकते थे, जब आप रहमतुल्लाह अलैहि महफ़िल में रौनक अफ़रोज़ होते तो हर शख़्स पर निगाह रखते, किसी को डाँटते, किसी को नसीहत फ़रमाते और किसी को तालीमो तलक़ीन फ़रमाते।

फ़रमान

दरवेशों की हड्डियों में इश्क़े इलाही के सबब बेशुमार सुराख़ होते हैं।

करामत

बादशाह अकबर के कोई लड़का ना था, आप रहमतुल्लाह अलैहि से दुआ का तालिब हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैहि ने मुराक़बा किया और बादशाह अकबर से कहा: अफ़सोस है कि तेरी तक़दीर में बेटा नहीं है। बादशाह अकबर ने येह सुनकर आप रहमतुल्लाह अलैहि से अर्ज़ किया: चूँकि मेरी तक़दीर में बेटा नहीं है, इसी लिए तो आप रहमतुल्लाह अलैहि से अर्ज़ किया है आप रहमतुल्लाह अलैहि दुआ कीजिए। आप रहमतुल्लाह अलैहि बादशाह अकबर के इस जवाब से ख़ुश हुए, थोड़ी देर मुराक़बा किया और फिर फ़रमाया: इस मुल्क में राजपूतों की हुकूमत बहुत अर्से तक रहेगी। अच्छा कल अपनी बेगम यानी बीवी को मेरी बीवी के पास भेज देना।

दूसरे दिन जब बादशाह की बेगम आप रहमतुल्लाह अलैहि के यहां आई तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी अहलिया मुहतरमा को रानी की पुश्त यानी पीठ से पीठ मिला कर बैठने का हुक्म दिया, जब आप रहमतुल्लाह अलैहि की अहलिया मुहतरमा रानी की पुश्त से पुश्त मिला कर बैठी तो आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी चादर दोनों पर डाल दी, फिर अपनी अहलिया मुहतरमा से फ़रमाया कि अपना होने वाला फ़र्ज़ंद यानी बेटा रानी को दे दो। जब बादशाह की बेगम के लड़का पैदा हुआ तो उस लड़के का नाम आप रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने नाम पर **सलीम** रखा, शहज़ादा सलीम आप रहमतुल्लाह अलैहि को **शैख़ू बाबा** कहा करता था, शहज़ादा सलीम अपने वालिद बादशाह अकबर के इंतिक़ाल के बाद तख़्तो ताज का मालिक हुआ और **जहांगीर** के लक़ब से मशहूर हुआ।

एक मर्तबा का वाक़िआ है कि आप रहमतुल्लाह अलैहि हुजरे से नमाज़ के वास्ते मस्जिद जा रहे थे, एक फ़क़ीर को देखा कि सो रहा था आप रहमतुल्लाह अलैहि ने उस को जगाया और उस से फ़रमाया: फ़क़ीरों को किसी से लड़ना नहीं चाहिए। वो फ़क़ीर येह सुनकर शर्मिंदा हुआ और इक़रार किया कि वाक़ेई वो ख्वाब में लड़ रहा था।

आप रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़तेहपुर सीकरी के लोगों से शाही इमारात तामीर होने से 15 साल पहले फ़रमा दिया था कि लोगों को चाहिए कि मकानात कुशादा बना लें, वर्ना फिर जगह नहीं मिलेगी।

नोट: येह सारा मज़मून दर्ज ज़ेल किताबों से लिया गया है :

(1)---अख्बारुल अख्यार (उर्दू तर्जुमा)

(2)---तारीख़े फ़रिश्ता (जिल्द दोम, फ़ारसी)

(3)---मआरिज़ुल विलायत

(4)---तज़्किरए औलियाए पाको हिंद, पेज (232.236)

खानकाह हज़रत शैख सलीम चिश्ती



आम मुसलमान के लिए नमाज़ और उस के ज़रूरी अहकाम
सीखने के लिए बेहतिरीन किताब बनाम

आसान हनफ़ी नमाज़

मुरत्तिब
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

आप इस किताब में पढ़ सकेगें
- दीनी इल्म सीखने की फ़ज़ीलत
- वुज़ू के मसाइल
- तयम्मुम के मसाइल
- कपड़े पाक करने के तरीके
- सजदए सहव के मसाइल
- माज़ूरे शरई के मसाइल
- ईद के मसाइल
- मुसाफ़िर के मसाइल
- अज़ानो इक़ामत के मसाइल
- नमाज़ में लुक़मा के मसाइल
- मस्जिद के मसाइल
- गुस्ल के मसाइल
- नजासतों के मसाइल
- नमाज़ के मसाइल
- इमामत के मसाइल
- जुमा के मसाइल
- इक़्तिदा के मसाइल
- नमाज़े जनाज़ा के मसाइल
- सज्दए तिलावत के मसाइल

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
+91-9368287284, 8808693818
₹ 120/-

मुक़द्दमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَ عَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

फ़तेहपुर सीकरी को किस ने आबाद किया ?

फ़तेहपुर सीकरी को हिन्दुस्तान के बादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने आबाद किया था, जिसने ना सिर्फ ख़ानदाने मुग़िलया की बुनियादी सल्तनत को बुलंदी तक पहुंचा दिया बल्कि उसे ऐसा मज़बूत किया कि सदियों तक जुंबिश ना हुई। उस ज़माने में 25 से 30 साल के क़रीब इस नए आबाद शहर को दारुल ख़िलाफ़त होने का फ़ख़र और दरबारे अकबरी का ऐज़ाज़ हासिल रहा। अब अगर्चे तीन, चार सौ बरस से येह वीरान पड़ा है मगर अब भी इस में पिछली अज़्मत की ऐसी यादगारें बाक़ी हैं कि हिन्दुस्तान की किसी गुज़श्ता दारुल हकूमत में इस की मिसाल मिलना मुश्किल है।

अज़ीमुश्शान इमारात

उत्तरी हिन्दुस्तान में किसी जगह ऐसी नफ़ीस, सही व सालिम और अज़ीमुश्शान इमारात और महल्लात का मजमूआ मौजूद नहीं है जैसा फ़तेहपुर सीकरी में है। और येह बात ख़ास दिलचस्पी से देखने के काबिल है कि ना सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया के दीगर मुल्कों में भी कोई जगह ऐसी

नहीं बताई जा सकती कि जहां एक बादशाह के आधे ज़माने की इस क़दर ज़्यादा इमारतें मौजूद हों।

हैरत में डालने वाली इमारात

यही वजह है कि बड़े बड़े जहाँ दीदा (यानी दुनिया को देखने वाले) सय्याह और वसीउन नज़र मुअर्रिख जब इन इमारतों को देखते हैं तो इस ख़्याल में महवे हैरत रह जाते हैं कि इस क़लील मुद्दत में फ़तेहपुर सीकरी जैसे पहाड़ी मक़ाम पर किस तरह ऐसी नफ़ीस और आलीशान इमारतें तामीर हो गईं। एक बड़े मुबस्सिर का क़ौल है कि फ़तेहपुर सीकरी को गुज़श्ता ज़माने की संग तराशी का अजाइब ख़ाना और नक़्श व निगार का तिलस्म ख़ाना कहना ज़्यादा मुनासिब है। बाकमाल संग तराशों और आली दिमाग़ नक़्क़ाशों ने मुख़्तलिफ़ इमारात को अजीबो ग़रीब नक़्शो निगार और मुख्तलिफ़ किस्म की ज़ेबाइशों से मुज़य्यन और मुरस्सा किया है।

पत्थर की मज़बूती और नफ़ासत का तो क्या कहना बल्कि जिस गारे या चूने से पत्थरों को वस्ल किया यानी जोड़ा है वो भी फ़ौलाद को शरमाता और हश्त धात को मात करता है। बड़े बड़े इंजीनियर और कैमिस्ट आज तक उस के अज्ज़ा अलैहिदा करने से माज़ूर हैं। और किसी की समझ में नहीं आता कि येह गारा किस तरकीब और किन अज्ज़ा से बनाया गया था।

अफ़सोस कि अब ना वो ज़माना वापस आ सकता है। ना अकबर बादशाह जिसने फ़तेहपुर सीकरी को आबाद कर के ऐसी नफ़ीस इमारतों से आरास्ता व पैरास्ता किया था फिर ज़िंदा हो सकता है। ना यहां पहली सी रौनक हो सकती है।

आसारे अकबरी

1323 हिजरी बमुताबिक़ 1905 ईस्वी में राक़िमुल हरूफ़ ने फ़तेहपुर सीकरी की मुफ़स्सल तारीख़ कलमबंद की थी जो **मतबए अकबरी आगरा** में बड़ी तक़ती के 228 सफ़्हों पर **“आसारे अकबरी”** के नाम से तबा हो कर शायेअ हुई। अब चूँकि फ़तेहपुर सीकरी में रेल जारी हो गई है लिहाज़ा सय्याहों के आमदो रफ़्त की कसरत की वजह से इस बात की ज़रूरत महसूस हुई कि फ़तेहपुर सीकरी की एक मुख़्तसर मगर मुकम्मल तारीख़ कलमबंद की जाये। लिहाज़ा **आसारे अकबरी** का ख़ुलासा कर के ख़फ़ीफ़ इज़ाफ़े के साथ येह किताब **रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी** के नाम से शायेअ की जाती है। ख़ुदा करे कि पसंदे ख़ातिरे अहबाब और सय्याहाने फ़तेहपुर सीकरी हो। आमीन

ख़ाकसार सईद अहमद मारहरवी
मक़ाम आगरा 5 ज़िल हिज्जा 1334 हिजरी
बमुताबिक़ 4 अक्टूबर 1916 ईस्वी

कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं "इस औरत को तलाक़ दे दो" आख़िर लड़कियों की पैदाइश में
कुसूर किस का
मर्द का या औरत का
इस्लाम और साइंस की रोशनी में
आप इस किताब में पढ़ सकेगें
ज़मानए-जाहिलियत की कुछ यादें
पाँच लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें
बेटियों के फ़ज़ाइल
साइंस क्या कहती है?
दिलचस्प सवालातो-जवाबात
इल्मुल जनीन क्या है?
बच्चे की पैदाइश का सबब क्या है?
बच्चे की पैदाइश का मरहला
बे औलादी के 4 रुहानी इलाज
औलादे नरीना के रुहानी इलाज
मुरत्तिब
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी
PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
+91-9368287284, 8808693818
₹ 60/-
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

पहला बाब

फ़तेहपुर सीकरी

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

*सीकरी की मशहूर शख़्सियत
*अकबर बादशाह का सलीम चिश्ती की बारगाह में आना
*अकबर बादशाह को बेटा मिला
*फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद
*फ़तेहपुर सीकरी दारुस्सल्तनत बन गया
*फ़तेहपुर सीकरी की चहल पहल
*फ़तेहपुर सीकरी के दरवाज़े

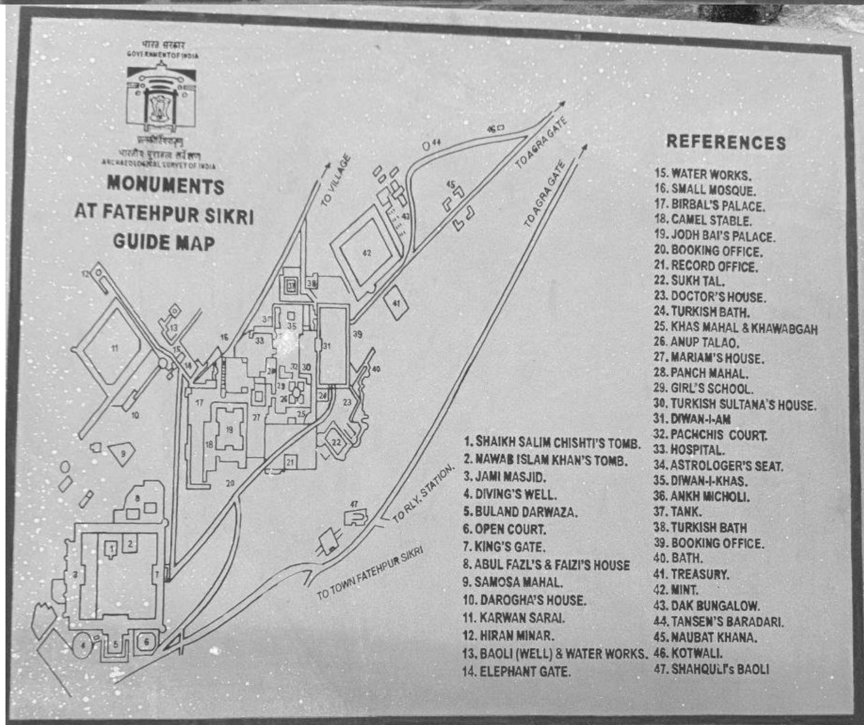
तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़
ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली




Fatehpur Sikri ~ Imperial Palace Complex
Daftarkhana
Khwabgah
Anup Talao
Sultanas House
Pachisi Court
Diwan-i-Aam
Miriams House
Panch Mahal
Girls School
Ankh michauli
Diwan-i-Khaas


MONUMENTS
AT FATEHPUR SIKRI
GUIDE MAP
TO VILLAGE
TO AGRA GATE
TO AGRA GATE
TO RLY. STATION
TO TOWN FATEHPUR SIKRI
1. SHAIKH SALIM CHISHTI'S TOMB.
2. NAWAB ISLAM KHAN'S TOMB.
3. JAMI MASJID.
4. DIVING'S WELL.
5. BULAND DARWAZA.
6. OPEN COURT.
7. KING'S GATE.
8. ABUL FAZL'S & FAIZI'S HOUSE
9. SAMOSA MAHAL.
10. DAROGHA'S HOUSE.
11. KARWAN SARAI.
12. HIRAN MINAR.
13. BAOLI (WELL) & WATER WORKS.
14. ELEPHANT GATE.
REFERENCES
15. WATER WORKS.
16. SMALL MOSQUE.
17. BIRBAL'S PALACE.
18. CAMEL STABLE.
19. JODH BAI'S PALACE.
20. BOOKING OFFICE.
21. RECORD OFFICE.
22. SUKH TAL.
23. DOCTOR'S HOUSE.
24. TURKISH BATH.
25. KHAS MAHAL & KHAWABGAH
26. ANUP TALAO.
27. MARIAM'S HOUSE.
28. PANCH MAHAL.
29. GIRL'S SCHOOL.
30. TURKISH SULTANA'S HOUSE.
31. DIWAN-I-AM
32. PACHCHIS COURT.
33. HOSPITAL.
34. ASTROLOGER'S SEAT.
35. DIWAN-I-KHAS.
36. ANKH MICHOLI.
37. TANK.
38. TURKISH BATH
39. BOOKING OFFICE.
40. BATH.
41. TREASURY.
42. MINT.
43. DAK BUNGALOW.
44. TANSEN'S BARADARI.
45. NAUBAT KHANA.
46. KOTWALI.
47. SHAHQULI's BAOLI

पहला बाब

फ़तेहपुर सीकरी

आबादी तरक़्क़ी तनज़्ज़ुली

फ़तेहपुर सीकरी आगरा से 23 मील के फ़ासिले पर आगरा बयाना रेलवे के रास्ते पर मौजूद है, येह बहुत पुराना क़स्बा नहीं है बल्कि आज से क़रीबन साढ़े तीन सौ बरस (अब साढ़े चार सौ साल) पहले उस की बुनियाद क़ाइम हुई थी।

फ़तेहपुर से पाँच छः फ़र्लांग के फ़ासले पर मौज़ा सीकरी आबाद है जो अब नगर और सीकरी दोनों नामों से मशहूर है। पुराने ज़माने में येह सरकार बयाना (बयाना अब राजिस्थान में आता है) के मुताअल्लिक़ एक मशहूर इस्लामी क़स्बा था जिसमें पाँच सौ घर सिर्फ अंसारियों के थे।

बावजूद इम्तिदादे ज़माना पुरानी आबादी के बहुत से खंडर और क़ब्रें अब तक मौजूद हैं। 84 मस्जिदें, पच्चास, साठ बरस पहले तक मौजूद थीं जिनके निशानात अब तक बतलाए जाते हैं। अब अक्सर मस्जिदों के अंदर आबादी हो गई है।

मौजूदा खन्डरात में दरवाज़ा गढ़ी, राजा बलराम मंदिर, बावली क़दीम, मस्जिद मेवातियाँ, मस्जिद मस्त अली, मस्जिद फ़तेह मुहम्मद, जामा मस्जिद, या बावन खम्मी मस्जिद, क़ाज़ी की हवेली, ज़नानी मस्जिद, मस्जिद अंबिया, मक़बरा मख़दूम साहिब, मूसा गुंबद, शायक़ीन आसारे क़दीमा की दिलचस्पी का बाइस हैं।

सीकरी की मशहूर शख़्सियत

इसी क़स्बा सीकरी में एक बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि रहते थे जो शैख़ फ़ारूक़ी रहमतुल्लाह अलैहि और हज़रत बाबा शैख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद में थे। आप रहमतुल्लाह अलैहि की पैदाइश तो दिल्ली की थी लेकिन 9 बरस की उम्र थी कि अपने वालिदैन के साथ सीकरी में तशरीफ़ ले आए थे और इब्तिदाए हाल में सीकरी की पहाड़ी के ऊपर जहां अब **मस्जिद संगतराश** मौजूद है एक बड़े ग़ार में बैठ कर जो अब भी उस मस्जिद के हुजरे में मौजूद है इबादत व रियाज़त फ़रमाया करते थे।

पहला हज का सफ़र

18 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैहि हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए। और 30 बरस तक अरब, ईरान, रुम, शाम, बग़दाद शरीफ़, नजफ़ अशरफ़, करबलाए मुअल्ला, बसरा, लहसा, मिस्र और पच्छिमी इस्लामी मुमालिक में सैर व सयाहत और 24 या 14 हज अदा फ़रमा कर 944 हिजरी बमुताबिक़ 1537 ईस्वी में सीकरी में वापस तशरीफ़ लाए और उसी ग़ार के क़रीब आप रहमतुल्लाह अलैहि ने सुकूनत इख्तियार फ़रमाई और चंद खल़ीफ़ा और मोअतक़िदीन के मकानात भी क़ुर्बो जवार में तामीर हुए।

दूसरा हज का सफ़र

962 हिजरी बमुताबिक़ 1554 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैहि दोबारा हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए और 971 हिजरी बमुताबिक़ 1563 ईस्वी में वापस आए। उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैहि ने एक ख़ानक़ाह की

बुनियाद डाली और मस्जिद संगतराश भी ग़ालिबन उसी वक़्त तामीर की गई।

अकबर बादशाह का सलीम चिश्ती की बारगाह में आना

येह अकबर बादशाह का इब्तिदाई ज़माना था। बादशाह की 17 या 28 बरस की उम्र हो गई थी। इस अरसा में कई बच्चे हुए और मर गए। बादशाह को औलाद की बड़ी आरज़ू थी और इस तमन्ना में अक्सर साहिबे कमाल फकीरों की ख़िदमत में भी दुआ की इल्तिमास दुआकरने के वास्ते हाज़िर हुआ करता था। एक दिन शैख़ मुहम्मद बुख़ारी और हकीम ऐनुल मलिक ने बादशाह के रूबरू हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के बहुत से औसाफ़ और कमालात बयान किए। बादशाह को मुलाक़ात का इश्तियाक़ यानी शौक़ पैदा हुआ और ख़ुद हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दुआ की इल्तिजा की। इस मुलाक़ात का हाल जहांगीर बादशाह ने अपनी किताब **'तोज़क जहांगीरी'** में इस तरह लिखा है :

> **जिन दिनों वालिद बुज़ुर्गवार को फ़र्ज़ंद की बड़ी आरज़ू थी, एक पहाड़ में सीकरी इलाक़ा आगरा के पास शैख़ सलीम** रहमतुल्लाह अलैहि **नाम एक साहिबे हालत फ़क़ीर थे कि उम्र की बहुत मंज़िलें तै की हुई थीं, उधर के लोगों को उन से बड़ी अक़ीदत थी, मेरे वालिद जो कि फ़क़ीरों के नियाज़मंद थे उन के पास गए। एक दिन तवज्जो के दौरान और बेख़ुदी के आलम में उनसे पूछा कि हज़रत क्या मेरे फ़र्ज़ंद होंगे ? फ़रमाया: कि ख़ुदा तुम्हें तीन फ़र्ज़ंद देगा।**

वालिद ने कहा: कि मैं मन्नत मानता हूँ कि पहले फ़र्ज़ंद को आप रहमतुल्लाह अलैहि के दामने तर्बियत और तवज्जो में डालूँगा और आप रहमतुल्लाह अलैहि की मेहरबानी को उस का हामी और हाफ़िज़ करूँगा। शैख़ रहमतुल्लाह अलैहि की ज़बान से निकला कि मुबारक हो। मैं भी उसे अपना हम नाम बनाऊँगा।

अकबर बादशाह को बेटा मिला

इस मुलाक़ात के थोड़े ही दिन बाद बादशाह को मालूम हुआ कि एक बेगम को हमल है। येह सुनकर बादशाह अकबर को बहुत ख़ुशी हासिल हुई और बेगम को ख़ुद हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मकान पर पहुंचा दिया और चंद रोज़ हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की मुलाज़िमत में रहा और रंग महल की इमारत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की हवेली और ख़ानक़ाह के पास बनवानी शुरू की। और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के वास्ते एक नई आलीशान ख़ानक़ाह और मस्जिद की तामीर का हुक्म दिया।

जहांगीर की पैदाइश

17 रबीउल अव्वल 977 हिजरी बमुताबिक़ 1569 ईस्वी को शहज़ादा सलीम यानी जहांगीर बादशाह और 13 मुहर्रम 978 हिजरी बमुताबिक़ 1570 ईस्वी को शहज़ादा मुराद इसी मकान (यानी रंग महल) में पैदा हुआ। दोनों मर्तबा बड़ी बड़ी ख़ुशी के सामान हुए और मुल्क के तमाम क़ैदी आज़ाद हो गए। जब शहज़ादा सलीम की उम्र दो बरस की हो गई तो 17 रबीउल अव्वल 979 हिजरी बमुताबिक़ 1571 ईस्वी को अकबर बादशाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मकान पर आया।

दोनों शहज़ादों को देखा ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गया। उसी दिन हुक्म दिया कि दीवाने दौलत और शबिस्ताने हशमत के लिए क़सरहाए आली (यानी बुलंदो बाला महल्लात तामीर हों। तमाम अदना व आला उमरा पुख़्ता और मज़बूत और गचकारी (यानी पच्चे कारी) की इमारतों से महल और मकानात आरास्ता करें। पुख़्ता और मज़बूत और चौपड़ के बाज़ार, मदरसे, ख़ानक़ाहें, हम्माम और बाग़ात तामीर किए जाएं। शोरफा, ग़ुरबा हर पेशा के लोग आबाद हो कर दिलचस्प मकानों और दिलकश दुकानों से शहर की आबादी बढ़ाईं।

फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद

शहर के गिर्द पत्थर और चूने की फ़सील (यानी दीवार) का दायरा खींचा जाये। ग़र्ज़ कि उसी तारीख़ को फ़तेहपुर सीकरी की बुनियाद क़ाइम हुई। और बहुत थोड़ी मुद्दत में ऐसा तिलस्माती शहर आबाद हो गया जिसके मौजूदा खन्डरात और आसारात को देखकर आज भी सय्याहाने आलम तअज्जुब करते हैं। चूँकि बादशाह बाबर ने इसी सीकरी के क़रीब मौज़ा **ख़ानवह** के मैदान में राना सांगा पर फ़तह पाई थी लिहाज़ा बादशाह ने मुबारक शुगून समझ कर **फ़तह आबाद** नाम रखा फिर **फ़तेहपुर** मशहूर हो गया और बादशाह ने भी इसी नाम को पसंद फ़रमा लिया। और शाही काग़ज़ात में दारुल ख़िलाफ़त, दारुस्सुरूर, दारुन्नूर, दारुस्सल्तनत, दारुल इकबाल के ख़िताब के साथ लिखा जाने लगा। जहांगीर ने लिखा है कि:

वालिद बुज़ुर्गवार (यानी अकबर बादशाह) ने मौज़ा सीकरी को जो मेरी पैदाइश की जगह है मुबारक समझ कर अपना पाए सख़्त मुक़र्रर किया और 14,15 बरस की मुद्दत में तमाम पहाड़ और जंगल में जिसमें सिवाए दरिंदों

के किसी का गुज़र भी ना होता था आलीशान और नफ़ीस इमारतें , सरसब्ज़ बाग़ात और सैर गाहें तामीर हो कर एक बड़ा शहर आबाद हो गया, जो गुजरात की फ़तह के बाद फ़तेहपुर के नाम से मौसूम हुआ।

इस मज़मून को मुंशी वलीयुद्दीन साहिब चिश्ती फ़तेहपुरी ने किया ख़ूब नज़्म का लिबास पहनाया है :

पहले था येह एक दश्त वीराँ
रहते थे मुदाम दामो द् याँ
पर सीकरी गांव में कुछ इंसां
आबाद थे बादल परेशां

अल क़िस्सा येह एक मकाने हू था
वीराना व दश्त चार सू था

उस कोह का नागहां मुक़द्दर
चमका जो मिसाल माहे अनवर
एक बुरज शरफ़ का माह इस पर
तालए हुआ मिस्ले शाह ख़ावर

जब गर्दिशो इन्क़िलाब निकला
इस कोह पे आफ़ताब निकला

यानी क़दम सलीम आया
इस कोह पे भी कलीम आया
ख़िज़र रहे मुस्तक़ीम आया
फ़य्याज़ो सख़ी नईम आया

मस्जिद का जो शौक़ दिल में आया
काअबा सरे कोह बनाया

बढ़ने लगी फिर तो ज़ेबो ज़ीनत
क़ाइम हुई हर तरफ़ इमारत
लुटने लगी सल्तनत की दौलत
बजने लगी तहनियत की नौबत

हज़रत की दुआ ने पाई तासीर
पैदा हुआ ख़ल्क़ में जहांगीर

फ़तेहपुर सीकरी दारुल सल्तनत बन गया

अल्लामी अबुल फ़ज़्ल आईने अकबरी में लिखते हैं: सरकार बयाना का एक गांव सीकरी दारुल ख़िलाफ़त आगरा से 12 कोस के फ़ासिले पर मौजूद है इस की ख़ुश क़िस्मती ने जब ज़ोर किया तो जहांपनाह (अकबर) ने इस को तमाम शहरों का सरताज बना दिया। यहां एक पुख़्ता और मज़बूत क़िला तामीर कर के उस के एक दरवाज़े (हतिया पोल) पर पत्थर के हाथी नसब कराए। येह आलीशान महल्लात से मुज़य्यन है। पहाड़ी की चोटियों पर क़सरे शाही और उमराए सल्तनत की आलीशान हवेलियाँ हैं। नीचे मैदानों में कोसों तक बेशुमार पुरफ़िज़ा बाग़ात और मौसिमे गर्मा में हवा खाने के वास्ते बारह दरियां बनी हैं। जहांपनाह (यानी अकबर बादशाह) ने एक मस्जिद, मदरसा, ख़ानक़ाह और एक मक़बरा दरगाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती फ़र्मा इन्ही पहाड़ियों पर तामीर कराया है। यहां की इमारात की ख़ूबसूरती और दिल रुबाई और सनअत को देख देख कर दूरो नज़्दीक के सय्याहान (यानी घूमने वाले लोग) महवे हैरत होते हैं। रुए ज़मीन की कोई इमारत क़सरहाए शाही की शानो शौकत को नहीं पहुँचती। शहर के पास ही शाही चौगान और शिकार खेलने का मैदान है। इसी में एक मीनार (हरम मीनार या हिरन मीनार) बना है जिस पर बैठ कर बादशाह अकबर हाथियों

की लड़ाई देखा करता है। ख़ुदा ने अपने फ़ज़्लो करम से पत्थर की कान भी यहीं पैदा कर दी है जो रूप बाँस (फ़तेहपुर से 5 किलोमीटर दूर एक गांव) में लाल पत्थर की कान है। जिसमें से जितना चाहो पत्थर ले लो। यहां की इमारात के तमाम सुतून यानी पिलर और पटियाँ यहीं के पत्थर की हैं जिन्हें गोया ख़ुदावंदे क़दीर ने जहांपनाह (अकबर बादशाह) ही के वास्ते अमानत रखा था। उम्दा रेशमी कपड़ों के कारख़ाने बादशाह अकबर के इशारे से यहां जारी हैं और हर किस्म के अहले फ़न व हुनर और बाकमाल सन्नाअ इस जगह अकबर बादशाह की सरपरस्ती में जमा हैं। एक आलीशान पुख़्ता और मज़बूत बाज़ार भी तामीर कराया है। ग़र्ज़कि इस शहर की ख़ूबसूरती और ख़ुश नुमाई को देख कर तमाम दुनिया के बड़े बड़े शहर इस पर रश्क करते हैं। जहांपनाह (अकबर बादशाह) ने ख़ुद इस का नाम **फ़तह आबाद** रखा था। मगर रईयत ने इस नाम को पसंद नहीं किया और दरख़ास्त की कि हम अपने शहर का नाम **फ़तेहपुर** रखना चाहते हैं। रईयत के दिलदादा बादशाह ने उन की दरख़ास्त को बखुशी मंज़ूर किया। चुनांचे अब येह **फ़तेहपुर** के नाम से मौसूम है।

फ़तेहपुर सीकरी की चहल पहल

फ़तेहपुर सीकरी की अकबरी ज़माने की आबादी और रौनक का अंदाज़ा यूरोपियन सय्याह व सौदागर की तहरीर से बख़ूबी होता है वो लिखता है कि: आगरा से हम फ़तेहपुर सीकरी में पहुंचे जहां बादशाह दरबार करता है येह आगरा से बड़ा है मगर गलियाँ और मकानात ऐसे ख़ूबसूरत और साफ़ नहीं हैं। यहां भी कसरत से मुसलमान रहते हैं। लोग कहते हैं कि यहां पर बादशाह ने एक हज़ार हाथी, बीस हज़ार घोड़े और बारह सौ हिरन पाले हैं और मुर्गों, बाज़ों और दूसरी शिकारी चिड़ियों की तादाद तो इस क़दर

ज़्यादा है कि देख कर तअज्जुब होता है। हरम सरा में आठ सौ बेगमात हैं बादशाह का दरबार बड़ा रफ़ीउश्शान है इस को दार ख़ाना कहते हैं। आगरा और फ़तेहपुर दोनों शहर लंदन से बहुत बड़े हैं। इन दोनों शहरों के दर्मियान में 12 मील का फ़ासिला है मगर येह तमाम दर्मियानी रास्ता माकूलात यानी खाने की चीजों और दूसरी किस्म के सामानों के बाज़ारों से ऐसा आबाद है कि शहर ही का सिल्सिला मालूम होता है। आदमियों की आमदो रफ़त यानी आना जाना भी इस कसरत से है कि गोया बाज़ार है।

इस शहर में फ़ारस, तिब्बत और सारे हिन्दुस्तान और दीगर मुल्कों के सौदागर हज़ारों की तादाद में जमा होते हैं और रेशम, कपड़े, क़ीमती जवाहिरात की ख़ूब ख़रीदो फ़रोख्त होती है।

फ़तेहपुर सीकरी की तनज़्ज़ुली

अकबर बादशाह के बाद अगर्चे फ़तेहपुर सीकरी की आबादी को तनज़्ज़ुल होना शुरू हुआ यानी घटने लगी, लेकिन जहांगीर के ज़माने में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पोते, पर पोते और नवासे ऐसे आला मदारिज पर पहुंचे कि इन की इमारत व रियासत की वजह से कमो बेश यहां की रौनक क़ाइम रही। जहांगीर, शाहजहाँ और आलमगीर अक्सर फ़तेहपुर आते जाते थे। मुहम्मद शाह के ज़माने तक तमाम शाही इमारात की हिफ़ाज़त और मरम्मत होती रही। जब मुग़लिया सल्तनत में कमज़ोरी पैदा हुइ और जाटों और मराहठों की लूट खसूट शुरू हुई, मुहल्ले के मुहल्ले कूचे के कूचे वीरान हो गए और सैकड़ों हज़ारों नफ़ीस व बेनज़ीर इमारतें बेदर्द हाथों से हमेशा के लिए नीस्तो नाबूद हो गईं।

काफी साल बाद लार्ड कर्ज़न गवर्नर जनरल हिंद ने आसारे क़दीमा के तहफ़्फ़ुज़ का क़ानून बना कर फ़तेहपुर सीकरी की बाक़ी मांदा दिल फ़रेब और नादिरुल वुजूद इमारात की मरम्मत करा दी और तारीख़ी वाक़िआत के साथ तमाम इमारात के नक़्शे और बाक़ी मांदे नक़्शो निगार और कारीगरों के अजीबो ग़रीब नमूनों को सफ़्हा क़िर्तास पर जल्वा अफ़रोज़ करा के बकाए दवाम के मर्तबा पर पहुंचा दिया।

फ़तेहपुर सीकरी के दरवाज़े

फ़तेहपुर सीकरी की मौजूदा आबादी 1901 ईस्वी की मर्दुम शुमारी के ऐतिबार से सिर्फ 7147 है। इस आबादी का कुछ हिस्सा पहाड़ पर और कुछ हिस्सा पहाड़ के नीचे जुनूबी यानी दक्खिन की जानिब आबाद है। तीन तरफ़ एक पुख़्ता कंगूरादार फ़सील (यानी चहार दीवारी) है। जिसका गोला 6 मील का बयान किया जाता है। फ़सील के हर मोड़ पर बुर्ज हैं और हस्बे ज़ैल आठ पुख़्ता और मज़बूत दरवाज़े बने हैं।

(1)--- दिल्ली दरवाज़ा
(2)--- आगरा दरवाज़ा
(3)--- लाल दरवाज़ा
(4)---बीर पोल दरवाज़ा
(5)---चन्द्र पोल दरवाज़ा
(6)---ग्वालियर दरवाज़ा
(7)---तेरह दरवाज़ा
(8)---अजमेरी दरवाज़ा

इनके इलावा तेरह और अजमेरी दरवाज़ों के दर्मियान में एक मामूली दरवाज़ा पहाड़ी पर और है जो **चोर खिड़की** के नाम से मौसूम है। अकबरी ज़माने में फ़सील के अंदर और क़ुर्बो जवार में ज़मीन की इस क़दर क़िल्लत और आबादी की कसरत थी कि अमीर लोगो को भी जगह ना मिलती थी। अब येह हाल है कि आगरा दरवाज़े में घुसते ही खन्डर नज़र

आना शुरू होते हैं। जिधर नज़र उठा कर देखिए पत्थर और चूने के अंबार और गिरी हुई इमारात के आसार नज़र आते हैं। सिर्फ **नक़्क़ार ख़ाना** और **दरगाह शरीफ़** की दर्मियानी इमारतें किसी क़दर अच्छी हालत में हैं जिनकी बुलंद चोटियों और मीनारों पर :

सुब्ह को ताइराने ख़ुश इल्हान
पढ़ते हैं कुल्लु मन अलैहा फॉन

एक फ़्रांसीसी मुअर्रिख़ का बयान

मशहूर फ़्रांसीसी मुहक़्क़िक़ डाक्टर गस्ताओली बान अपनी शोहरा आफ़ाक़ किताब **"तमद्दुने अरब"** में लिखता है कि अकबर ने 1560 ईस्वी से दस साल तक फ़तेहपुर का क़सर यानी महल बनाया जिसका बक़ीया हिस्सा इस वक़्त भी हमें उन सोते हुए शहरों को याद दिलाता है जिनकी तस्वीर अलिफ़ लैला में खींची गई है। चंद रोज़ बाद ही आबो हवा से तंग आकर बादशाह अकबर ने इस नए पाया तख़्त को तमाम मकानात और हवेलीयों और मसाजिद और आबादी के साथ छोड़ दिया। उस वक़्त से येह पुर तकल्लुफ़ शहर जिसे यूरोप की बड़ी रियासतें भी अपना दारुस्सल्तनत बनाने का फ़ख़र करें सिर्फ शेरों का मस्कन व मावा हो गया और इन्सान की जिन्स से इस में सिर्फ चंद फ़क़ीर रह गए।

मुंशी वलीउद्दीन साहिब चिश्ती ने ख़ूब लिखा है:

गुलज़ार था फ़तेहपुर एक दिन
बेख़ार था फ़तेहपुर एक दिन
दरबार था फ़तेहपुर एक दिन
दुरबार था फ़तेहपुर एक दिन

बाक़ी है मकाँ मगर मकीं नहीं है
ख़ातम है मगर नगीं नहीं है

था मादने ज़र कभी येह मस्कन
था गंजे गुहर कभी येह मस्कन
था जाये ज़फ़र कभी येह मस्कन
था रूहे बशर कभी येह मस्कन

दिल सोज़ था हर दरिया उस का
मद्दाह था शहर यार उस का

फ़िर्दौस का बाग़ था कभी येह
गुज़ार का दाग़ था कभी येह
हर ग़म से फ़राग़ था कभी येह
दिल्ली का चिराग़ था कभी येह

अब तो फ़क़त एक खन्डर पड़ा है
इस घर को फ़लक भी रो रहा है

आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़
कुरआन, हदीस और मैथ की रोशनी में खुतबाते
शफ़ीकी जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम
आला हज़रत
का चर्चा रहेगा
वलियों के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?
तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब।
औलिया फना हो कर 9 का अदद बन जाते है।
9 के अदद की चार अजीब बातें।
आला हज़रत के पास सब कुछ है।
आला हज़रत का तआरुफ
आसान हनफ़ी नमाज़
تدریس کے 26 طریقے
मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी
PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
Mob.: +91-9368287284, 8808693818
Rs. 40/-
मकतबा दारुस्सुन्ना, दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

दूसरा बाब

दरगाह शरीफ़

*दरगाह शरीफ़	*बुलंद दरवाज़ा
*ज़नाना रौज़ा	*जामा मस्जिद
*रौज़ा सलीम चिश्ती	*रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती
*झालरा	*हम्माम नवाब इस्लाम ख़ान
*लंगर ख़ाना	*मस्जिद संग तराश
*रंग महल	*चौक नवाब इस्लाम ख़ान
*बदीअ महल	*हवेली शैख़ फ़िरोज़
*समोसा महल	*नौ मुहल्ला

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली



दूसरा बाब
दरगाह शरीफ़ और इमारात
दरगाह शरीफ़

फ़तेहपुर की तमाम इमारतों की जान और सरताज **“दरगाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती”** रहमतुल्लाह अलैह की इमारत है जो सनअतो रिफ़अत, इज़्ज़तो अज़मत हर लिहाज़ से मुम्ताज़ और अकबर बादशाह के ज़माने की तमाम इमारात पर खास फ़ौक़ियत रखती है दरगाह क्या है ? एक छोटा सा क़िला है, अकबर ने अस्ल में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते येह आलीशान ख़ानक़ाह तामीर कराई थी जो पाँच लाख रुपया के ख़र्च से पाँच साल के अर्से में बन कर तैयार हुई थी। शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा के इलावा तमाम इमारत नफ़ीस लाल पत्थर की है। पच्छिमी गोशे में आलीशान जामा मस्जिद और बक़ीया गोशों में हुजरे और उनके आगे बरामदे हैं। कुल इमारत में 87 हुजरे, छोटे बड़े 81 दर, दो बड़े और दो छोटे दरवाज़े और दालानों और मस्जिद की छत पर अंदरूनी जानिब 127 बुर्जियां बनी हैं जिन्होंने इमारत की ख़ुश नुमाई को दो बाला कर दिया है। इनके इलावा 12 बुर्जियां बुलंद दरवाज़ा पर और 26 बुर्जियां नवाब इस्लाम ख़ान के रौज़ा पर भी हैं। पुख़्ता और मज़बूत चहार दीवारी पर जिसकी बुलंदी 68 फ़ुट है निहायत ख़ूबसूरत कंगूरे कटे हुए हैं। पूरब की जानिब की दीवार के दोनों गोशों पर आठ पहल बुर्ज हैं। दर्मियानी सेहन पूरब, पच्छिम 430 फ़ुट और उत्तर, दक्खिन 366 फ़ुट हैं कुल सेहन में लाल पत्थर का फ़र्श है। उत्तरी जानिब हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

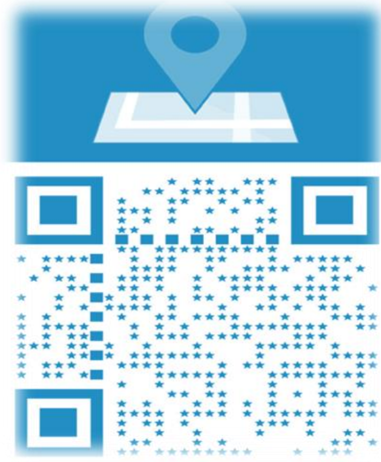
का रौज़ा, नवाब इस्लाम ख़ान का मक़बरा और ज़नाना रौज़ा है। दक्खिनी जानिब का आलीशान और सदर दरवाज़ा **"बुलंद दरवाज़ा"** और पूर्वी जानिब का दरवाज़ा **"शाही दरवाज़ा"** के नाम से मौसूम है।

दरगाह के सेहन में बहुत सी क़ब्रें और एक बर्खा (कुँआं) बना हुआ है जिसमें रौज़ा की छत का सालाती पानी जमा रहता और पीने के काम में आता है। दरगाह शरीफ़ या मस्जिद की पच्छिमी दीवार की पुश्त पर एक वसीअ इहाता है जिसमें औरतों और बच्चों की क़ब्रें हैं इसी में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के एक ख़ुर्दसाल यानी छोटे बच्चे **शैख़ ताजुद्दीन** का मज़ार भी है जो **"बाले मियां"** के मज़ार के नाम से मौसूम है।

खिड़की दरवाज़े के क़रीब ही एक पुख़्ता और मज़बूत तीन दर की इमारत शैख़ इब्राहीम मासूम इब्ने शैख़ ज़ैनुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की तामीर की हुई मौजूद है।



हज़रत शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ मज़ार तक पहुँच सकते हैं ।



MAKTABA DARUSSUNNA
Near faizan e madina block F-1 Tajnagri Phase 2 Taj Ganj Agra 282001
+91 8808693818
shafiqmadani26@gmail.com
₹ :50/-

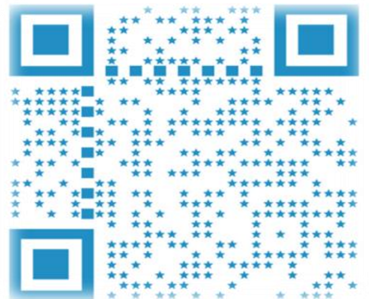
आला हज़रत (रहमतुल्ला अलैह) के इल्मे तक़वीम के शहंशाह होने पर मुँह बोलता सबूत फतावा रज़विया की 26 वीं जिल्द में मौजूद इमामे अहले सुन्नत का इल्मे तक़वीम पर मुश्तमिल रिसाला "नुत्कुल हिलाल बारिखु विलादिलहबीब वल विसाल" का आसान अंदाज़
चाँद की गवाही
आला हज़रत और इल्मे तक़वीम
मौलाना अबू शफीअ
मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

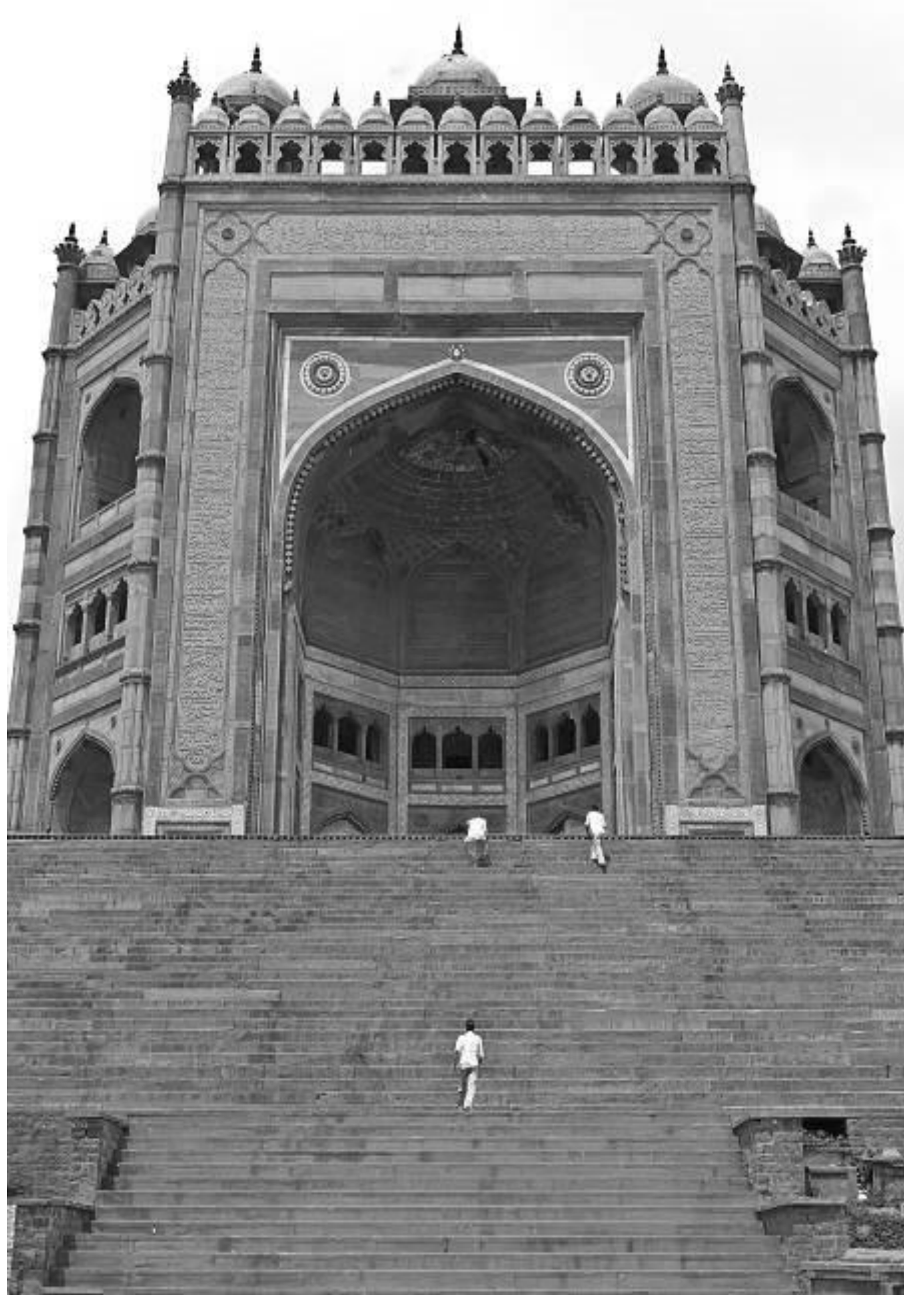
बुलंद दरवाज़ा

इस रफ़ीउश्शान पुख़्ता और मज़बूत दरवाज़े की ख़ुशनुमाई और बेहतरीन मंज़र का बयान, बयान से बाहर है। पहाड़ी की सबसे बुलंद चोटी पर इस की पाँच मंज़िला इमारत मौजूद है, हर मंज़िल में ख़ुशनुमा दालान और बुर्ज व बुर्जियां बनी हुई हैं, येह दरवाज़ा 129 फ़ुट बुलंद और मीलों दूर से नज़र आता है। पेश और ताक़चों की ख़ुशनुमाई नफ़ीस संग मरमर और संगे मूसा की पच्चे कारी और बे नज़ीर मम्बत कारी देखने से तअल्लुक़ रखती है, इस का बेनज़ीर कत्बा हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के एक ख़लीफ़ा शैख़ हुसैन इब्ने अहमद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पुर ज़ोर क़लम की बेहतरीन यादगार हैं, येह आलीशान दरवाज़ा 983 हिजरी ब मुताबिक़ 1575 ईस्वी का तामीर किया हुआ है।

अंदरूनी जानिब दर्मियानी दर के बाज़ुओं पर नस्तालीक़ व ख़ुशख़त हुरूफ़ में जो कत्बा कुंदा है वो अकबर के ज़माना के एक मशहूर किताबत नवीस अमीर मीर मासूम की यादगार और 1010 हिजरी में कुंदा (यानी लिखा गया) है। पच्छिमी बाज़ू के कत्बा के ऊपर एक काबिले दीद यानी देखने के क़ाबिल तुग़रा कुंदा है जिसे शाहजहाँ के ज़माना और 1042 हिजरी में अहमद अली अरशद नामी तुगरा बनाने वाले ने कुंदा किया था।

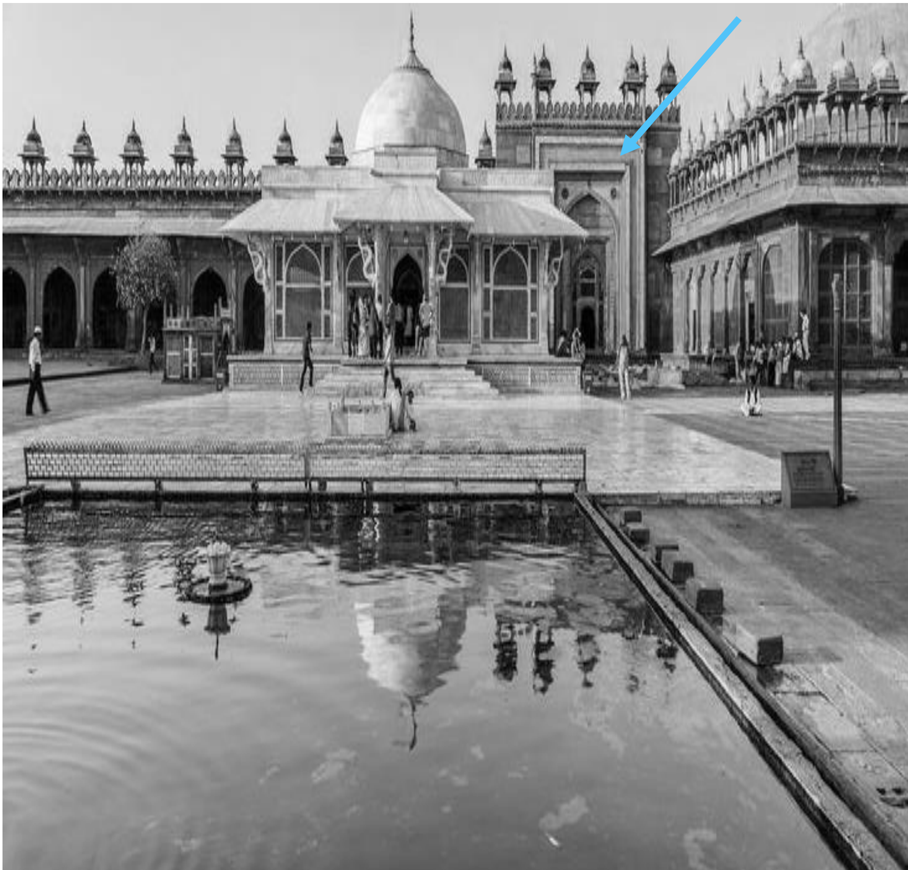
बुलंद दरवाज़ा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



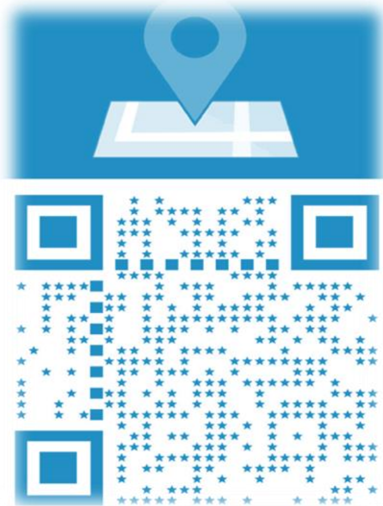


ज़नाना रौज़ा

दरगाह शरीफ़ के अंदर उत्तरी जानिब बुलंद दरवाज़ा के जो ख़ुशनुमा दरवाज़ा नज़र आता है येह **ज़नाना (औरतों के) क़ब्रिस्तान** का दरवाज़ा है जिसमें हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान की मस्तूरात यानी औरतों की क़ब्रें हैं, इस दरवाज़ा की पेशानी और अतराफ़ में संग मरमर और फ़ीरोज़ी रंग की चीनी का बहुत अच्छा काम है । बालाई हिस्से पर ख़ुशनुमा गुलदस्ते और गमज़ियां मुज़य्यन हैं।



ज़नाना रौज़ा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



चाँद की गवाही
आला हज़रत का चर्चा रहेगा
आसान हनफ़ी नमाज़
क़ुसूर किस का
₹:125/-
MAKTABA DARUSSUNNA
Near faizan e madina block F-1 Tajnagri Phase 2
Taj Ganj Agra 282001
+91 8808693818 shafiqmadani26@gmail.com

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के 1500 सालह जश्ने विलादत के मौक़े पर "मुहम्मद" और "अहमद" नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिक़ाने रसूल के लिए एक नायाब तोहफ़ा बनाम
मुहम्मद और अहमद के राज़
SEP.2025
रबीउल अव्वल 1447 हिजरी
मौलाना अबू शफ़ीअ
मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

जामा मस्जिद

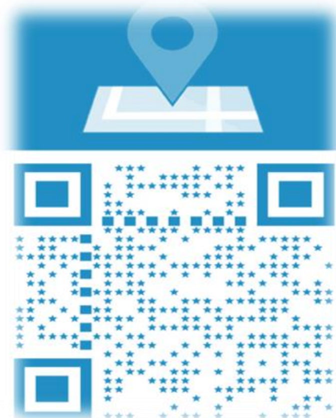
दरगाह शरीफ़ के पच्छिमी कोने में येह वसीअ व रफीउश्शान मस्जिद मौजूद है जो **जामा मस्जिद** के नाम से मौसूम और दुनिया की आला व अफ़ज़ल मसाजिद में शुमार की जाती है। इस की लंबाई 291 फ़ुट और चौड़ाई 78 फ़ुट या 63 फ़ुट है, येह अंदर सात दर्जों में मुन्क़सिम है, दर्मियानी दर्जे के आगे पेश ताक़ और अतराफ़ में तीन तीन दर्जों के आगे 9,9 मेहराब दार दरों के 2 दर्जे हैं इस तफ़सील से कुल मस्जिद में 10 दर्जे हैं जिनमें 136 बुलंद और मुनक़्क़श सुतून यानी पिलर नसब यानी लगे हुए हैं, पच्छिमी दीवार में बहुत ख़ुशनुमा मेहराबें बनी हैं, आयाते करआनी के मुताबिक़ कत्बों और संग मरमर, संगे मूसा और चीनी की पच्चे कारी ने मस्जिद की ख़ुशनुमाई को दो बाला कर दिया है।

मस्जिद का दर्मियानी दर्जा सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है जिस का फ़र्श और पेश ताक़ संग मरमर का है, येह संग मरमर का काम मस्जिद की तामीर के 35 साल बाद नवाब क़ुतुबुद्दीन ने जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के नवासे और जहांगीर के ज़माने के मशहूर अमीरों में थे बनवाया था, **''जन्नते सानी''** के अदद 1014 हिजरी इस की तामीर की तारीख़ है। बा कमाल कारीगरों ने दर्मियानी दर्जे को ख़ुशनुमा बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। ख़ुशनुमा पच्चे कारी, आला मन्बत कारी और मुख्तलिफ़ किस्म की गुल कारी से नमूनए बहिश्त बरीं बना दिया था। मस्जिद का पेश ताक़ निहायत शानदार और फ़र्श से 78 फ़ुट 9 इंच बुलंद है इस में निहायत ही ख़ुश ख़त नस्तालीक़ हुरूफ़ में एक कत्बा लिखा हुआ है। इस मस्जिद की तामीर का साल 979 हिजरी है।

छत पर निहायत आलीशान तीन गुंबद और मुतअद्दद गुलदस्ते और मीनार बने हैं येह गुंबद गचकारी के हैं मगर निहायत शानदार और आला सनअत का नमूना हैं।



जामा मस्जिद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



रौज़ा हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

दरगाह शरीफ़ की अंदरूनी इमारात में सबसे ज़्यादा ख़ुशनुमा इमारत हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा की है जिसे 988 हिजरी ब मुताबिक़ 1580 ईस्वी में नवाब क़ुतुबुद्दीन ख़ान ने तामीर कराया था। अजीब, नफ़ीस व नूरानी इमारत है जिसे अगर नमूनए फ़िरदौसे बरीं कहें तो बजा है या बुक़्क़ए नूर समझें तो रवा है, चाबुक दस्त कारीगरों ने अपना ख़ूब कमाल दिखाया है कि रौज़ए रिज़वाँ का नमूना फर्शे ज़मीन पर बनाया है। येह निहायत दिलकश और ऐसा दिलचस्प मक़ाम है जिसके नज़्ज़ारे से आँखों में नूर और दिल में सुरुर पैदा हो कर सानेअ हक़ीक़ी यानी अल्लाह पाक की सनअते कामिला का जल्वा पेशे नज़र हो जाता है, ख़ुसूसन शबे माह में तो इस पर ऐसा नूर बरसता है जिसका बयान अल्फ़ाज़ के ज़रिये से ना मुम्किन है।

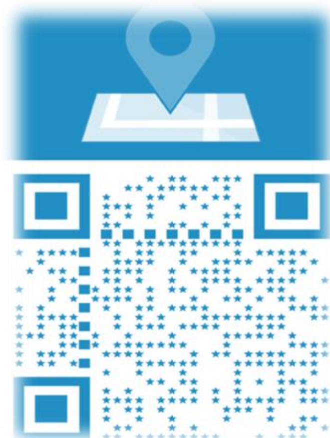
येह इमारत ख़ालिस और शफ़्फ़ाफ़ संग मरमर की है मज़ार मुबारक का ख़ास हुजरा मुरब्बा शक्ल का यानी चौकोर है जिसका हर गोशा 16 फ़ुट 4 इंच है, इस के 3 दरवाज़े संग मरमर की जालियों से बंद हैं। दक्खिनी दरवाज़े में किवाड़ लगे हैं, फ़र्श निहायत ख़ुशनुमा और पुर तकल्लुफ़ संग मरमर के अंदर संगे अबरी, संगे मूसा वग़ैरा की पच्चे कारी से क़त्‌आ दार बना हुआ है। मज़ार मुबारक के कटहरे के ऊपर सीप की नफ़ीस व बारीक पच्चे कारी का छप्पर खट है जो ख़ुसूसियत के साथ देखने के काबिल और लाइके दाद है।

हुजरे के अतराफ़ में 11 फ़ुट चौड़ी ग़ुलाम गर्दिश है जिसके चारों कोने में 5-5 दर हैं जो संग मरमर की निहायत ख़ूबसूरत, बारीक और मुख़्तलिफ़ तरीक़े की जालियों से जिनकी नफ़ासत व नज़ाकत काबिले दीद

यानी देखने के क़ाबिल है। येह बंद हैं सिर्फ दक्खिनी जानिब के दर्मियानी हिस्से में दरवाज़ा है जिसमें आबनूसी किवाड़ लगे हैं। रौज़ा की बाहरी दीवारों पर जो ग़ुलाम गर्दिश में हैं खत्ते नस्ख़ में आयाते कुरआनी के ऐसे ख़ुश ख़त कत्बे कुंदा हैं जिनकी तारीफ़ बयान में नहीं आ सकती। कत्बों के ऊपर ख़ुशनुमा ताकचे और गुलदस्ते बने हैं अगर्चे इन कत्बों और गुलदस्तों का तलाई काम अब बाक़ी नहीं रहा लेकिन नमूना के तौर पर दक्खिनी जानिब के तीन कत्बों और चार गुलदस्तों पर सोने के पानी से अज़ सरे नौ जिला की गई है। दरवाज़े की पेशानी पर तारीख़ लिखी हुई है।

ग़ुलाम गर्दिश के इस दरवाज़े के आगे एक ख़ुशनुमा सायेबान बना है जिसका फ़र्श और सुतून बहुत ख़ूबसूरत हैं और जगह जगह बारीक मंबत कारी की हुई है। इस सायेबान के आगे संग मरमर का छोटा सा चबूतरा है और उस के सामने यानी दरगाह के सेहन में 77 फ़ुट × 58 फ़ुट संग मरमर का फ़र्श है जिस से मिला हुआ पुख़्ता और मज़बूत हौज़ फ़व्वारा के साथ है। रौज़ा का गुंबद संग मरमर का है जो बजाये पच्चे कारी के गुंबद के 1866 ईस्वी में मिस्टर मेंसल ज़िला के कलैक्टर के हुक्म से बनवाया गया था।

रौज़ा हज़रत शैख सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती

नवाब इस्लाम ख़ान का अस्ली नाम शैख़ अलाउद्दीन था। येह शैख़ बदरुद्दीन के बेटे और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के पोते थे। जहांगीर के ज़माने में बंगाला के सूबेदार और मशहूर अमीर लोगों में से थे। 1022 हिजरी बमुताबिक़ 1613 ईस्वी में वफ़ात पाई। हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा के क़रीब जो दूसरा आलीशान गुंबद है उस के अंदर नवाब इस्लाम ख़ान का मज़ार मौजूद है। इस गुंबद के अंदर और बरामदों में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान के मर्दों और मशहूर खुल्फ़ा की क़ब्रें हैं। पच्छिमी बरामदे में तीन हुजरे हैं :

(1)--- पहले हुजरा में नवाब मुकर्रम ख़ान (शैख़ अब्दुस्समद इब्न शैख़ बा यज़ीद इब्न शैख़ अहमद इब्न शैख़ सलीम चिश्ती) रहमतुल्लाह अलैह

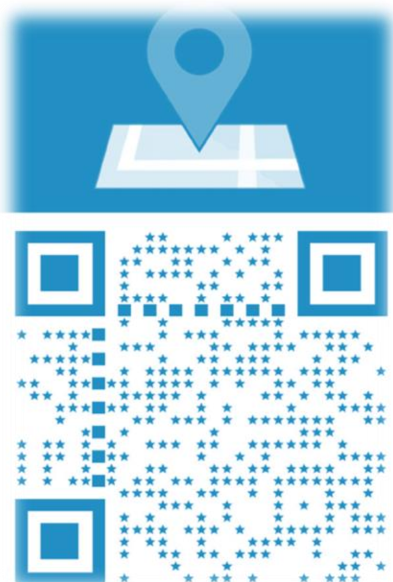
(2)--- दर्मियानी हुजरे में नवाब मोहतशिम ख़ान (शैख़ क़ासिम इब्न शैख़ बदरुद्दीन इब्न शैख़ सलीम चिश्ती) रहमतुल्लाह अलैह

(3)--- तीसरे हुजरे में जो दक्खिनी और पच्छिमी जानिब है हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर ख़ुल्फ़ा और खानकाह के मोहतमिम शैख़ हाजी हुसैन के मज़ारात हैं।

इस गुंबद के पूर्वी जानिब जो क़ब्रिस्तान है वो **"याराने चबूतरा"** के नाम से मौसूम है और इस में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के खुल्फ़ा और बहुत से बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात मौजूद हैं।



रौज़ा नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

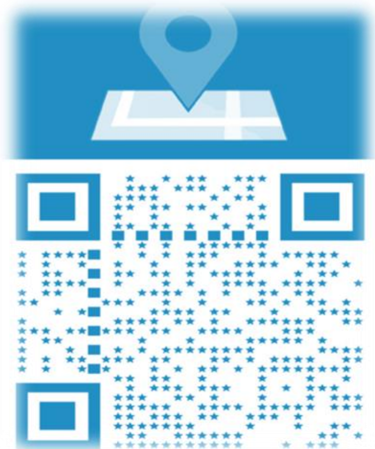


हम्माम नवाब इस्लाम ख़ान

बुलंद दरवाज़ा के सामने जो हम्माम मौजूद है उसे नवाब इस्लाम ख़ान चिश्ती फ़ारूक़ी ने आम फकीरों और मिस्कीनों के वास्ते तामीर करा कर दरगाह के मुताअल्लिक़ कर दिया था, इस में दो दर्जा और 15 ग़ुस्ल ख़ाने हैं।



हम्माम नवाब इस्लाम ख़ान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

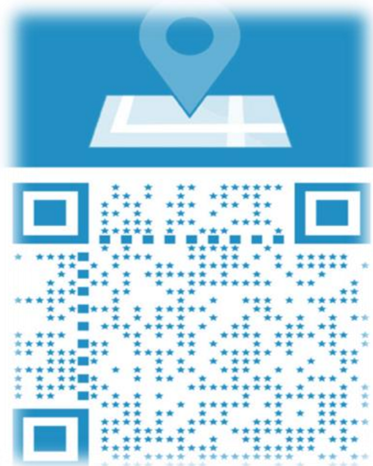


लंगर ख़ाना

बुलंद दरवाज़े के क़रीब पूर्वी जानिब जो इमारत है वो **लंगर ख़ाना** के नाम से मौसूम है इस में चारों तरफ़ वसीअ पुख़्ता और मज़बूत दालान बने हैं पहले के ज़माना में इसी इमारत में दो वक़्त हज़ारों फकीरों और मिस्कीनों को खाना दिया जाता था।



लंगर ख़ाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

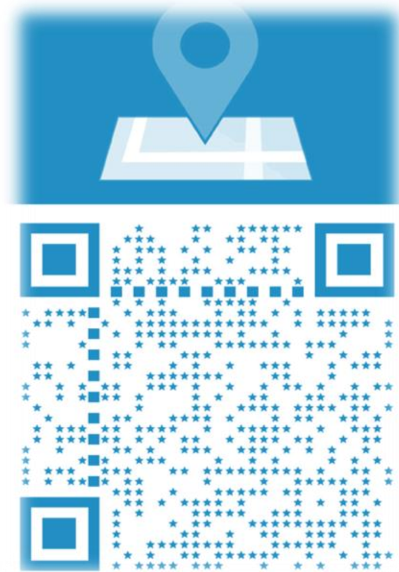


झालरा

येह मस्नूई यानी बनाई हुई झील जो बुलंद दरवाज़ा के दक्खिनी और पच्छिमी जानिब मौजूद है नवाब क़ुतुबुद्दीन ख़ान की बनवाई हुई और **झालरा** के नाम से मौसूम है, इस में दरगाह शरीफ़ के सेहन का बरसाती पानी जमा रहता है और कभी नहीं सूखता। इस की इमारत पुख़्ता और मज़बूत और हश्त यानी आठ पहल है जिसका हर गोशा 34 फ़ुट है, पूर्वी जानिब पानी तक पहुंचने के वास्ते सीढ़ियां बनी हैं। पहले दरगाह की मुल्हिक़्क़ा दीवार से तैराक यानी तैरने वाले लोग इस में कूद कर अपना कमाल दिखाया करते थे मगर अब इस की मुमानअत हो गई है।



झालरा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





मस्जिद क़दीम या मस्जिद संग तराश

दरगाह शरीफ़ के पच्छिमी जानिब थोड़े ही फ़ासिले पर येह मस्जिद मौजूद है जो फ़तेहपुर की सब इमारतों से पुरानी है इस की तामीर के बारे में येह रिवायत मशहूर चली आती है कि जिस ज़माना में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह उस ग़ार के अंदर जो इस मस्जिद के हुजरे के अंदर अब तक मौजूद है इबादत फ़रमाया करते थे, संग तराशों ने जो पहाड़ पर चक्कियां बनाने आया करते थे आप रहमतुल्लाह अलैह की कुछ करामत देख कर आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते तामीर करा दी थी।

येह मस्जिद 51 फ़ुट लंबी और 12 फ़ुट चौड़ी है, सुतून इस तर्तीब से नसब हैं कि मस्जिद दो बराबर के हिस्सों में तक़सीम हो गई है अंदरूनी दर्जा में उत्तरी जानिब 10 फ़ुट लंबा हुजरा बना है जिसके अंदर वो मुताबर्रिक ग़ार है जिसके अंदर बैठ कर हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह इब्तिदाई ज़माने में इबादत और रियाज़त फ़रमाया करते थे, मस्जिद के बाहरी पेशानी पर आयाते कुरआनी, कलिमए तय्यिबा, और एक हदीस शरीफ़ लिखी हुई है, आगे 35 फ़ुट चौड़ा सेहन है।

मकान हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती

येह मुताबर्रिक मकान अब मुंशी शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब पीर ज़ादा की मिल्कियतमें और उनकी रिहाइश गाह है, इस में उत्तरी जानिब जो दालान हैं वो **मजलिसी दालान** के नाम से मौसूम और ख़ास कर मुताबर्रिक समझा जाता है क्योंकि यही हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का क़ियाम गाह था। मकान की छत पर एक छोटा सा कमरा बना है वो **मंडफ़** के नाम से मशहूर और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का चिल्ला गाह है, 20 रमज़ान को इसी कमरा में तबर्रुकात की ज़ियारत कराई जाती है।

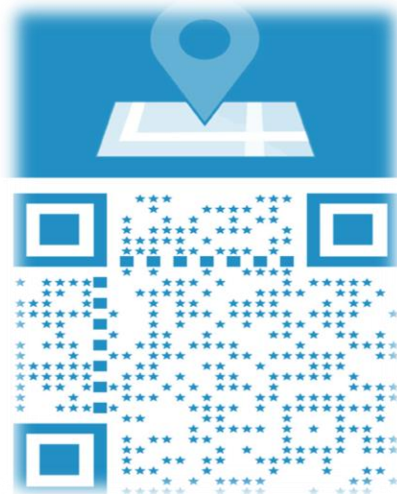
ख़ानकाह हज़रत शैख सलीम चिश्ती



रंग महल

येह महल जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मकान के क़रीब मौजूद है शहज़ादा सलीम (यानी जहांगीर) और शहज़ादा मुराद की पैदाइश गाह है येह भी शैख़ तजम्मुल हुसैन साहिब और शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब की मिल्कियत में था। 1905 ईस्वी में इसका मुआवज़ा अदा करके इस यादगार को काबिले तहफ़्फ़ुज़ समझ कर महकमा आसारे कदीमा में ले लिया गया है और इस की मरम्मत भी करा दी गई है, इस की बची हुई इमारत और नक़्शो निगार से ज़ाहिर होता है कि येह इस्म बा मुसम्मा और रंगा रंग के नक़्शो निगार और ख़ुशनुमा गुल कारी से मुज़य्यन और मुरस्सा यानी आरस्ता था और इस में निहायत नफ़ीस मुनक़्क़श पत्थर लगाया गया था।

रंग महल के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



चौक नवाब इस्लाम ख़ान

रंग महल से थोड़े फ़ासिले पर येह चौक मौजूद है इस के चारों तरफ़ चार पुख़्ता और मज़बूत शानदार दरवाज़े हैं जिनके दर्मियान में दो मंज़िला पुख़्ता और मज़बूत दालान बने थे और क़रीब में ज़नाना और मर्दाना महल्लात थे जिनमें से कुछ अब तक मौजूद और येह ज़मीन चौक के साथ शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब पीरज़ादा की मिल्कियत में हैं। झानवां दरवाज़े में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का एक चिल्ला भी बना हुआ है।



बदीअ महल

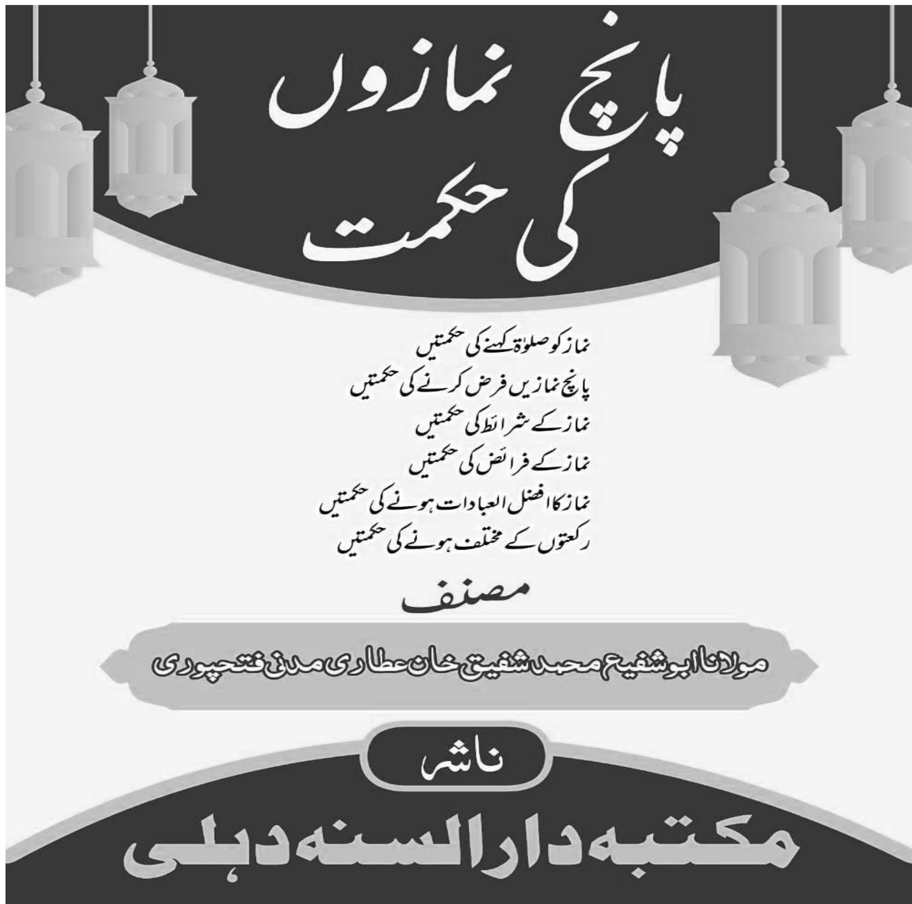
बदीअ महल जो जाहिलो की ज़बान में बद्दी महल के नाम से मशहूर है फ़तेहपुर की ख़ूबसूरत और आलीशान हवेलियों में से मुम्ताज़ है। येह हज़रत शैख़ हाजी हुसैन ख़लिफ़ए अव्वल और खानकाह के मोहतमिम का तामीर किया हुआ है और ख़ुदा के फ़ज़्ल से अब तक उनकी औलाद के क़ब्ज़े में है जो ख़लीफ़ा ज़ादा के ख़िताब से मौसूम हैं फ़तेहपुर के मशहूर गाईड शैख़ रियाज़ अहमद साहिब चिश्ती अपने भाईयों के साथ इस के मालिक हैं।

امت محمدیہ کے سوالات
اور ان کے قرآنی جوابات
حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں:
امت محمدیہ سے کم سوال کسی امت نے نہ کئے، کہ امت محمدیہ
نے صرف 14 سوال کئے
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری
مدنی فتحپوری



हवेली शैख़ फ़िरोज़

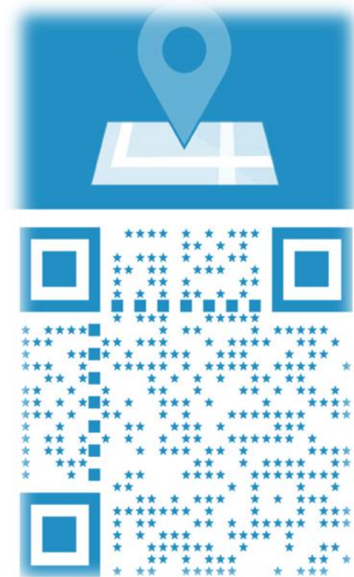
येह आलीशान हवेली जो अपनी बनावट की मुनासिबत से जहाज़ महल के नाम से मौसूम थी शैख़ फ़िरोज़ की तामीर की हुई थी जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के दामाद थे अब इस का बहुत थोड़ा हिस्सा बाक़ी रह गया है जो शैख़ मुहम्मद इस्हाक़ साहिब पीरज़ादा की मिल्कियत में है।



मस्जिद नवाब इब्राहीम ख़ान

नवाब साहिब का अस्ली नाम शैख़ इब्राहीम था । शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैह के बेटे, हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के भतीजे आगरा के सूबेदार और अकबर के ज़माने के मशहूर और मंज़ूरे नज़र अमीर लोगों में से थे, आप ने अपनी हवेली के क़रीब जो अब तक मौजूद और शैख़ मुहम्मद इस्हाक़ साहिब पीर ज़ादा की मिल्कियत में है येह छोटी सी मस्जिद तामीर कराई थी जो 39×22 फ़ुट है इस में उत्तरी जानिब एक नशिस्त गाह बनी हुई है जहां से पहाड़ की गहराई का मंज़र निहायत ख़ुशनुमा है, मस्जिद के क़ुर्बो जवार यानी आस पास में वीरान इमारात के आसार और दो पुख़्ता और मज़बूत दरवाज़े मौजूद हैं।

मस्जिद नवाब इब्राहीम ख़ान अल मारुफ़ लाल मस्जिद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



मकान शैख़ फ़ैज़ी अबुल फ़ज़्ल

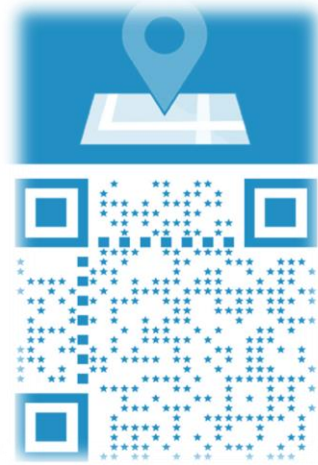
दरगाह शरीफ़ की उत्तरी दीवार के नीचे जो मकानात हैं और जिनमें मदरसा जारी है वो मलिकुश्शुअरा फ़ैज़ी और अल्लामी अबुल फ़ज़्ल के नाम से मौसूम है, उनकी इमारत लाल पत्थर की है क़ुर्बो जवार यानी आस पास में कई हम्माम और गिरी हुई इमारात के आसार मौजूद हैं जिनमें से सिर्फ एक नशिस्त गाह किसी क़दर अच्छी हालत में है।



समोसा महल

इन मकानात के क़रीब उत्तरी जानिब येह महल मौजूद है जिसकी नाम रखने की वजह में बहुत इख़्तिलाफ़ है, येह समोसा नुमा इमारत है जिसके तीन कोनों में वसीअ दालान और दक्खिन पच्छिम की जानिब में दरवाज़ा है ,गुज़श्ता नक़्शो निगार का कुछ हिस्सा अब तक मौजूद है, दरवाज़े से मिला हुआ एक वसीअ हम्माम बना हुआ है।

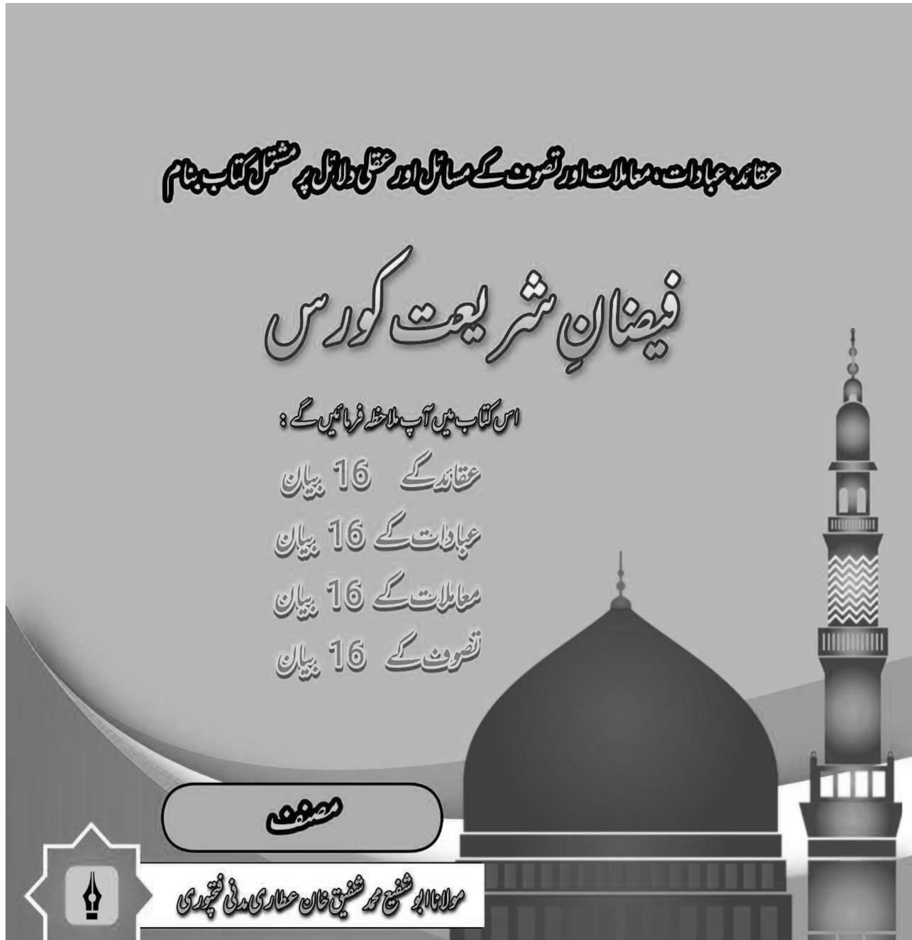
समोसा महल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





नौ महल्ला

येह एक आलीशान नौ मंज़िला इमारत थी जिसे नवाब इकराम ख़ान शैख़ फ़ज़्लुल्लाह जो कि नवाब इस्लाम ख़ान के बेटे थे ने तामीर कराया था, उस की बालाई मंज़िलें बिल्कुल गिर गईं सिर्फ तीन मंज़िलों के निशान ब शक्ल खंडर बाक़ी रह गए हैं, 1060 हिजरी में येह इमारत तामीर की गई थी **'ज़ेबा मंज़िल इकराम ख़ान'** के अदद इख्तितामे तामीर की तारीख़ है।



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

तीसरा बाब

शाही महल्लात

*खास महल	*मकान तुर्की सुल्ताना	*मदरसए निसवां
*शाही हम्माम	*फर्शे पचीसी	*नशिस्त गाह रुमाल
*आँख मिचौली	*दीवाने ख़ास	*दीवाने आम
*पंच महला	*महल मरयम ज़मानी	*मरयम का चमन
*शिफ़ा ख़ाना	*नगीना मस्जिद	*महल जोधा बाई
*बीरबल का महल	*घोड़ों का अस्तबल	*शुतुर ख़ाना
*दफ़्तर ख़ाना	*सुख ताल	*हकीम का मकान
*जौहरी बाज़ार	*ख़ज़ाना	*टकसाल
*नौबत ख़ाना	*बारह दरी	*फ़ील ख़ाना
*लंगर ख़ाना	*संगीन बुर्ज	*हत्या पोल

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली


Fatehpur Sikri
BrainWing



तीसरा बाब
शाही महल्लात
खास महल

खास दौलत ख़ाना जो आम तौर से खास महल के नाम से मशहूर है एक मुस्ततील यानी लंबे इहाते से जिसकी लंबाई 211 फ़ुट और चौड़ाई 153 फ़ुट 4 इंच है महसूर था यानी घिरा हुआ था जो अब अक्सर जगह से खुल गया है। येह चारों तरफ़ वसीअ और ख़ुशनुमा इमारात से मामूर है जो अकबरी ज़माने में अपना नज़ीर यानी मिसाल ना रखता था, अबुल फ़ज़्ल ने आईने अकबरी में लिखा है कि दुनिया की कोई इमारत इस क़सरे शाही का मुक़ाबला नहीं कर सकती 976 हिजरी ब मुताबिक़ 1568 ईस्वी में इस की तामीर शुरू हुई और 979 हिजरी ब मुताबिक़ 1571ईस्वी में इख्तिताम को पहुंची।

खास महल के दक्खिनी जानिब जो दालान और कमरों का सिल्सिला है मिन जुम्ला उनके दक्खिन और पूरब की जानिब एक नफ़ीस मुनक़्क़श कमरा है जो ख़्वाब गाह के नाम से मौसूम है। इस की गुज़श्ता नक़्शो निगार का कुछ नमूना अब तक मौजूद और काबिले दीद यानी देखने के क़ाबिल है। इसी के क़रीब दूसरा कमरा है जो झरोका दर्शन के नाम से मशहूर है। इनके इलावा पच्छिमी और दक्खिनी जानिब दालान दर दालान और शह नशीन वग़ैरा बनी हुई हैं।

खास महल का पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श पूरब और पच्छिम 182 फ़ुट और उत्तर, दक्खिन पौने 22 फ़ुट है इस के दर्मियान एक मुरब्बा यानी

चौकोर पुख़्ता और मज़बूत हौज़ साढ़े 95 × साढ़े 95 फ़ुट बना हुआ है जिस का नाम अकबर के ज़माने की तारीख़ों में अनूप तलाओ लिखा हुआ है और अब चार चमन के नाम से मौसूम है। इस में चारों तरफ़ सीढ़ियां पानी में उतरने की वास्ते बनी हुई हैं, दर्मियान में पुख़्ता और मज़बूत सुतूनों यानी पिलरों पर 29×29 फ़ुट चबूतरा और इस के बीच में 29×29 फ़ुट शह नशीन बनी है, इस चबूतरे और शह नशीन तक पहुंचने के वास्ते चारों तरफ़ 4 पुल क़ाईम हैं।

अब हौज़ में सिर्फ बारिश का पानी जमा हो जाता है लेकिन अकबरी ज़माने में निहायत साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ पानी उत्तरी कारख़ाना आब रसानी से मुख़्तलिफ़ नालियों के ज़रीये से बीरबल के मकान, मरयम के महल और महल के पच्छिमी दालान में होता हुआ ख़म दार यानी मुड़ी हुई नालियों के ज़रीये से इस हौज़ में आता था और जब येह हौज़ लबालब भर जाता तो उत्तरी जानिब की नाली के ज़रीये से पचीसी और दीवाने ख़ास के फ़र्श से गुज़रता हुआ एक झरने के ज़रीये से नीचे उतर कर मीठे हौज़ में जो दीवाने ख़ास के नीचे उत्तरी जानिब मौजूद है पहुंच जाता था। ख़्याल करो कि पानी का इस पेचो ख़म के साथ बराबर जारी रहना कैसा दिलचस्प और ख़ुशनुमा मंज़र पैदा करता होगा।

अब इस हौज़ की तामीर का तारीख़ी हाल सुनिए 986 हिजरी ब मुताबिक़ 1578 ईस्वी में एक हकीम फ़तेहपुर में आया और उसने दरबारे अकबरी में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मैं एक ऐसा मकान बना सकता हूँ जिसके चारों तरफ़ पानी हो उस पानी में गोता मार कर मकान के अंदर जाएं लेकिन पानी उस के अंदर बिल्कुल ना पहुंचे, इस पर अकबर ने उस से येह हौज़ तैयार कराया और इस के दर्मियान में एक हुजरा पुख़्ता और मज़बूत

और इस की छत पर एक बुलंद मिनारा बनवाया और इस हुजरे के चारों तरफ़ पुल बनवाए गए लेकिन हकीम ने जिस कमाल का दावा किया था जब वो पूरा ना हो सका तो ख़ुद ग़ोता मार गया यानी छुप कर कहीं भाग गया।

नोट: इस वाक़िअे के 17 साल बाद 1002 हिजरी ब मुताबिक़ 1593 ईस्वी में हकीम अली ने इसी तरह का एक हौज़ लाहौर में बनाया जो पानी से लबरेज़ था लंबाई और चौड़ाई 20×20, गहरा 3 गज़ बीच में पुख़्ता और मज़बूत हुजरा, उस की छत पर बुलंद मीनार, हुजरे के चारों तरफ़ चार पुल, लुत्फ़ येह कि हुजरे के दरवाज़े खुले थे और पानी अंदर ना जाता था। मीर हैदर मुअम्माई ने इस की तारीख़ **'हौज़ हकीम अली'** के अदद से निकाली। अकबर बादशाह भी उस की सैर को गए, सुना कि जो अंदर जाता है रास्ता ढूँढता है पर नहीं मिलता, दम घुट कर घबराता है और निकल आता है ख़ुद कपड़े उतार कर ग़ोता मारा और अंदर जा कर सारा हाल मालूम कर लिया, जहांगीर के ज़माने में वही हकीम ने आगरा में भी अपने बाग़ में जो अब हकीम का बाग़ कहलाता है इसी तरह का एक हौज़ तैयार किया था। जहांगीर ने 1016 हिजरी ब मुताबिक़ 1607 ईस्वी में लिखा है:

> **आज आगरा में हकीम अली के घर चंद मुसाहिबों के साथ उस के हौज़ का तमाशा देखने गया जैसा वालिद के वक़्त में लाहौर में बनाया था 6×6 फुट है, पहलू में निहायत रौशन हुजरा है जिसका रास्ता इसी हौज़ में से है मगर इस रास्ते से पानी अंदर नहीं आता, दस बारह आदमी इस में जल्सा जमा कर बैठ सकते**

हैं, जहांगीर ने इस के बदले में हकीम को दो हज़ारी मन्सब पर सरफ़राज़ किया।

(दरबारे अकबरी पेज 124) (तोज़क जहांगीरी पेज 73)

इसी साल जब अकबर बादशाह फ़तेहपुर से बहीरा की तरफ़ शिकार को चला तो हुक्म दिया कि ना तमाम हौज़ को साफ़ कर के हर किस्म के सिक्कों से लबरेज़ कर दो कि हम आला से अदना तक ख़ल्क़े ख़ुदा को इस का फ़ैज़ पहुंचा देंगे, चंद रोज़ के बाद रास्ते में राजा टोडरमल ने अर्ज़ किया कि 17 करोड़ भर चुके हैं मगर भरा नहीं, बादशाह ने कहा जब तक हम पहुंचे लबा लब कर दो और कुछ परवाह ना करो, जब भर गया तो अकबर उस के किनारे पर आया। पहले अल्लाह पाक का शुक्र बजा लाया उस के बाद एक अशर्फ़ी, एक रुपया, एक पैसा, ख़ुद उठाया फिर इसी तरह उमराए दरबार को दिया फिर मुट्ठीयाँ भर भर कर तक़सीम किया और दामन भर भर कर लोग ले गए। शैख़ मंझू क़व्वाल सूफियाना वज़ा रखता था और शैख़ औहन जौनपुरी के मुरीदों में से था। उन्हीं दिनों में बादशाह ने उसे भी हौज़ के किनारे पर बुलाया और उस का गाना सुन कर बहुत ख़ुश हुआ तानसेन और अच्छे अच्छे गवैयों को बुला कर सुना और कहा कि इस कैफ़ियत को तुम में से एक भी नहीं पहुंचा। फिर उस से कहा: मंझू जा ! सब नक़दी तू ही उठा ले जा, उस से भला क्या उठ सकती थी और अर्ज़ की: हुज़ूर! येह हुक्म दें कि जितने ग़ुलाम उठा सके उठा ले जायें, बादशाह ने इस बात को मंज़ूर फ़रमाया, ग़रीब हज़ार रुपया के क़रीब बांध ले गया, इसी तरह तीन साल के अरसे में सब नक़दी लुटा कर हौज़ को ख़ाली कर दिया।

साहिबे दरबारे अकबरी तहरीर करते हैं कि मैंने एक पुरानी तस्वीर देखी अकबर इस तालाओ के किनारे बैठा है, बीरबल वग़ैरा चंद उमरा हाज़िर हैं, कुछ मर्द, कुछ औरतें, कुछ लड़कियां पिनहारियों की तरह इस में से घड़े भर भर कर लिए जाती हैं। (अकबर नामा ,जिल्द 3, पेज 129,135)

जहांगीर ने भी अपने तख्त नशीन होने के 13 वें साल दौलत ख़ाना ख़ास के हाल में इस का ज़िक्र तहरीर किया है और लिखा है: कि 34 करोड़ 48 लाख 46 हज़ार दाम जो 16 लाख 79 हज़ार 400 रुपया के बराबर हैं और बाक़ी रुपये कुल एक करोड़, तीन लाख रुपये की नक़दी इस में समाई थी, ज़रूरत और हाजत के प्यासे मुद्दतों तक आते और दिलों की प्यास बुझाते रहे।

खास महल की दक्खिनी इमारत की छत पर वो छोटा सा ख़ूबसूरत और तिलस्माती कमरा मौजूद है जो ख़्वाबगाह के नाम से मौसूम है, चूँकि येह ख़ास बादशाह की ख़्वाबगाह के वास्ते बनाया गया था इस वजह से बा कमाल कारीगरों और आली दिमाग़ मुसव्विरों ने इस को ख़ुशनुमा बनाने में कोई ऐसी तदबीर नहीं उठा रखी थी जो इन्सान के दस्ते क़ुदरत से बाहर ना हो। रंग साज़ी के आला दर्जे के कारीगरों ने अंदर बाहर नीचे ऊपर तमाम दरो दीवार को रंगा रंग की शिगूफ़ा कारी और तरह तरह की गुल कारी से मुज़य्यन कर के कमरा को नमूनए बहिश्त बरीं बना दिया था। तस्वीर बनाने वालों ने अपने कमालात का कमाल दिखा कर तरह तरह की तस्वीरों और मुख़्तलिफ़ मंज़रों के नक़्शों से तमाम कमरे को चैनो सुकून का निगार ख़ाना बना कर आलमे तिलस्मात को मात किया था।

जवाहिर, रक़म और मुरस्सा क़लम कत्बा नवीसों ने मुख़्तलिफ़ गुल कारियों के बीच में इस नज़ाकत और सफ़ाई से कत्बों को लिखा था कि

जिनके नज़्ज़ारे से आँखों में नूर पैदा होता था। ग़र्ज़ीकि इस मक़ाम पर हर किस्म के बा कमाल कारीगरों ने अपनी अपनी कारीगरी को कमाल के दर्जे पर पहुंचा दिया था, मगर अफ़सोस और सख़्त अफ़सोस है कि येह बेनज़ीर कमरा इस ज़ेबो ज़ीनत और आराइशो ज़ेबाइश के बजाये अब इबरत का मक़ाम और हसरत का मक़ाम बन रहा है। इस के तमाम तलाई नक़्शो निगार और गुल कारियाँ ना मालूम किन ज़ालिम हाथों से महव हो गए यानी मिट गए। यहां तक कि कोई ज़र परस्त दरवाज़ों के किवाड़ तक उतार कर ले गया। अफ़सोस

तग़य्युर आ गया नक़्शो निगार हुस्न में यकसर
ना वो रंगे हिना बाक़ी ना चश्म सुर्मा सा बाक़ी
मिटी सारी अदायें उड़ गए जोबन के सब नक़्शे
ना अंदाज़े वफ़ा बाक़ी ना नाज़े दिल रुबा बाक़ी

अगर गर्वनमैंट आसारे क़दीमा की तरफ़ मुतवज्जा ना होती तो चंद ही रोज़ में इस के वो पस मांदे नक़्शो निगार भी जो किसी तरह ज़माना की नज़्रे बद से अब तक महफ़ूज़ रहे हमेशा के लिए मादूम यानी खत्म हो जाते। किसी ज़माना में गर्वनमैंट ने इस में मुंसफ़ी का दफ़्तर क़ाईम कर रखा था अब उस का येह बदल किया है कि कसीर दौलत सर्फ़ कर के ना सिर्फ कुल इमारत की मरम्मत करा दी बल्कि अक्सर मक़ामात की नये सिरे से रंग आमेज़ी कर के गुज़श्ता नक़्शो निगार को असली हालत में दिखाया है जिस से सैर करने वालों की नज़रों में कमरा की गुज़श्ता ख़ूबसूरती का मंज़र फिर जाता है। येह कमरा अंदर से 14 फ़ुट 5 इंच × 14 फ़ुट है। इस की छत ऊपर से हमवार और अंदर से एक ख़ास किस्म के पुख़्ता और मज़बूत लदाओ से जो लैला मजनूं का पड़ाओ कहलाता है पटी है। चारों तरफ़ चार दरवाज़े हैं।

जिनके पड़ाओ के ऊपर जालीदार खिड़कियाँ लगी हैं। आगे चारों तरफ़ 9 फ़ुट 9 इंच चौड़ा, पाँच पाँच दर का बरामदा है जिसकी छत पत्थर की पटियों से खपरैल नुमा पटी है। जैसा कि ऊपर तहरीर किया गया। कमरा और बरामदे की कोई जगह नक़्शो निगार से ख़ाली ना थी यहाँ तक कि दरवाज़ों के चौबे यानी कील तक मुख़्तलिफ़ ख़ूबसूरत नक़्शो निगार से मुरस्सा थे।

कमरे के अंदर दरवाज़ों के दर्मियान में सतह से 3 फ़ुट 5 इंच की बुलंदी पर दो दो ताक़ साढ़े 6 × साढ़े 6 फ़ुट बने हैं। उनके नीचे मुख़्तलिफ़ रंगों की तख़्तियों पर फ़न्ने मुसव्विरी के कमालात दिखाए गए थे, मिन जुम्ला 8 तख़्तियों में से सिर्फ दो की तस्वीरों का कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया है। मिन जुम्ला उनके उत्तरी दरवाज़े के पच्छिमी ताक़ के नीचे दरिया और कश्ती का मंज़र बनाया है। कश्ती में कई आदमी बैठे हुए हैं। मल्लाह कश्ती को चला रहे हैं। एक मल्लाह मस्तूल पर चढ़ा हुआ है। दरिया के किनारे आलीशान और ख़ूबसूरत मकान बने हैं। किसी किसी तख़्ती का कुछ थोड़ा सा हिस्सा बाक़ी रह गया है लेकिन येह समझ में नहीं आता कि क्या चीज़ बनाई थी। सिर्फ इतना पता चलता है कि इन्सानों की तस्वीरों के इलावा हाथी, हिरन, मोर, बत्तख़ वग़ैरा जानवरों और मुख़्तलिफ़ इमारतों और फ़रिश्तों की ख़्याली तस्वीरें बनाई गई थीं। अब येह बची हुई तस्वीरें सरसरी नज़र से देखने में नज़र नहीं आतीं। बल्कि निहायत ग़ौर या दूरबीन से देखने में मालूम होती हैं। इन तस्वीरों और ताक़ों के दर्मियान में 9 इंच चौड़ी सुर्ख़ रंग की पटरी दी गई है। इस पर स्याही से निहायत ख़ुशख़त कत्बे लिखे हुए थे जो अब साफ़ पढ़ने में नहीं आते। कहीं कहीं के हुरूफ़ और लफ़्ज़ बाक़ी रह गए हैं। निहायत मेहनत और कई अहबाब की मदद से जो कुछ पढ़ा गया वो उर्दू की किताब में लिख दिया गया है।

कमरे के अंदरूनी जानिब दरवाज़ों के ऊपर रंगा रंग की गुल कारी और नक़्शो निगार के दर्मियान में आबे ज़र यानी सोने के पानी से फ़ैज़ी के कुछ अशआर लिखे हैं जिन पर हाल में जिला की गई है।

बरामदे में भी चारों तरफ़ इसी किस्म की गुल कारी के दर्मियान में कत्बे लिखे हुए थे जो अब बिल्कुल मिट गए हैं। कहीं कहीं का कोई लफ़्ज़ या हर्फ़ बाक़ी रह गया है सिर्फ एक मिसरा पढ़ा गया।

एक उम्र रसीदा बुज़ुर्ग के बयान से वाज़ेह हुआ कि ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) के बरामदे में भी कुछ अशआर तहरीर थे।

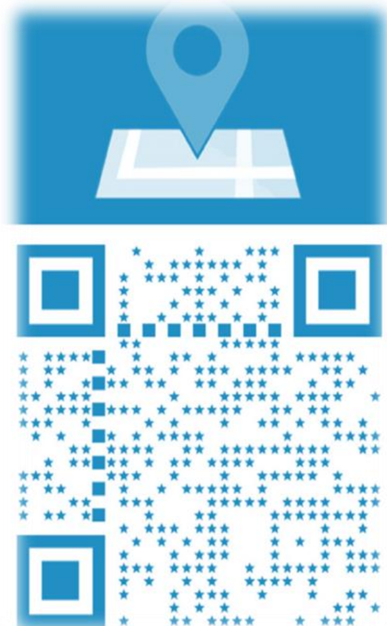
बरामदे के शुमाल (यानी उत्तर) मशरिक़ (यानी पूरब) में चूने और गच का पक्का फ़र्श है। मग़रिब (यानी पच्छिम) में पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श और जुनूब (यानी दक्खिन) में कटहरा लगा हुआ है। मशरिक़ी सेहन में दक्खिनी दीवार से मिला हुआ एक पुख़्ता और मज़बूत चबूतरा साढ़े 15 फ़ुट ×14 फ़ुट बना है, जिसके बीच में झरोका दर्शन की बालाई खिड़की 4 फ़ुट ऊंची और पौने 3 फ़ुट चौड़ी खुली है। ग़ालिबन ब लिहाज़ मौसम कभी अकबर बादशाह इस मक़ाम में और कभी उस के नीचे की खिड़की में बैठता होगा।

ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) के सेहन से पच्छिमी दालान की छत पर होता हुआ एक पर्दा दार रास्ता बना है जिसका सिल्सिला मरयम के मकान और पच महला होता हुआ जोधा बाई के मकान तक चला गया था। इस रास्ते के ज़रिये से बेगमात और शहज़ादियाँ अपने अपने मकानात से ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) और ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) से पच महला, मरयम के मकान और बाग़, नगीना मस्जिद और जोधा बाई के

महल से लेकर हरम मीनार (हिरन मीनार) तक निहायत आज़ादी से आमदो रफ़्त यानी आना जाना कर सकती थीं।

दर्मियान में थोड़े थोड़े फ़ासिले पर आराम लेने के वास्ते नशिस्त गाहें और सैर करने के वास्ते बारीक जालीदार खिड़कियाँ बतौरे चिल्मनों के बनी हुई थीं। अब इस रास्ता का सिल्सिला अक्सर जगह से शिकस्त यानी कमज़ोर हो गया है मगर उस का बड़ा हिस्सा अब तक मौजूद है। इसी तरह का दूसरा रास्ता ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) से शुमाल (यानी उत्तर) और मशरिक़ी (पूर्वी) जानिब तुर्की सुल्ताना के मकान और वहां से दीवाने आम तक चला गया था। रास्ते में दीवारों पर तरह तरह के नक़्श व निगार और बेल बूटे बने थे जो कहीं कहीं के अब तक बाक़ी हैं।

खास महल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।







तुर्की सुल्ताना का मकान

खास महल के उत्तरी व पूर्वी गोशे में वो बेनज़ीर मकान मौजूद है जो तुर्की सुल्ताना के मकान के नाम से मशहूर है, उसे अंजान लोग तंबोलन का महल और अक्सर लोग बेगम इस्तंबोल का महल भी कहते हैं। चूँकि अकबर की बीवियों में इस्तंबोल की किसी बेगम का होना तारीख़ से साबित नहीं होता लिहाज़ा क्या अजब है कि अकबर की बीवी सलीमा सुल्ताना बेगम के रहने का मकान हो। येह गुल रुख़ बेगम की साहिब ज़ादी थी जो कि हुमायूँ की हक़ीक़ी बहन थी। बाप मिर्ज़ा नूरद्दीन मुहम्मद था। सलीमा सुल्ताना रिश्ता से हुमायूँ की भांजी हुई, येह पाक दामन ख़ातून अगर्चे महल्लों में बैठने वाली थी मगर उन का नाम नेक अमीर मर्दों के ज़ैल में लिखा नज़र आता है। वो निहायत नेक तबीयत, ख़ुशबयान, शीरीं कलाम, हाज़िर जवाब, बा सलीक़ा, साहिबे तदबीर थी। जब ख़ानदाने सल्तनत में कोई मुआमला उलझता था तो इस की दानाई और अक़्ल की रसाई यानी पहुँच और हुस्ने तक़रीर की वकालत से सुलझता था। साहिबे इल्म, सुख़न फ़हम, सुख़न शनास और किताब के मुताला का शौक़ रखती थी। और अहले सुख़न की क़द्र दानी में शोहरए आफ़ाक़ थी। अव्वल ख़ान ख़ानां बैरम ख़ान के निकाह में थी। इस के बाद अकबर बादशाह की बीवियों में दाख़िल हुई, 982 हिजरी बमुताबिक़ 1574 ईसवी में अकबर बादशाह की फूफी गुल बदन बेगम के साथ गुजरात के रास्ते हज को गई, चार हज लगातार किए। वापसी में जहाज़ तूफ़ान की वजह से तबाही में आ गया इस वजह से एक साल अदन में ठहरना पड़ा। 990 हिजरी बमुताबिक़ 1582 ईस्वी में वापस आई।

जहांगीर के ज़माना में 60 साल की उम्र में 1021 हिजरी ब मुताबिक़ 1612 ईस्वी में वफ़ात पाई और अपने बाग़ की इमारत में दफ़न की गई, **उस का बाग़ मौज़ा मिढाकुर** तहसील आगरा में फ़तेहपुर सीकरी की सड़क पर मौजूद है।

तुर्की सुल्ताना का मौजूदा मकान एक छोटा सा कमरा है जो अंदर से साढे 13 फ़ुट × 13 फ़ुट और बाहर से सवा 16 × सवा 16 फ़ुट है। इस के चारों तरफ़ लाल पत्थर का बरामदा है जो उत्तर व दक्खिन 33 फ़ुट 18 इंच और पूरब व पच्छिम 32 फ़ुट है और 8 फ़ुट 9 इंच चौड़ा है। कमरा और पच्छिमी जानिब के बरामदे की छत मुनक़्क़श पटियों से पटी है जिसके आगे निहायत नफ़ीस मुनक़्क़श छज्जा लगा है। बाक़ी तीनों तरफ़ के बरामदे की छत पुख़्ता और मज़बूत खपरैल नुमा है। इस के क़ुर्बो जवार यानी आस पास की हालत देखने से ख़्याल होता है कि इस इमारत के इलावा और भी कुछ इमारत इस मकान के मुताल्लिक़ ज़रूर होगीं जो किसी ज़माना में गिर गईं।

मौजूदा इमारत कारीगरी व ख़ुशनुमाई के लिहाज़ से दुनिया की नफ़ीस तरीन इमारतों में शुमार होने के काबिल है। तमाम इमारत नीचे से ऊपर तक मुनक़्क़श और बा कमाल संग तराशों की मुख़्तलिफ़ दस्त कारियों से मुरस्सा है अगर उस को चैन का निगार खाना (सुकून का घर) लिखें तो रवा यानी दुरुस्त है या पुराने ज़माने के संग तराशों की दस्त कारियों का बेनज़ीर अजाइब ख़ाना कहें तो बजा है। इस की बारीक बेलें निहायत नफ़ीस दरख़्त, गुलदस्ते, फूल पत्ते देखकर अक़्ल बेबस हो जाती है। पत्थर में दरख़्त को तराशना फिर इस में ग़ुन्चा और शिगूफ़ा की मीना कारी दिखाना, कलियों का चटख़ना, फूलों का खिलना, पत्तों का हवा से मुड़ना। ख़ोशों का दरख़्तों

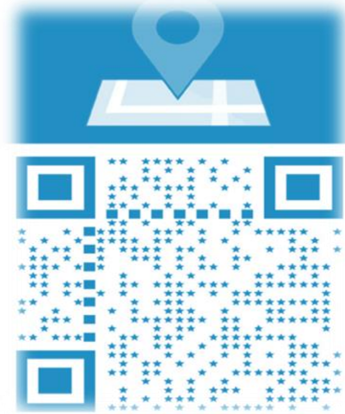
में लटकना, मुख़्तलिफ़ जानवरों का जंगल में फिरना, चिड़ियों का दरख़्तों पर चहचहाना, ऐसा अजीब कमाल है जो हर शख़्स को हैरत में डालता है। ना मालूम येह संग तराशों की कारस्तानी है या किसी बा कमाल कारीगर ने पत्थर को मोम कर के मुख़्तलिफ़ साँचों में ढाल लिया है। ग़र्ज़ कि तमाम इमारत में कोई जगह सादा नहीं है।

कमरे के अंदर दरवाज़ों की बग़लों में फ़र्श से 4 फ़ुट की बुलंदी पर साढ़े 6 फ़ुट ऊंचे और पौने 4 फ़ुट चौड़े एक ख़ास किस्म के कश्ती नुमा मुख़्तलिफ़ पहल के बहुत से ताक़ पत्थर में तर्शे हुए हैं । चारों दरवाज़ों के ऊपर एक एक जालीदार खिड़की लगी हुई है । ताक़ों के नीचे अक्सर मक़ामात के मंज़र दिखाए गए हैं । चुनांचे पूर्वी दरवाज़े की उत्तरी बग़ल में हिमालय पहाड़ के किसी पुर फ़िज़ा जंगल का मंज़र दिखाया है। दरख़्तों की टहनियों पर तोते, मैना वग़ैरा कई किस्म की चिड़ियां बैठी हुई नग़मा सराई कर रही हैं। दरख़्त के नीचे दो शेर बैठे हुए हैं। इस के बराबर दरवाज़े की दूसरी बग़ल में किसी दूसरे मक़ाम का सीन है। बरगद का अज़ीमुश्शान दरख़्त है। जिस पर लंगूर और बंदर कूद रहे हैं। चिड़ियां टहनियों पर जमी हुई हैं। दरख़्त के नीचे तालाब है, जिसमें कंवल के ख़ुशनुमा फूल खिल रहे हैं। एक जानवर तालाब में पानी पी रहा है। कुछ जानवर बच्चों को दूध पिला रहे हैं। लंगूर और बंदर उन चौपायों को दरख़्त के ऊपर से देख रहे हैं, एक तरफ़ हरा भरा बाग़ लगा है जिसमें अंगूर और खजूर के दरख़्त भी मौजूद हैं। अंगूर के दरख़्त में ख़ोशे लटक रहे हैं। एक तरफ़ झाड़ियाँ क़ाईम हैं बाक़ी तीन दरवाज़ों के इर्द गिर्द भी छालिया, सर्व, ताड़ और दीगर पहाड़ी दरख़्त और गुल दस्ते निहायत ख़ूबसूरती से तर्शे हुए हैं। अक्सर दरख़्तों में

ख़ोशे और ताड़ के दरख़्तों में ताड़ी के लोटे लटक रहे हैं। जानवरों की तस्वीरें जहां जहां हैं उन की सूरतों को मिटा दिया गया हैं।

शाही हम्माम और इस मकान के दर्मियान में एक मुख़्तसर पा बाग़ था, इस बाग़ में दीवाने आम की दीवार से मिला हुआ वो ज़ीना है जिस पर हो कर दीवाने आम की छत के ज़नाना रास्ते पर पहुंच जाते हैं।

तुर्की सुल्ताना के मकान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

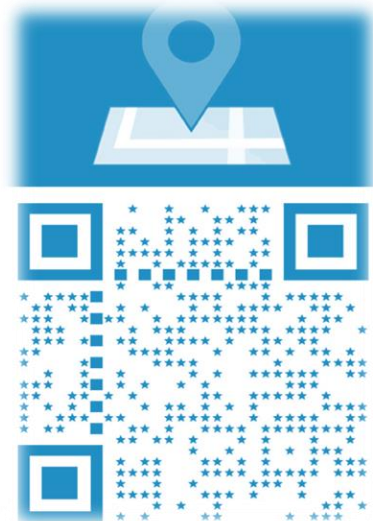




औरतों का मदरसा

खास महल के उत्तर और पच्छिम गोशे में लड़कियों का मदरसा है। मौजूदा हालत में येह एक सादा पुख़्ता और मज़बूत इमारत है। मगर बाज़ जगह के बाक़ी बचे हुए नक़्शो निगार से जो अब बहुत ही थोड़ी बाक़ी रह गई है। इस वक़्त तक इतना पता चलता है कि इस के दरो दीवार पर भी ख़ुशनुमा गुल कारी मौजूद थी। नीचे बहुत से सुतून गाड़ कर उनकी छत पर येह मदरसा बनाया गया है। इस में दो कमरे हैं। एक पच्छिम की जानिब पच महला की तरफ़, सवा 21 फ़ुट × 15 फ़ुट, दूसरा इस से मिला हुआ पूरब की जानिब 17×11 फ़ुट है उत्तरी जानिब 34 फ़ुट 10 इंच × 9 फ़ुट 5 इंच बरामदा है। बरामदे के आगे उत्तर में 43 फ़ुट 9 इंच × 42 फ़ुट 2 इंच और पूरब में 50 फ़ुट × 26 फ़ुट 6 इंच सेहन है। कमरों में ख़ूबसूरत अलमारियां और ताक़ किताबें और क़लमदान रखने के लिए बने हैं।

औरतों के मदरसा के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





عقائد، عبادات، معاملات اور تصوف کے مسائل اور عقلی دلائل پر مشتمل کتاب بنام

فیضانِ شریعت کورس

اس کتاب میں آپ ملاحظہ فرمائیں گے :

عقائد کے 16 بیان
عبادات کے 16 بیان
معاملات کے 16 بیان
تصوف کے 16 بیان

مصنف

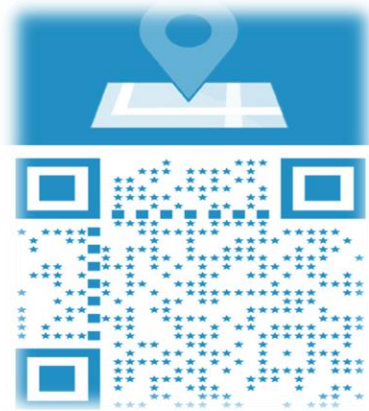


مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

शाही हम्माम

खास महल के पूर्वी हिस्से में येह 6 दर्जे का लंबा चौड़ा हम्माम मौजूद है। जिसमें दक्खिनी कार खानए आब रसानी से पानी आता था। बाज़ दर्जों में गुज़श्ता नक़्क़ाशी और गुलकारी का किसी क़दर काम ऐसी नज़ाकत और चमक दमक के साथ बाक़ी है कि येह मालूम होता है कि अभी चाबुक दस्त कारीगर ने इस की तामीर ख़त्म की है।

शाही हम्माम के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





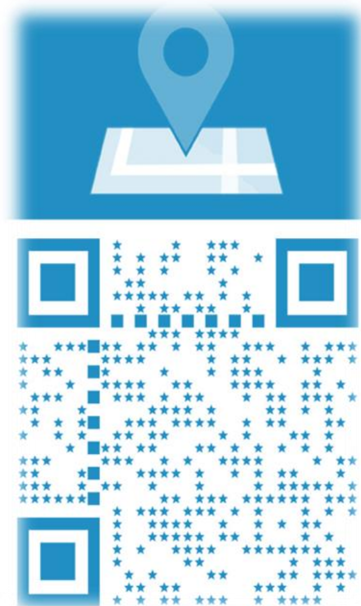




फ़र्शे पचीसी

खास महल और दीवाने ख़ास के दर्मियान में एक पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श 217×154 फ़ुट है जो पचीसी का फ़र्श कहलाता है। येह दीवाने ख़ास के फ़र्श से ऊंचा और खास महल के फ़र्श से नीचा है। इस के पूर्वी और पच्छिमी किनारों पर दालान दर दालान बने थे, जिनका बहुत थोड़ा हिस्सा अब बाक़ी रह गया है, फ़र्श के दर्मियान में एक बड़ी पचीसी बनी हुई है जिसके दर्मियान में लाल पत्थर का एक मामूली तख़्त 4 फ़ुट 10 इंच × 4 फ़ुट 3 इंच नसब है। बयान किया जाता है कि बादशाह इस तख़्त पर बैठ कर पचीसी खेला करता था और पचीसी के ख़ानों में बजाये मोहरों के ग़ुलाम या लौंडियां बिठाई जाती थीं जो सिर्फ इशारा से एक ख़ाना से दूसरे ख़ाना में मुंतक़िल हो जाती थीं।

फर्शे पचीसी के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





مرنے والے کو موت کے وقت پیش آنے والے

دردناک و عبرت ناک معاملات پر مشتمل واقعات کا مجموعہ بنام



موت کے وقت

مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

مکتبہ دارالسنہ دہلی

नशिस्त गाह रम्माल

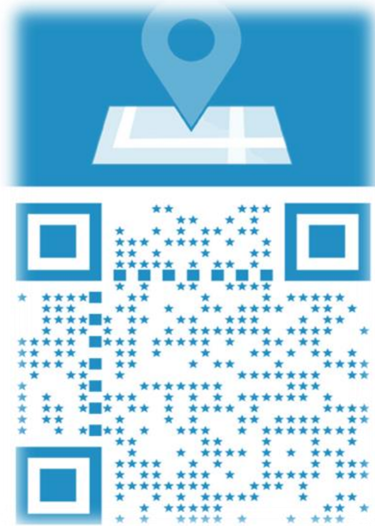
फर्शे पचीसी के उत्तर और पच्छिम की जानिब में आँख मिचौली से मिली हुई एक छोटी सी गुंबद नुमा छतरी बनी हुई है, जिसके बारे में बयान किया जाता है कि इस में अकबर बादशाह का रम्माल (फ़ाल खोलने वाला) या नुजूमी बैठा करता था, बाज़ लोग उसे गुरु की मंढी भी कहते थे, इस में शक नहीं कि उस ज़माना में कोई काम बिग़ैर साअत निकलवाये शुरू नहीं किया जाता था और बादशाह से लेकर अदना उमरा तक के पास नुजूमी मुलाज़िम रहते थे, ख़ानदाने मुग़लिया में येह तरीक़ा औरंगज़ेब के ज़माना तक जारी रहा।

औरंगज़ेब ने अपने बादशाहत के अठारहवीं साल 1085 हिजरी ब मुताबिक़ 1674 ईस्वी में तमाम नुजूमियों को जो बादशाह और शाहज़ादों और सूबा दारों के पास मुलाज़िम थे मौक़ूफ़ कर के इस तरीक़े को बंद कर दिया और मुहूर्त निकलवा कर सफ़र करने की जगह येह दस्तूर मुक़र्रर किया कि पीर और जुमेरात को कूच हुआ करे पस क्या तअज्जुब है कि दरबारे ख़ास के वक़्त शाही नुजूमी यहां बैठ कर अपनी पोथी निकालता और मुहूर्त निकाला करता हो।

इस छतरी की बनावट काफ़ी ख़ूबसूरत है येह एक चौकोर चबूतरे पर जिस का हर गोशा 9 फ़ुट और बुलंदी 9 इंच है, चार सुतूनों पर क़ाईम है, सुतूनों के दर्मियान में एक अजीबो ग़रीब सनअत की लहरिया दार मेहराब बनी है। पत्थर में मगरमच्छ के मुँह तराश कर के सुतूनों में नसब किए हैं। फिर उन के दर्मियान में मेहराब क़ाईम की है।

इस की छत गुंबद नुमा है जिसमें लाल ज़मीन पर नक़्शो निगार बने हुए हैं। पहले चारों तरफ़ कटहरा लगा था जिसके निशान मौजूद हैं।

नुजूमी के बैठने की जगह के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

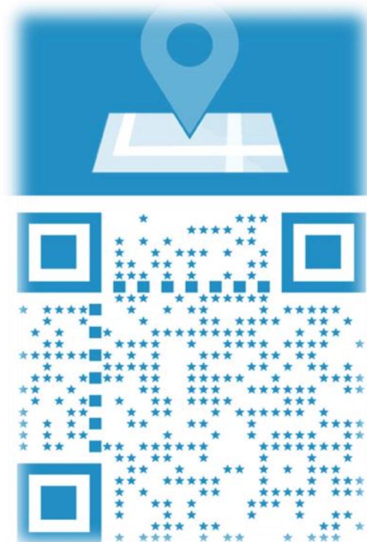




आँख मिचौली

येह लाल पत्थर की निहायत मज़बूत इमारत है जो नशिस्त गाह रम्माल और दीवाने ख़ास से मिली हुई है। इस के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें मशहूर हैं। जिनमें सबसे ज़्यादा येह मशहूर है कि अकबर बादशाह यहां अपनी बीवियों के साथ आँख मिचौली खेला करता था। मगर येह महेज़ मन गढ़त मालूम होती है। क्योंकि अक़्ले सलीम इस बात को हरगिज़ क़बूल नहीं करती कि अकबर जैसा बेदार मग़्ज़ बादशाह अपनी बीवियों से आँख मिचौली खेलने के लिए दीवाने ख़ास के क़रीब और बीवियों के महलों से बिल्कुल अलैहिदा येह इमारत बनवाता। जहां तक क़यास किया जाता है येह इमारत किसी ख़ास दफ़्तर या ख़ज़ाना के इस्तिमाल के लिए बनाई गई होगी। इस इमारत में तीन कमरे हैं और कमरों में पुख़्ता और मज़बूत अलमारियां तरशी हुई थीं और अतराफ़ में गैलरी नुमा रास्ता बना हुआ है।

आँख मिचौली के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



آنکھ مچولی کے سامنے لگے ہوئے پتھر کی تختی میں لکھا ہوا ہے کہ تین کمروں والا یہ بھون جو غلطی سے آنکھ مچولی کہا جاتا ہے حقیقت میں سونے چاندی کے سکوں کا خزانہ تھا۔



دلچسپ اور عبرتناک واقعات کا مجموعہ بنام
کیا حال ہے؟
صبح کس حال میں کی؟
آپ کیسے ہیں؟
مصنف
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

दीवाने ख़ास

दीवाने ख़ास जो यक खम्बे के नाम से भी मशहूर है खास महल और फर्शे पचीसी के उत्तरी जानिब मौजूद है। फ़तेहपुर की दीगर इमारात की तरह येह भी लाल पत्थर की ख़ुशनुमा इमारत है। येह अगर्चे एक मंज़िला इमारत है मगर बाहर से दो मंज़िला मालूम होती है। इस की शक्ल चौकोर है जो बाहर से 43 फ़ुट 5 इंच × 43 फ़ुट 5 इंच और अंदर से 28 फ़ुट 10 इंच ×28 फ़ुट 10 इंच है। अंदर चौपड़ का फ़र्श है जो लाल और सफ़ैद पत्थर के टुकड़ों से बनाया गया है।

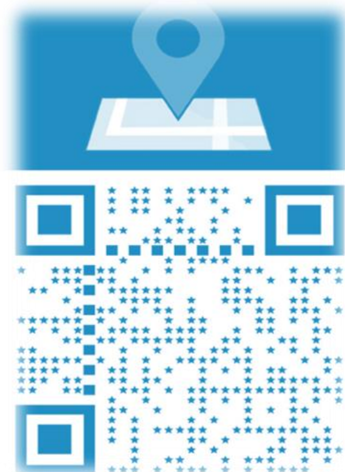
कमरे के बीच में वो लंबा मुनक़्क़श सुतून नसब है जिसे इस इमारत की जान कहना ज़्यादा मौज़ूं है। इस के नीचे का पाया चौकोर शक्ल का है। येह 2 फ़ुट 5 इंच × 2 फ़ुट 5 इंच और ऊंचाई 9 इंच है। इस के ऊपर सुतून का हिस्सा चौकोर है जो 3 फ़ुट बुलंद है। इस में ख़ूबसूरत नक़्शो निगार बने हैं। ऊपर चारों गोशों पर चार लट्टु निकले हैं। इस से ऊपर का हिस्सा हश्त यानी आठ पहल है। इस का हर कोना 9 इंच और 3 फ़ुट बुलंद है। हर गोशे में एक नफ़ीस उभरा हुआ फूल मुज़य्यन है। इस से ऊपर सुतून गोल कर दिया गया है जिस का गोला 5 फ़ुट 4 इंच है। येह 2 फ़ुट बुलंद है। इस में ख़ुशनुमा लहरिया दार बेल बना कर 16 पहल क़ाईम किए हैं जिसके ऊपर 1 फ़ुट ऊंचा गोल पाया है। ग़र्ज़ कि येह सुतून पाँच मुख़्तलिफ़ बनावटी हिस्सों से मुरक्कब और 9 फ़ुट 9 इंच बुलंद है। इस के ऊपर 16 ख़ुशनुमा लट्टूदार तोड़े लगा कर छत पाटी है। फिर उस पटाओ के किनारों पर 32 तोड़े क़ाईम कर के एक और चौड़ा पटाओ दिया है। इस की छत के अतराफ़ में दूसरी किस्म के तोड़े नसब कर के उन के ऊपर गोल दाईरा नुमा छत पाटी है।

जिसका क़ुतर यानी गोलाई 10 फ़ुट है येह ही वो नशेमन है जिसके ऊपर तख़्त पर बैठ कर अकबर दरबारे ख़ास किया करता था।

दर्मियानी सतून की बुलंदी के बराबर कमरे के चारों गोशों में इसी तरह के लट्टू नुमा तोड़े क़ाईम कर के उन के ऊपर छत पाटी है। इन छतों के दर्मियान में बड़ी बड़ी पत्थर की पटियाँ रख कर पुल बना दिए हैं। इसी के बराबर दीवार में चारों तरफ़ तोड़े क़ाईम कर के उन की छत पर एक गोशे से दूसरे गोशे तक गैलरी नुमा रास्ता बना दिया है। पुलों की लंबाई 9 फ़ुट और चौड़ाई ढाई फ़ुट है। और क़रीब क़रीब यही चौड़ाई चारों तरफ़ के गैलरी नुमा रास्ते की है। शह नशीन और रास्ता और पुलों के इर्द गिर्द डेढ़ फ़ुट बुलंद जाली दार कटहरा नसब है।

दीवाने ख़ास की छत लदाओ की और पुख़्ता और मज़बूत है और गुज़श्ता नक़्क़ाशी के किसी क़दर बाक़ी मांदा नक़्शो निगार अब तक मौजूद हैं।

दीवाने खास के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





کامیابی کے 10 اصول

مایوسی کا خاتمہ کرکے کامیابی کی جانب گامزن کرنے والے اصولوں
کا مجموعہ " کامیابی کے 10 اصول" یہ کتاب اپنے موضوع
کے اعتبار سے منفرد ہے کیونکہ اس کتاب میں ان اصولوں کو جمع کیا
گیا ہے جن سے مایوسی کا خاتمہ ہونے کے ساتھ ساتھ آگے بڑھ کر
کچھ کرگزرنے کا جذبہ نوپیدا ہوتا ہے۔

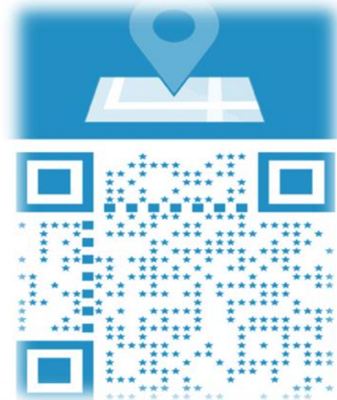
مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

दीवाने आम

दीवाने ख़ास, फ़र्शे पचीसी और खास महल के पूर्वी जानिब दीवाने आम मौजूद है। जिसके हर कोने में 14×14 फ़ुट चौड़े पुख़्ता और मज़बूत दालान बने हैं, दर्मियान में 370×180 फ़ुट सेहन है। पहले कुल सेहन में पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श था जो अब सिर्फ शह नशीन के सामने बाक़ी रह गया है। पच्छिमी दालानों की छत पर पर्दा दार रास्ता है जिसका ज़ीना खास महल में तुर्की सुल्ताना के पाइं बाग़ में बना है। इस ज़ीने में दस सीढ़ियां हैं जिन्हें तै कर के इस रास्ता पर पहुंच जाते हैं। ऊपर दो कमरे और एक बरामदा बना है जिनका मज्मूई रकबा 30फ़ुट ×11 फ़ुट है। सबसे पहले दक्खिन रवैय्या बरामदा है इस के बाद दो बराबर के कमरे हैं जिनमें चारों तरफ़ दरवाज़े लगे हैं। पूर्वी दरवाज़ों में एक एक बंद नशिस्त गाह बनी है। जिनमें दीवाने आम के सेहन की तरफ़ छोटी सी जाली दार खिड़कियाँ लगी थीं जिनसे बादशाह की बीवियां दीवाने आम की सैर किया करती थीं। कमरों और बरामदों में चूने की अस्तर कारी पर नक़्श निगार बने थे जिनका किसी क़दर अच्छा नमूना बरामदे में अब तक मौजूद है।

दीवाने आम के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।







पंच महल

फ़तेहपुर की दिल फ़रेब और नादिरुल वुजूद इमारात में सबसे ज़्यादा अजीबो गरीब इमारत पच महला यानी पाँच मंज़िल की इमारत के नाम से मशहूर है। येह खास महल से मिली हुई उत्तर और पच्छिम की जानिब में मौजूद है। आज सही तौर से येह कोई नहीं कह सकता कि येह इमारत किस ग़र्ज़ से बनाई गई थी। महेज़ क़यास कर लिया गया है कि अकबर बादशाह ने अपनी बीवियों और शाहज़ादों और शाहज़ादियों और ख़ास ख़ास अराकीने सल्तनत के वास्ते येह एक तफ़रीह गाह बनाई थी। वाक़ेई येह निहायत हवा दार और दिलचस्प इमारत है। इस में चारों तरफ़ से निहायत ठंडी ठंडी हवाएं आया करती हैं। ऊपर की मंज़िलों से तमाम शहर और दूरो नज़्दीक की इमारतें और पहाड़ के नशेब का सब्ज़ा ज़ार कोसों यानी दूर दूर तक ब ख़ूबी नज़र आता है।

इस इमारत में ख़ास खूबसूरत बनावट येह है कि हर एक ऊपर वाला दर्जा अपने नीचे वाले दर्जे से जिसकी छत पर वो क़ाईम है। छोटा होता गया है यहां तक कि सबसे ऊपर का दर्जा यानी पांचवीं मंज़िल एक छोटा सा टुकड़ा है। जो छोटे छोटे चार सुतूनों पर क़ाईम है। बाहर की जानिब दोहरे सुतून हैं क्योंकि उन पर बहुत ज़्यादा बोझ रखा गया है। एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल पर ख़ास बनावट के साथ सुतूनों पर सुतून क़ाईम किए गए हैं। दक्खिन और पच्छिम गोशे में ऊपर की मंज़िलों में पहुंचने के वास्ते ज़ीना बना है। सबसे नीचे का दर्जा जो पुख़्ता और मज़बूत चबूतरे पर है 72×58 फ़ुट है। इस में 84 सुतून हैं। छत चार चार सुतूनों के दर्मियान पत्थर की पटियों से पटी है जिसके दर्मियान में एक उभरा हुआ ख़ुशनुमा फूल मुज़य्यन है। छत पर गुज़श्ता नक़्क़ाशी के कुछ आसार भी नुमायां हैं।

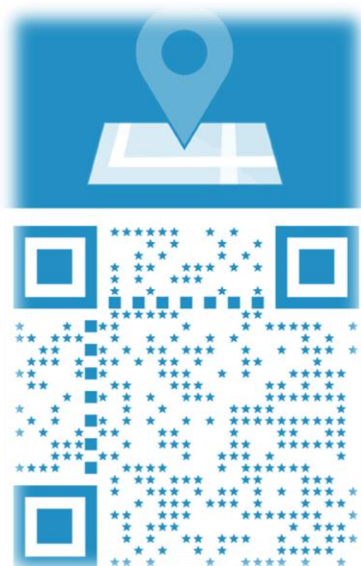
ज़ीने की 11 सीढ़ियां तै कर के दूसरी मंज़िल पर पहुंचते हैं जो सबसे ज़्यादा ख़ुशनुमा है। येह 53 फ़ुट 2 इंच × 37 फ़ुट 7 इंच है इस में 56 लंबे सुतून नसब हैं जो सब मुनक़्क़श और मुख्तालिफ़ क़िस्म की बेलों, ख़ोशेदार दरख़्तों, मुख़्तलिफ़ गुलदस्तों, फूल पत्तियों से मुज़य्यन और मुरस्सा हैं। हर सुतून के नक़्शो निगार एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ यानी जुदा हैं। एक सुतून पर जो काम है वो आप को किसी दूसरे सुतून में हरगिज़ नज़र ना आएगा। इस दर्जे में उत्तर और पच्छिम की तरफ़ सेहन छूटा हुआ है और दक्खिन में जालीदार कटहरा लगा है।

दूसरी और तीसरी मंज़िल के दर्मियान में 19 सीढ़ियां हैं। तीसरी मंज़िल का रकबा 35 फ़ुट × पौने 19 फ़ुट, इस में 30 सुतून हैं चूँकि येह दर्जा ज़्यादा बुलंदी पर था और इसी दर्जे में ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) के ज़नाना रास्ता का सिल्सिला आ कर मिल गया है लिहाज़ा उस के उत्तर और पच्छिम और दक्खिन की जानिब पत्थर की पटियों से पर्दा की दीवार बना दी थी जो अब बाक़ी नहीं रही सिर्फ उस के निशान बाक़ी हैं।

तीसरी और चौथी मंज़िल की 23 दर्मियानी सीढ़ियां तै कर के चौथी मंज़िल पर पहुंचते हैं येह 25 फ़ुट 5 इंच × 9 फ़ुट 7 इंच है जिसमें सिर्फ 12 सुतून हैं।

चौथी मंज़िल से 12 सीढ़ियों के बाद पांचवीं मंज़िल मिलती है। येह सवा 10 फ़ुट × सवा 10 फ़ुट है। चारों तरफ़ जालीदार कटहरा लगा है इस में चार सुतून हैं जिन पर गुंबद दार बुर्जी बनी हुई है। कुल इमारत में 176 सुतून हैं।

पंच महल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





महल मरयमुज़्ज़मानी बेगम या सुनहरा मकान

खास महल के पच्छिमी जानिब येह बे नज़ीर इमारत मौजूद है जो मरयम का महल और सुनहरे काम होने की वजह से सुनहरे मकान के नाम से भी मशहूर है जिस वक़्त येह मकान तामीर हुआ था उस के तमाम सुतूनों और दरो दीवार पर किस्म किस्म के ख़ुशनुमा नक़्शो निगार बना कर तरह तरह की तलाई और नकरनी शिगूफ़ा कारी की गई थी। बा कमाल तस्वीर बनाने वालों ने साहिबे मकान के मज़ाक़ और दिलचस्पी का अंदाज़ा कर के अंदर, बाहर, नीचे, ऊपर तरह तरह की तस्वीरें ख़ास ख़ास तारीख़ी वाक़िआत रज़्मो बज़्म के मंज़र इस नफ़ासत और तकल्लुफ़ात से खींचे थे कि सनअत की जगह जादूगरी कर के तिलस्मात का आलम बना दिया था। ख़ुश नवीसों ने अपने क़लमे जादू और रक़म से मुख़्तलिफ़ गुल कारियों के बीच में निहायत ख़ुश ख़त कत्बे लिखे थे। अब अगर्चे गुज़श्ता आराइश व ज़ेबाइश और ज़ेबो ज़ीनत के लिहाज़ से येह मकान फ़र्हत की जगह के बजाए मुरक़्क़ा हसरत बन रहा है मगर इस के वो बाक़ी मांदा नक़्शो निगार और तसावीर का हिस्सा जो अभी तक ज़माना की नज़रे बद से महफ़ूज़ है, इस मिटी हालत में भी दुनिया की सैर करने वालों को हैरत में डालता है।

मरयमुज़्ज़मानी बेगम के अस्ली नाम पर ला इल्मी का पर्दा पड़ा हुआ है। येह राजा भाड़ा मल कच्छवाहा (जो कि अंबेर जयपुर का वाली था) की बेटी और मिर्ज़ा राजा मान सिंह की फूफी और जहांगीर बादशाह की माँ थी, 969 हिजरी ब मुताबिक़ 1561 ईस्वी में बमक़ाम सांभर अकबर की बीवियों में दाख़िल हुई। 1032 हिजरी ब मुताबिक़ 1623 ईस्वी में ब मक़ाम आगरा इंतिक़ाल किया और सिकंदरा में दफ़न हुई।

येह महल एक पुख़्ता और मज़बूत चबूतरे के बीच में बना हुआ है जो 98×77 फ़ुट है। इस में चार कमरे और उत्तरी कमरे के आगे बरामदा है। छत निहायत बनावट से पत्थर के छोटे छोटे चौकोर शक्ल के टुकड़ों को बाहम वस्ल यानी मिला कर के पाटी गई है।

चारों कमरों की छत पर एक हवा दार छतरी बनी है और सेहन के पूर्वी और दक्खिनी गोशे में एक छोटा सा मुनक़्क़श मकान और बना है जो बावर्ची ख़ाना के नाम से मशहूर है। इस के तमाम दरो दीवार पर तरह तरह की बेलें, गुलदस्ते लहरिये, घंटे वग़ैरा तर्शे हुए हैं।

अब कमरा और बरामदा के बक़िया नक़्शो निगार का हाल मुख़्तसर तौर से लिखा जाता है। उनमें बाज़ तस्वीरें और शक्लें साफ़ नज़र आती हैं, बाज़ निहायत ग़ौर से देखने या दूरबीन से देखने में साफ़ मालूम होती हैं। किसी किसी का कोई ख़ास हिस्सा बाक़ी रह गया है। अफ़सोस कि अब जो कुछ बाक़ी है येह भी नीस्तो नाबूद होता जाता है।

एक मक़ाम पर निहायत उम्दा तस्वीर एक फ़रिश्ता जो एक कुर्सी पर बैठा है इस की एक टांग सिमटी हुई है और दूसरी बाईं टांग कुर्सी से नीचे लटक रही है। येह एक नीले रंग का जुब्बा पहने है सीना और पेट ढका है। चेहरा मिट गया है मगर कंधों पर जो पर लगे हैं वो और गले का तौक़ साफ़ नज़र आता है। इसी के क़रीब ग़ालिबन दूसरी तस्वीर इसी किस्म की थी जिस के अब सिर्फ पर नज़र आते हैं। दाएं हाथ की तरफ़ एक छतरी बनी है जिस की छत में ईरानी नक़्क़ाशी का उम्दा काम है।

उत्तरी बरामदे के सुतूनों पर बहुत नफ़ीस काम बने थे जिनके रंग अगर्चे खत्म हो चुके हैं मगर इतना पता चलता है कि नीला रंग ज़्यादा इस्तिमाल किया गया था। उत्तरी बरामदे के तीसरे सुतून पर जो पूरब से

पच्छिम की तरफ़ है दो हाथियों **"बख़्त बली"** और **"परताबा"** नाम की लड़ाई का मंज़र खींचा है। एक हाथी की तस्वीर मिट गई जिस का बहुत थोड़ा सा हिस्सा बाक़ी रह गया है। दूसरे की किसी क़दर अच्छी हालत में मौजूद है। इस के ऊपर एक शेअर लिखा है जिससे पता चलता है कि हर मंज़र पर जो बनाया गया था उसी किस्म कि अशआर लिखे थे जो अब मिट गए, येह भी थोड़े ही दिन का मेहमान मालूम होता है चुनांचे जिन मक़ाम पर ख़त खींचा हुआ है वो मिट चुका है

इस मक़ाम पर फ़ील बानों यानी हाथी चलाने वालों की तस्वीर का भी कुछ हिस्सा बाक़ी है। इस सुतून के बराबर के दूसरे सुतून पर भी दो हाथियों की लड़ाई का तमाशा बनाया गया है। उनमें एक हाथी की पूरी और एक की आधी तस्वीर मौजूद है।

बरामदा के उत्तरी और पच्छिमी गोशे में किसी मक़ाम का मंज़र दिखाया है। एक नदी बह रही है जिसके किनारे पर दरख़्त खड़े हैं, शेर भी मौजूद है, एक बड़े दरख़्त पर मुख़्तलिफ़ रंग की ख़ूबसूरत चिड़ियां टहनियों पर बैठी हुई हैं जो ज़बाने हाल से **"कुल्लु मन अलैहा फ़ान"** का सबक़ हर आने वालों को सुनाती हैं। इस मक़ाम की ज़मीन नीली और दरख़्त लाल रंग के और चिड़ियों के पर मुख़्तलिफ़ रंग के हैं।

एक जगह शाह नामा की किसी लड़ाई का सीन खींचा है। उम्दा उम्दा हाथियों पर लाल रंग के हौदे मुज़य्यन हैं। एक मक़ाम पर पैदलों की लड़ाई, एक जगह चीते का शिकार, एक जगह किसी शिकार गाह का मंज़र दिखाया है। एक जगह दीवार पर चौगांबाज़ी का मैदान बनाया है। बहुत से सवार कुछ पैदल अपने अपने करतब दिखा रहे हैं। किसी के हाथ में तीरो

कमान है, किसी के पास बंदूक़, किसी के हाथ में तलवार, क़रीब ही दो हाथी कसे खड़े हैं।

बरामदे में मलिकुश्शुअरा फ़ैज़ी के वो अशआर जो ख़ास इस इमारत की तारीफ़ में मौज़ूं किए यानी बनाये गए थे। नस्तालीक खत से लिखे थे जिनमें अब सिर्फ कुछ ही अशआर पढ़े जाते हैं।

उत्तरी बरामदे में:

ایں عمارت کز شرف از ہفت گردوں برتر است
کعبہ را ماندولے ایں را صفائے دیگر است
ملتجائے دولت است وما من امن واماں
ملجأنہ آسماں و قبلۂ ہفت اختر است
می کشدحیرت ز طرح و نقص ایں عالی مقام

ار صفائے صحنش ایوان فلک را ہیبت است
ہم زچوب آستانش آسماں را محو راست
غرفہ اش را برتر از گردوں اگر گویم رواست
شمسہ اش را گربہ از خورشید دانم بہتر است
گلستاں نقش ہائے او برنگ باغ خلد

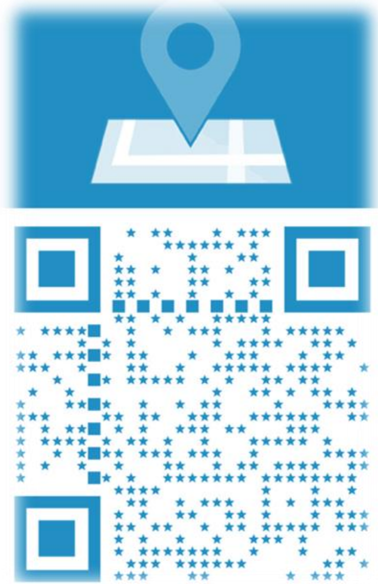
در نزاکت ہمچو طاق زر نگار آسماں

در لطافت ہیچو قصر لا جور و چنبر است
पच्छिमी बरामदे में

کرد___________________________________

ہست اگرچہ در گرہ کار فلک سحر افریں
نقش ہائے خوش خط او صورت معنی نما
صورت معنی نمایش دلبر اہل یقیں
تا بود افلاک گرداں ماہ ہمدم با نجوم
تابود__________________________________

महल मरयमुज़्ज़मानी बेगम या सुनहरा मकान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





فقہ حنفی کی مشہور کتاب " نورالایضاح " کی اردو شرح بنام
شارق الفلاح
شرح
نورالایضاح
آپ اس کتاب میں ملاحظہ فرمائیں گے:
مصنف کا تعارف
شارح کا تعارف
عربی متن مع اعراب
متن کا سلیس اردو ترجمہ
سوالاجوابامتن کی شرح
شارح
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری
مکتبہ دارالسنہ دہلی

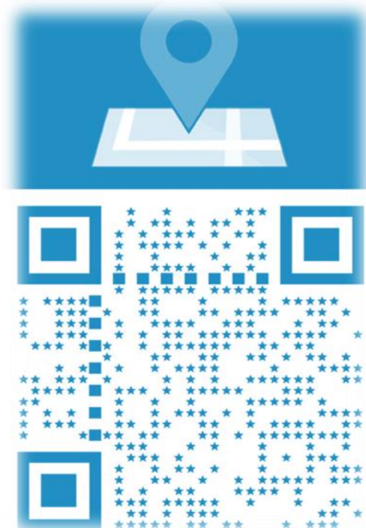
मरयम का चमन या ज़नाना बाग़

मरयम के महल के उत्तर और पच्छिम की जानिब में और जोधाबाई के महल से उत्तरी जानिब ज़नाना(औरतों का) बाग़ था। येह लंबाई में 92 फ़ुट और चौड़ाई में 62 फ़ुट है। पहले येह चार दीवारी से घिरा हुआ था और सिवाए बादशाह या शाहज़ादों और शाहज़ादियों और बेगमात के कोई इस के अंदर नहीं जा सकता था। मालियों की जगह मालनीं इस में चमन आराई करती थीं। अब रास्ता बनाने की ग़र्ज़ से इस की चार दीवारी गिरा दी गई है। इस की दक्खिनी दीवार बीरबल के मकान के वास्ते रास्ता बनाने की ग़र्ज़ से चंद ही मुद्दत हुई कि गिराई गई थी। येह 12 फ़ुट बुलंद और 4 फ़ुट आसार की थी। पच्छिमी दीवार भी मौजूद है जिसके ऊपर हरम मीनार का ज़नाना रास्ता बना है। नीचे चार मेहराब दार बड़े बड़े दर नगीना मस्जिद की जानिब बने हुए हैं।

अकबरी ज़माने में इस बाग़ के अंदर गुलज़ारे इरम का जलवा नज़र आता था। पुख़्ता और मज़बूत रविशों पर सात रंग के फूल इतर पाशी करते थे। ख़्याबानों में हर किस्म के नायाब, नफ़ीस, और लज़ीज़ मेवे शाख़ों में झूमा करते थे। हमेशा साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ पानी अदब से ख़ुशनुमा नालियों में गुल गश्त करता रहता था। जिस वक़्त मौसमे बहार में बादशाह के घर की औरतें अपने अपने अशीरत कदों यानी कमरों से निकल कर बाग़ की रविशों पर ख़िरामां ख़िरामां यानी धीरे धीरे सैर करती फिरती होंगी उस वक़्त किस्म किस्म के फूलों की महक, सुंबुल का बाल बिखेरना, रेहान का चश्म दिल फ़रेब से तकना, मुअत्तर हवा का चलना, मच्छी ताल में रंग बिरंग मछलियों का तैरना, ताइराने ख़ुश इल्हान का नग़मा सराई करना। फ़र्शे ज़मुर्रद का

लहलहाना कैसा अजीबो ग़रीब और दिलचस्प मंज़र पैदा करता होगा बाक़ी मांदा निशानियों में दो बुर्जियां नशिस्त गाह हैं एक पुख़्ता और मज़बूत नाली एक छोटा सा मछली ताल और कुछ पुख़्ता और मज़बूत रविशों के निशान हैं। एक बुर्जी उत्तर की जानिब में चबूतरे के ऊपर बनी है इस से लेकर दूसरी बुर्जी तक जो मछली ताल के किनारे पर है पुख़्ता नाली बनी हुई है। उत्तरी कारखानए आब रसानी (यानी पानी पहुंचाने का कारखाना) से हौज़ में होता हुआ पानी उसी नाली के ज़रीये से मछली ताल में पहुंचता था।

मरयम का चमन या ज़नाना बाग के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



मच्छी ताल

मच्छी ताल 5×4 फ़ुट है। येह सिर्फ़ 2 फ़ुट 11 इंच गहरा है। इस के पूरब और पच्छिम की जानिब में तीन तीन छोटी छोटी सीढ़ियां पानी में उतरने के वास्ते बनी हैं। दक्खिन में इन सीढ़ियों के दर्मियान एक ढलवां झरना लगा है जिस पर माही पुश्त का जाल है। उत्तरी जानिब एक पत्थर में साढे 8 इंच चौड़े और 7 इंच गहरे, सात सात ताक़ नीचे ऊपर खुदे हुए हैं। दर्मियान में एक छोटा सा हश्त यानी आठ पहल हौज़ एक पत्थर में तरशा हुआ नसब है जो साढे 3 × ढाई फ़ुट है, रात के वक़्त उन ताक़ों के अंदर छोटे छोटे मुख़्तलिफ़ रंग के लैम्प रख दिए जाते थे। उनकी रौशनी में झरने से पानी का उतरना, फिर इस पर मुख़्तलिफ़ रंगों का अक्स पड़ना अजीबो ग़रीब लुत्फ़ पैदा करता होगा। तालाब में रंग बिरंग की ख़ूबसूरत मछलियाँ तफ़रीह के तौर पर पाली गई थीं। जिनकी नाक में सोने की नथनियां पहनाई गई थीं।

दक्खिन और पूरब की जानिब में एक मुसक़्क़फ़ हौज़ चौकोर शक्ल का बना है जिस का हर कोना 26 फ़ुट है उसे मरयम का हम्माम कहते हैं। मौसमे गर्मा में यहां बेगमात ग़ुस्ल किया करती थीं। इस के चारों तरफ़ पर्दे की दीवार थी। येह हौज़ 4 फुट गहरा है। छत साढे 12 फ़ुट बुलंद है जो पुख़्ता और मज़बूत सुतूनों पर पाटी गई है। चारों कोनों पर तीन तीन सीढ़ियां पानी में उतरने के वास्ते बनी हैं।

मच्छी ताल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

آسان فرض علوم
مکتبہ دارالسنہ، دہلی
PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
Mob.: +91-9368287284
Rs. 800/-

शिफाख़ाना (यानी अस्पताल)

आँख मिचौली और पच महला और ज़नाना बाग़ के दर्मियान में शिफाख़ाना (यानी अस्पताल) मौजूद है, जो तक़रीबन 127 फ़ुट × 108 फ़ुट है। इस में उत्तर की जानिब मरीज़ों के रहने के वास्ते अलैहिदा अलैहिदा 12 हिस्से बने थे जो हर एक 14 × साढ़े 9 फ़ुट था। जिसमें से अब सिर्फ छः, सात बाक़ी रह गए हैं। बाक़ी मुन्हदिम हो गये (यानी गिर गये) हैं। उनके आगे 11 फ़ुट 2 इंच चौड़ा बरामदा था जिसका कुछ हिस्सा अब तक बाक़ी है। पच्छिमी जानिब कुछ इमारत और थी जिसमें अब सिर्फ कुछ पाख़ाने और बावर्ची ख़ाने बाक़ी रह गए हैं। मौजूदा इमारत की छत मुनक़्क़श खपरैल नुमा है जो तुर्की सुल्ताना के मकान के बरामदे की छत के मुशाबेह (यानी मिस्ल) है। अंदरूनी जानिब दीवारों पर मोटे मोटे चूने की अस्तर कारी थी।

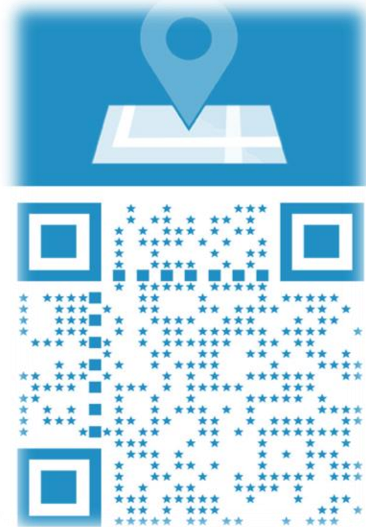
दरवाज़ों और खिड़कियों के चारों तरफ़ लाल और सफ़ैद रंग के नक़्शो निगार ज़ेवर की किस्म के बने हैं। कपड़े टांगने के वास्ते खूंटियों के बजाये हिलाली ख़मदार (यानी चाँद की तरह गोल) तर्शे हुए पत्थर दीवारों में नसब हैं कि जिनमें जानवरों के चेहरे तर्शे हुए हैं। पच्छिमी दीवार में तीन ऐसी खूंटियां अब तक नसब हैं जिनमें घोड़ों के मुँह तर्शे हुए हैं। उत्तरी दीवार में छः हवा दार दरवाज़े लगे हैं। जिनसे पहाड़ के नीचे दूर दूर तक का मंज़र नज़रों के सामने रहता है। गिरी हुई इमारत के बहुत से मुनक़्क़श और सादा पत्थर इहाते में जमा हैं।

एक मशहूर अंग्रेज़ लिखता है : कि येह शिफाख़ाना (यानी अस्पताल) वुसअत और आरामो आसाइश के लिहाज़ से हमारे यहां के शिफ़ा ख़ानों के मुक़ाबला में निहायत तंग और मुख़्तसर है। मगर येह बात

निहायत दिलचस्प है कि ऐसी इमारतें सोलहवीं सदी में भी हिन्दुस्तान में मौजूद थीं।

तअज्जुब है कि येह हिन्दुस्तानी तारीख़ से इतना ना वाक़िफ़ है कि सोलहवीं सदी के शिफाख़ाना (यानी अस्पताल) पर तअज्जुब करता है हालाँकि इस से दो, ढाई सौ साल पहले हिन्दुस्तान में इस किस्म की बहुत सी इमारतें थीं।

शिफ़ा खाना यानी अस्पताल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।







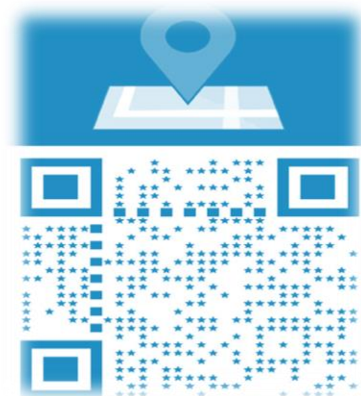


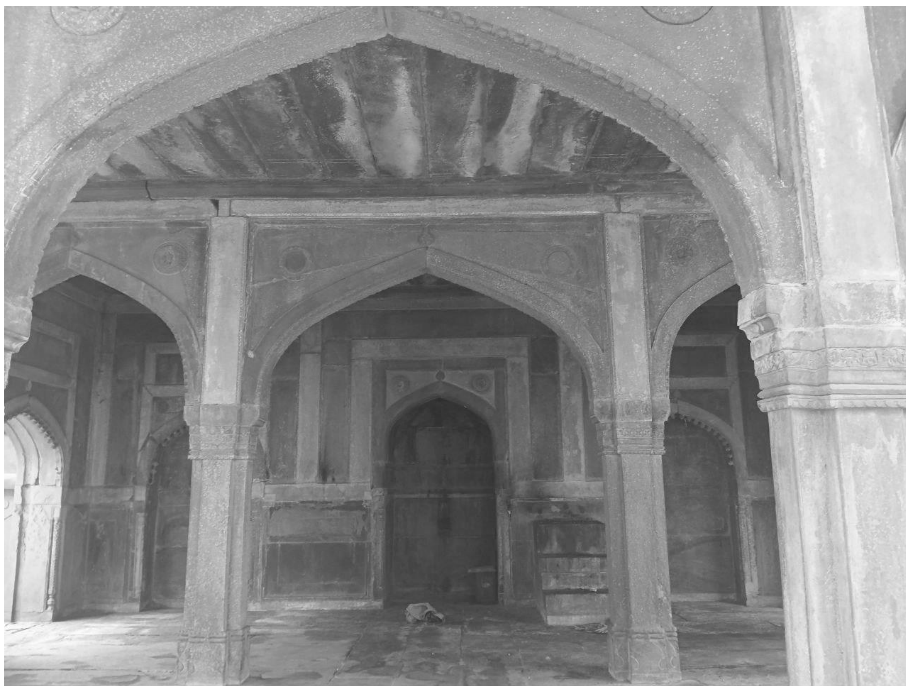
नगीना मस्जिद

मरयम के चमन के पूरब की जानिब और इस से मिली हुई एक छोटी सी ज़नानी (यानी औरतों के लिये) मस्जिद बनी हुई है जो नगीना मस्जिद के नाम से मौसूम है। येह हरम सरा की बेगमात के वास्ते बनाई गई थी और एक चार दीवारी से घिरी थी जो अब खुल गई है जिसकी लंबाई 53 फ़ुट 4 इंच और चौड़ाई 43 फ़ुट था।

मस्जिद में तीन तीन मेहराब दार दर के दो दर्जे हैं, दोनों दर्जों का मजमूई रकबा 26 फ़ुट 9 इंच × 21 फ़ुट 2 इंच है। छत निहायत सुथरे लाल पत्थर के सुतूनों पर पत्थर की पटियों से पटी है। पच्छिमी दीवार में तीन लट्टू नुमा मेहराबों के दर ख़ुश नुमाई के वास्ते बना दिए हैं। उत्तरी जानिब छोटा सा बरामदा और दक्खिनी जानिब कनाती मस्जिद का निशान बना है। आगे पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श का सेहन और दक्खिन व पूरब की जानिब में एक शिकस्ता हम्माम मौजूद है। मस्जिद के नीचे भी दालान बना हुआ है बाहरी जानिब दीवारों में चिड़ियों और कबूतरों के रहने के वास्ते मकान बना दिए हैं। जो अंदर से कुशादा हैं। और ऊपर के सुराख़ चांद के शक्ल के हैं। उन में तोते, फ़ाख़ता, कबूतर अकबर बादशाह के ज़माना से नसलन बाद नस्ल रहते चले आते हैं।

नगीना मस्जिद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





जोधा बाई का महल या जहांगीरी महल

जोधा बाई का महल जो जहांगीरी महल के नाम से भी मौसूम है फ़तेहपुर की आलीशान और ख़ुश बनावट इमारतों में सनअतो रिफ़अत और मज़बूती के लिहाज़ से ख़ास इम्तियाज़ी हैसियत रखता है। और येह ही एक इमारत शाही महल्लात में ऐसी है जो अपनी अस्ली सूरतो हैअत पर अब तक क़ाईम है। येह मरयम के महल के दक्खिन और पच्छिम की जानिब में मौजूद है। जोधा बाई को आम लोग अकबर बादशाह की बेगम समझते हैं हालाँकि अकबर बादशाह की बेगमात में इस ख़िताब की कोई बेगम मौजूद नहीं थी। जोधा बाई दर अस्ल जहांगीर की बेगम थी जिसका एक महल क़रीब क़रीब इसी नमूने का आगरा के क़िला में भी बना हुआ है। अकबर बादशाह ने ग़ालिबन येह महल जहांगीर की जोधा बाई के साथ शादी होने के बाद तामीर कराया था, इस लिहाज़ से येह फ़तेहपुर की सबसे आख़िरी अकबरी इमारत है। अक्सर तारीख लिखने वालों ने रंग महल की जगह इसे सबसे पहली इमारत समझा है येह उनकी सख़्त ग़लती है। क्योंकि उस ज़माने की तमाम तारीख़ों में साफ़ तौर से लिखा है कि सबसे पहला महल जो जहांगीर की माँ के वास्ते तामीर किया गया था हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मकान के पास था। पस येह वो महल किसी तरह नहीं हो सकता। क़ब्ल इस के कि इमारत का हाल बयान किया जाये मुनासिब मालूम होता है कि जोधा बाई की मुख़्तसर सवानेह उमरी तहरीर की जाये।

जोधा बाई का तआरुफ़

येह राजा उदय सिंह राठौर उर्फ़ मौता राजा (जोधपुर का वाली) की बेटी थी, अस्ली नाम **मान मति** था और इल्म व फ़ज़्ल की वजह से जगत

गुसाईं के ख़िताब से मौसूफ़ थी, 994 हिजरी ब मुताबिक़ 1585 ईस्वी में जहांगीर के साथ शादी हुई, अकबर बादशाह उमराए दरबार और बेगमात के साथ राजा के मकान पर गया। वहीं मजलिसे अक़्द मुन्अक़िद हुई और निहायत धूम धाम से दुल्हन को ब्याह कर मकान पर ले आए, उनकी हाज़िर जवाबी की येह रिवायत मशहूर है, एक रात जब कि चांदनी छाई हुई थी नूरजहां बेगम सफ़ैद लिबास ज़ेबे बदन किए हुए जहांगीर के पास बैठी थी। इत्रे जहांगीरी की ख़ुश्बूदार लपटों से जो तमाम दरो दीवार और कपड़ों पर छिड़का हुआ था बादशाह और बेगम दोनों का दिमाग़ मुअत्तर हो रहा था बादशाह ने इसी हालत में जोधा बाई को भी याद फ़रमाया, लौंडियाँ दौड़ीं और थोड़ी ही देर में जोधा बाई भी लाल लिबास ज़ेबे बदन कर के आ मौजूद हुई। और बादशाह के बराबर बैठ गई। बादशाह उनकी तरफ़ मुतावज्जे हुआ, नूरजहां बेगम को रश्क पैदा हुआ। बादशाह की तरफ़ देखकर बोली कि आख़िर जोधा बाई ज़मींदार ही की बेटी है। इस वक़्त कि हर तरफ़ फ़व्वारा नूर कुशादा है। और चाँदनी का उजाला है, ऐसे आलम में लाल लिबास क्या मुनासिबत रखता है? जोधा बाई ने फ़ौरन जवाब दिया: कि मेरा सुहाग क़ाईम है इस वजह से मैंने लाल लिबास पहना है, तुम्हारा सुहाग उठ चुका है (यानी शेर अफ़गन ख़ान पहले शौहर का इंतिक़ाल हो चुका है) इस सोग में तुमने सफ़ैद लिबास पहना है।

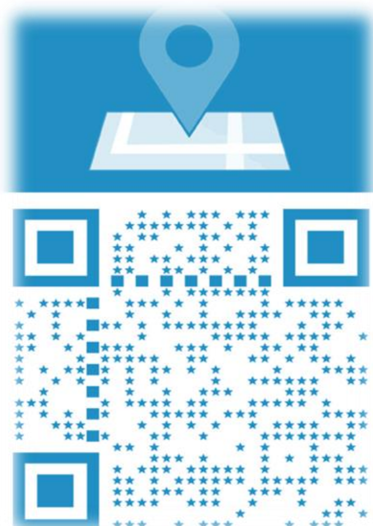
नूर जहां बेगम इस हाज़िर जवाबी से ख़फ़ा हुई और जहांगीर हंस कर चुप हो रहा। 1000 हिजरी ब मुताबिक़ 1591 ईस्वी में जोधा बाई के पेट से शाहजहाँ पैदा हुआ। 30 रबीउस्सानी 1028 हिजरी ब मुताबिक़ 1618 ईस्वी को इंतिक़ाल किया और आगरा में अपने आबाद किए हुए मुहल्ला सुहाग पुरा में दफ़न हुई।

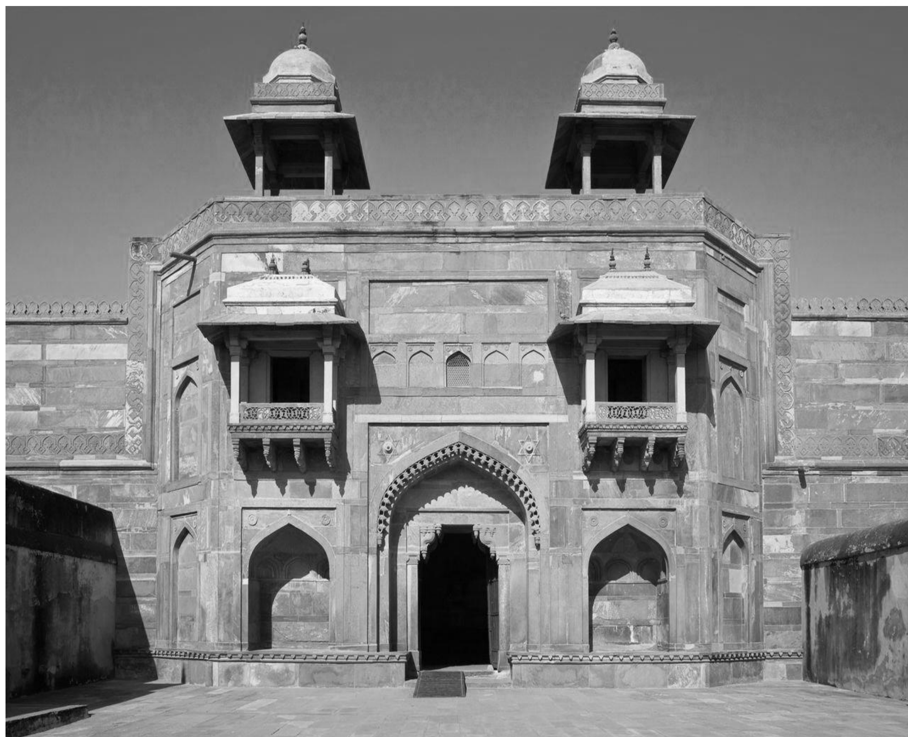
दो तीन साल पहले तक उस के मक़बरे का निशान मौजूद था अब खुद गया लेकिन वो मक़ाम जहां मक़बरा बना था अब भी जोधा बाई के नाम से मशहूर और मौज़ा भोगी पुरा परगना आगरा तहसील में मौजूद है।

येह क़सरे आली (यानी महल) सर ता पा निहायत नफ़ीस लाल पत्थर से बना है, इस का रकबा बाहर से 217×217 फ़ुट है। अंदर चारों तरफ़ सवालो जवाब के तौर पर क़रीब क़रीब एक नमूना की इमारत और दर्मियान में चौकोर सेहन है जिस का हर कोना 183 फ़ुट है। पच्छिमी कोने का दर्मियानी दालान मंदिर के नाम से मौसूम और मुनक़्क़श हिंदुवानी सुतूनों पर क़ाईम है। महल के अंदर मुताअद्दद दालान, कोठरियां, हम्माम, पाख़ाने, नशिस्त गाहें मौजूद हैं। दो मंज़िला कमरों की पुख़्ता और मज़बूत शतरंजी नुमा छतें निहायत ख़ुशनुमा और आला सनअत का नमूना हैं। छत पर चारों गोशों पर ख़ुशनुमा गुंबद और मुतअद्दद शह नशीनें मौजूद हैं।

उत्तरी कोने में महल की दीवार के बाहर एक मुस्ततील यानी लंबी शक्ल का कमरा बुलंद सुतूनों की छत पर बना हुआ है जो हवा महल के नाम से मशहूर और इस्म बा मुसम्मा है यानी जैसा नाम है वैसी इमारत है। इस के दक्खिनी कोने में दरवाज़ा और बक़िया कोनों में निहायत सुबुक और ख़ुशनुमा जालियाँ लगी हुई हैं। इसी जानिब वो ज़नाना (औरतों का) रास्ता मौजूद है जो मरयम के बाग़ और नगीना मस्जिद की दर्मियानी दीवार पर होता हुआ कई चक्कर के साथ हिरन मीनार (हरम मीनार) तक चला गया है।

जोधा बाई के महल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





बीरबल का मकान

जोधा बाई महल के उत्तर और पच्छिम की जानिब में बीरबल का मकान है जिसे ग़लती से अक्सर लोग बीरबल की बेटी का मकान कहते हैं। अकबर नामा से वाज़ेह है कि अकबर बादशाह ने येह मकान बीरबल की फ़रमाईश पर उस के वास्ते तामीर कराया था, जब 990 हिजरी ब मुताबिक़ 1582 ईस्वी में येह बन कर तैयार हुआ। तो बीरबल ने बादशाह से ज़ियाफ़त (दावत) के लिए अर्ज़ किया। बादशाह ने इस इल्तिजा को क़बूल किया और 7 तारीख़ माह बहमन को इस मकान में आया। बीरबल ने निहायत धूम धाम से जशन मुनअक़िद कर के बादशाह की दावत की और बहुत कुछ निसार कर के क़ीमती जवाहिरात पेश किए।

बीरबल का अस्ली नाम महेश दास था। क़ौम की निस्बत बाज़ ब्रह्मण और बाज़ भाट बतलाते हैं। कालपी का रहने वाला था। इब्तिदा में दीगर भाटों या मँगते ब्रह्मणों की तरह कब्त पढ़ पढ़ कर भीक मांगता फिरता था। इस के बाद राम चंद भट्ट की सरकार में नौकर हो गया, जब क़िस्मत ने ज़ोर मारा तो अकबर बादशाह के तख्त नशीन होने के बाद अकबर से मुलाक़ात हो गई, ना मालूम बातों बातों में क्या बात भाई कि चंद ही रोज़ में कुछ से कुछ हो गया और अकबर बादशाह के मिज़ाज में ऐसा दख़ल पैदा किया कि यक जान, दो क़ालिब का मज़मून हो गया।

पहले कब राय फिर राजा बीरबल के ख़िताब से मौसूफ़ हुआ। बादशाह की तरफ़ से अक्सर राजाओं के पास यही सफ़ीर बन कर जाता था। अगर्चे मन्सब दो हज़ारी से ज़्यादा ना था। लेकिन इनायत इस क़दर थी कि हज़ारों लाखों रुपये के जवाहिरात साल बल्कि महीनों में अता हो जाते थे। साहिबुस्सैफ़ वल कलम ख़िताब में दाख़िल था। अकबर उन्हें ऐसा राज़दार

समझता था कि किसी तरह का पर्दा दर्मियान में ना था। यहां तक कि आराम के वक़्त हरम सरा के अंदर भी बुला लेता था।

993 हिजरी ब मुताबिक़ 1584 ईस्वी में मुहिम सवाद व बाजोड़ पर ज़ैन ख़ान को सिपहसालार बना कर भेजा गया था, उन्होंने वहां से मदद के वास्ते लिखा, दरबार में तज्वीज़ दर पेश थी कि कौन अमीर भेजा जाये ? अबुल फ़ज़्ल ने दरख़ास्त की कि फदवी को भेज दिया जाये। बीरबल ना मालूम मस्खरे पन से या इस ख़्याल से कि बादशाह मुझे अपने पास से जुदा ना करेंगे मुफ़्त करम दाश्तन का मज़मून होगा, फ़ौरन बोल उठे कि ग़ुलाम को भेज दिया जाये। चूँकि उनका पैमानए हयात लबरेज़ हो चुका था। बादशाह ने क़ुरआ डाला, मौत के फ़रिश्ते ने उन्हीं का नाम सामने कर दिया, अकबर को अगर्चे एक दम की जुदाई उनकी गवारा ना थी, मगर ना मालूम किस तरह अपने ख़ास्सा का तोप ख़ाना साथ कर के निहायत मुहब्बत से रुख़स्त किया और बाज़ू पर हाथ रख कर कहा कि बीरबल जल्द आना। ग़र्ज़ बेचारे आफ़त के मारे रवाना हुए, आगे दास्तान लंबी है और जगह कम है। मुख़्तसर तौर से येह समझ लीजिए कि लाडले राजा महल्लों के शेर थे, मर्दे शम्शीर ना थे। इन की ख़ुद पसंदियों ने ना सिर्फ मुहिम ही को बिगाड़ दिया बल्कि ख़ुद भी ला पता हो गए। अकबर बादशाह को ऐसा रंज हुआ कि दो रात दिन खाना ना खाया, मुद्दतों उन की या उनकी लाश की तलाश रही मगर कुछ पता ना चला, ग़र्ज़ कि यहां भी मस्ख़रापन से ना चूके और चलते चलाते एक फुलझड़ी छोड़ गए।

जिस तरह नौ रतन अकबरी में क़ुरबत और मुसाहिबत की हैसियत से कोई आलीजाह अमीर और जलीलुल क़दर सरदार बीरबल के रुत्बे को नहीं पहुंचता इसी तरह क़ुर्ब मकानी, बदीउल मिसाल सन्नाई और ख़ूबसूरती में

किसी अमीर का क़सरे आली यानी महल इस बेनज़ीर मकान का मुक़ाबला नहीं कर सकता, ना मालूम संग तराशों ने कैसे जादूई तौर पर पत्थरों में गुल तराशी की है ? अजीब तिलस्माती मकान है जिसकी मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बारीक बेलें, नफ़ीस दरख़्त, ख़ूबसूरत गुलदस्ते, फूल पत्ते और तरह तरह के नक़्शो निगार, बड़े बड़े सय्याह और बा कमाल कारीगरों को महवे हैरत बनाते हैं और इस के ख़ूबसूरत पत्थरों को देखते देखते आंखें पथरा जाती हैं।

फर्गुसन की इस राय में किसी को कलाम नहीं कि बीरबील और तुर्की सुल्ताना का मकान सबसे ज़्यादा बेश क़ीमत और सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और नीज़ अकबर की तमाम इमारतों में ज़्यादा सनअत वाली इमारतें हैं। येह अगर्चे मुख़्तसर ज़रूर हैं लेकिन कहीं ऐसे उम्दा नक़्शो निगार और तसावीर देखना ना मुम्किन है कि जहां कोई जगह ऐसी नहीं कि जहां कुछ ना कुछ नक़्शो निगार मौजूद ना हों या भद्दे तौर से खिंचे हों।

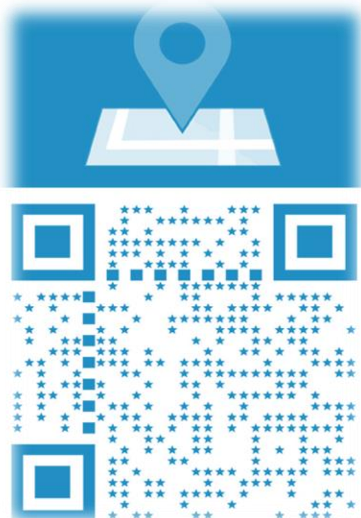
येह मकान 71x71 फ़ुट पुख़्ता और मज़बूत चबूतरे के दर्मियान में जो 3 फ़ुट बुलंद बना हुआ है इस में चार बराबर के चौकोर कमरे हैं जिनका अंदर से हर कोने 15 फ़ुट 8 इंच है, दीवारों का आसार 5 फ़ुट का है, हर कमरे में चार चार दरवाज़े हैं दक्खिन और पूरब की जानिब और उत्तर व पच्छिम की जानिब के कमरों के सामने एक एक राओटी नुमा इमारत और बनी है जो तर्तीब वार 21x8 फ़ुट और 19 फ़ुट 7 इंच x 8 फ़ुट है उनमें एक एक दरवाज़ा सेहन के जानिब और एक एक क़रीब के कमरे की जानिब लगा है चारों कमरों की छत पत्थर की निहायत ख़ूबसूरत मुनक़्क़श पटियों से पटी है कमरों के दरवाज़ों की बग़ल में दो दो ख़ूबसूरत ताक़ बने हैं।

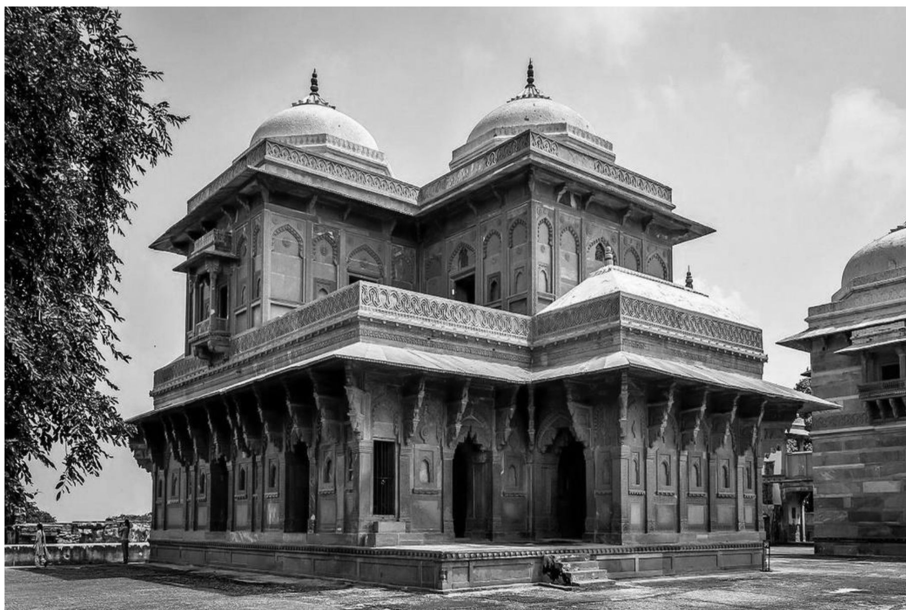
छत के ऊपर उत्तर व पच्छिम और दक्खिन व पूरब की जानिब में नीचे के कमरों के बराबर दो कमरे बने हैं जिनकी छत लदाओ की गुंबद दार

है और इस में 16 फाँकें क़ाईम कर के ख़ूबसूरत बना दिया है चारों गोशों में अलमारियां बड़े ताक़ और मेहराब दार ताक़ बने हैं। कमरों के ऊपर ख़ूबसूरत गुंबद मुज़य्यन हैं । उत्तर व पच्छिम जानिब के कमरे में एक जाली दार खिड़की उत्तरी जानिब लगी है, बाक़ी तीनों तरफ़, एक एक दरवाज़ा और उस के ऊपर जालीदार खिड़कियाँ लगी हैं । पच्छिमी दरवाज़े के आगे तोड़ों की छत पर एक शह नशीन बनी है जिसमें जालीदार कटहरा लगा है । मशरिक़ी दरवाज़े के आगे सेहन और उसी में ज़ीना है, दूसरे कमरे में दरवाज़े के सामने शह नशीन और पच्छिमी दरवाज़ा के आगे सेहन और उसी में दूसरा ज़ीना है उत्तर व पच्छिम की जानिब में सेहन के किनारे पर एक तीन दरी 20x17 फ़ुट बनी है । जिसकी छत राओटी नुमा पटी है । दक्खिनी जानिब एक पुख़्ता दीवार थी जिस के दर्मियान में सदर दरवाज़ा अस्तबल की तरफ़ बना था, येह दीवार अब मुन्हदिम हो गई (यानी गिर गई) । जैसा कि ऊपर लिखा गया, येह कुल इमारत निहायत मज़बूत और नीचे से ऊपर तक मुख्तलिफ़ क़िस्म के नक़्शो निगार से मुरस्सा है इस के छज्जे में जो तोड़े लगे हैं वो निहायत ख़ूबसूरत और ख़ास बनावट के हैं । कुल इमारत में छोटे से बड़े तक जिस क़दर पत्थर लगे हैं सब मुनक़्क़श हैं और कोई जगह सादा नहीं है ।

इस इमारत के उत्तरी सेहन के नीचे अस्तबल का पुख़्ता और मज़बूत दालान बना है जिसमें घोड़ों के बाँधने के वास्ते मौर्य (एक किस्म के सुराख़ दार तर्शे हुए पत्थर) और घास डालने के वास्ते दीवार में अलमारियां (बड़े ताक़) बनी हैं ।

बीरबल के मकान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



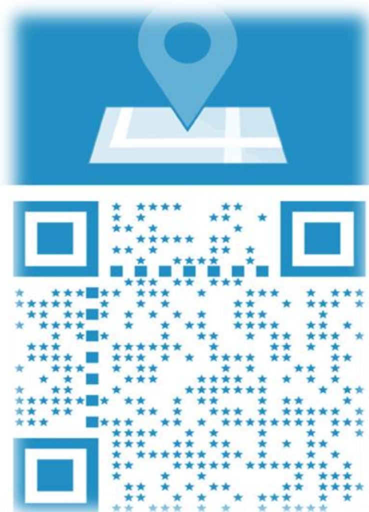


घोड़ों का अस्तबल

अकबर बादशाह को घोड़ों का बहुत शौक़ था। निहायत उम्दा उम्दा अरबी, तुर्की, ईरानी वग़ैरा घोड़े जमा किए थे। हमेशा 12000 घोड़े शाही अस्तबल में जमा रहते थे, अक्सर इस से ज़्यादा हो जाते थे मगर कम ना होने पाते थे, आला दर्जा के ख़ास ख़ास घोड़ों के वास्ते महल्लाते शाही में येह संगीन अस्तबल बनाया गया था जो बीरबल के मकान से मिला हुआ दक्खिन की जानिब मौजूद है, इस के पूरब व पच्छिम और दक्खिन में 16 फ़ुट 10 इंच चौड़े पुख़्ता और मज़बूत दालान बने हैं जिनके गोशों में एक एक कोठरी और दर्मियान में 290 x 115 फ़ुट सेहन छूटा हुआ है जिसमें पुख़्ता फ़र्श और दर्मियान में एक पुख़्ता नाली घोड़ों के पानी पिलाने के वास्ते बनी है।

पूर्वी और पच्छिमी दालानों में 23-23 और दक्खिनी दालान में 7 दर हैं। हर दर के सामने दो दो घोड़ों के थान हैं, हर घोड़े के वास्ते दीवार में 2 फ़ुट 5 इंच की बुलंदी पर घास रखने के वास्ते अलैहिदा अलैहिदा अलमारी बनी है। खूँटों की जगह हर थान पर दो मौर्य पत्थर के दीवार में नसब हैं। सदर दरवाज़ा जुनूब (यानी दक्खिन) व मशरिक़ी यानी पूरब गोशे में है। एक छोटा दरवाज़ा मग़रिबी यानी पच्छिमी दालान में और दो तीन छोटे छोटे दरवाज़े पूर्वी दालान में शुतुर यानी ऊँट ख़ाना में खुले हुए हैं।

घोड़ों का अस्तबल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



एक तरफ घोड़ों का अस्तबल था और दूसरी तरफ ऊँटों का

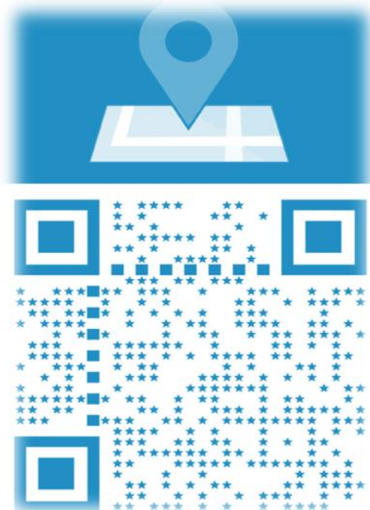


शुतुर ख़ाना (ऊँट ख़ाना)

जोधा बाई के महल की पच्छिमी और घोड़ों के अस्तबल की पूर्वी दीवार से मिला हुआ शुतुर ख़ाना यानी ऊंट ख़ाना बना है। इस की इमारत उत्तरी व दक्खिनी 175 फ़ुट और पूर्वी व पच्छिमी 24 फ़ुट है। इस की छत 60 पुख़्ता और मज़बूत और बुलंद सुतूनों पर क़ाईम है जो इस तर्तीब से नसब हैं कि 15 जुदागाना तीन दरियां इमारत में बन गई हैं। छत चार चार सुतूनों के दर्मियान में पत्थर की पटियों से पटी है। हर दर्जा की छत में चार चार सुराख़ रौशनी के वास्ते बने हुए हैं।

दक्खिन की जानिब छोटा सा सेहन है जिसके किनारे पर एक कोठरी और एक यक दर्रा बना है। मशरिक़ (यानी पूरब) में घोड़ों का अस्तबल और शुतुर (ऊंट) ख़ाना का मुशतर्का यानी दोनों का मिला हुआ फाटक है।

ऊँट खाना के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



एक तरफ घोड़ों का अस्तबल था और दूसरी तरफ ऊँटों का



استاد کو تدریس کے اعلیٰ منصب کی جانب لے جانے والی ایک نمایاں تحریر
جس میں تدریس کے جدید دور میں جدید و قدیم طریقوں کے ساتھ ساتھ
تدریس میں نکھار پیدا کرنے والی چیزوں کو بھی بیان کیا گیا ہے۔

تدریس کے 26 طریقے

مصنف
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

اس کتاب
میں چھ ابواب ہیں جو درج ذیل ہیں:
پہلا باب: تدریس کے نکات
دوسرا باب: تدریس کے 26 طریقے
تیسرا باب: درجے کی ترقی کے فارمولے
چوتھا باب: طلبہ کے درمیان کئے جانے والے 19 بیان
پانچواں باب: جسمانی و ذہنی نشو و نما کے فارمولے
چھٹا باب: تاریخ ساز شخصیت بننے کے فارمولے

مکتبہ دار السنہ، دہلی

تدریس کے 26 طریقے

PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
Mob.: +91-9368287284, 8808693818

Rs. 600/-

दफ़्तर ख़ाना

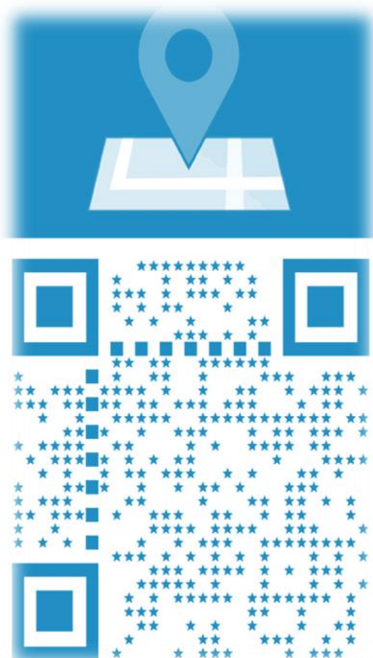
खास महल के जुनूब (यानी दक्खिन) की तरफ़ जो पुख़्ता और मज़बूत इमारत है वो दफ़्तर ख़ाना के नाम से मौसूम है। इस के वसीअ सेहन में हो कर शाही महल्लात की पुख़्ता सड़क निकल गई है। चंद दिन पहले तक इस में डाक बंगला क़ाईम था, हाल ही में डाक बंगला की नई इमारत तामीर होने पर इस को अस्ली हालत में कर दिया गया है। इस में एक वसीअ कमरा और बरामदा है जो 3 फ़ुट बुलंद चबूतरे पर बना है। कमरा का रकबा 37 x 20 फ़ुट है। इस में 3-3 दरवाज़े शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में और एक एक मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में है। दक्खिनी जानिब के दर्मियानी दरवाज़े के आगे एक शह नशीन बनी है। अंदर बहुत सी छोटी बड़ी अलमारियां और ताक़ बने हैं। छत पुख़्ता और मज़बूत लदाओ नुमा है। कमरे के शुमाल (यानी उत्तर) व मशरिक़ (यानी पूरब) और मग़रिब (यानी पच्छिम) में बरामदा है। जो पूर्वी व पच्छिमी 81 फ़ुट और शुमालन (यानी उत्तरी) जुनुबन (यानी दक्खिनी) 46 फ़ुट है। इस में दो हरे पुख़्ता और मज़बूत बुलंद सुतून नसब हैं। छत पत्थर की पटियों से पटी है। मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में चार चार और शुमाल (यानी उत्तर) में 7 दर हैं। कमरा और बरामदा की छत के क़रीब अक्सर जगह पत्थर के बड़े बड़े आंकड़े लगे हैं जो बत्तख़ के मुँह के मुशाबेह यानी तरह तराशे गए हैं।

इस इमारत के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब 16 दर का और शुमाल (यानी उत्तर) में खास महल की ख्वाबगाह (यानी सोने की जगह) के नीचे 23 दर का पुख़्ता और मज़बूत दालान और बना है। कमरा और बरामदा के आगे निहायत वसीअ और कुशादा सेहन है जिस से ख़्याल होता

है कि साबिक़ में यहां कुछ और भी इमारत होगी। क्या अजब है कि मकतब ख़ाना की इमारत जिस का ज़िक्र मुंतख़बुत्तवारीख में है उसी जगह हो या वो येह ही दफ़्तर ख़ाना की मौजूदा इमारत हो। मकतब ख़ाना से येह ना समझिए कि वो कोई लड़कों के पढ़ने का मकतब था बल्कि येह इस इमारत का नाम था जिसमें तर्जमा का दफ़्तर था।

अकबर बादशाह अगर्चे बे इल्म था मगर इल्म का शौकीन और उलूम व फ़नून की जानिब रगबत और क़दर करने वाला था, मशहूर किताबों में शायद ही कोई ऐसी किताब होगी जो उस के सामने ना पढ़ी गई हो। तर्जमा का ऐसा वसीअ काम था कि हिन्दुस्तान में किसी बादशाह के ज़माने में ना था। मुख़्तलिफ़ ज़बान जानने वाले बड़ी बड़ी तनख्वाहों पर मुलाज़िम थे संस्कृत, यूनानी, अरबी की किताबें फ़ारसी और भी भाषा (language) में तर्जमा की जाती थीं। जहां येह सब साहिबे ज़बान बैठते थे इस मक़ाम का नाम मकतब ख़ाना था। मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी, शैख़ फ़ैज़ी, मुकम्मल ख़ान गुजराती, मुल्ला शेरी, किशन जोतिशी, गंगा धर, महेश, महानंद ख़ास ख़ास और आला दर्जा के मुतर्जिम यानी तर्जमा करने वाले थे। बहुत से ख़ुश नवीस (यानी अच्छी राइटिंग वाले) और मुसव्विर (तस्वीर बनाने वाले) भी इस दफ़्तर में मुलाज़िम थे कि किताबों को तस्वीर के साथ लिखा करते थे।

दफ्तर खाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

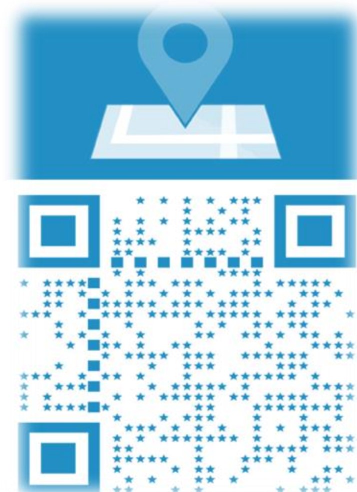


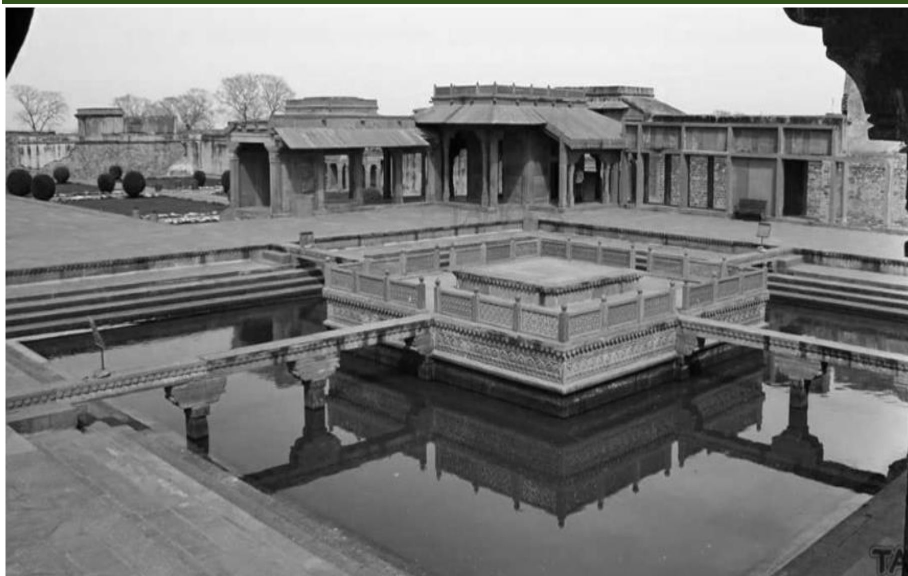


सुख ताल (अनूप तालाब)

दीवाने आम और महल्लात की पुख़्ता सड़क के जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब हकीमों के मकान के पास एक पुख़्ता तालाब मौजूद है जो **सुख ताल** के नाम से मौसूम है, येह 100 फ़ुट लंबा और 77 फ़ुट चौड़ा और 21 फ़ुट गहरा है। शुमाली यानी उत्तरी जानिब तालाब में उतरने के वास्ते सीढ़ियां बनी हैं। बाक़ी तीनों तरफ़ 6 फ़ुट चौड़ा पुख़्ता चबूतरा बना है जिसके किनारे पर पुख़्ता दीवारें आदमी के क़द से बुलंद बनी हैं। मशरिक़ी यानी पूर्वी दीवार में एक छोटा सा कुँआं बना है जिसमें उतरने के वास्ते पत्थर के टुकड़े लगे हैं। शाही महल्लात से एक पुख़्ता नाली के ज़रिये जो अब तक मौजूद है इस कुँवें में पानी आता था और इस के अंदर हो कर तालाब में पहुंचता था। अक्सर लोग जो तारीख़ से ना वाक़िफ़ हैं अनूप तलाओ की बख्शिश को इस तालाब से मंसूब कर के बयान करते हैं कि इसी मुनासिबत से येह सिक्का ताल से **सुख ताल** मशहूर हो गया है। लेकिन येह बिल्कुल ग़लत है।

सुख ताल (अनूप तालाब) के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहँच सकते हैं ।







हकीम का मकान

दीवाने आम की दक्खिनी दीवार से सुख ताल तक जो इमारत बाक़ी है वो हकीम के मकान के नाम से मशहूर है। आज सही तौर से कोई नहीं बता सकता कि येह किस हकीम के क़सरे आली यानी महल के निशानात हैं। बाक़ी मांदा इमारत के देखने से मालूम होता है कि इस जगह कई महल थे ग़ालिबन मीर फ़तहुल्लाह शीराज़ी, हकीम अबुल फ़तह गिलानी, हकीम हम्माम, हकीम हसन सब के महल इसी जगह थे।

इस तमाम इमारत में बयान के क़ाबिल और देखने के काबिल सिर्फ एक बारह दरी या दालान बाक़ी रह गया है। जो दक्खिनी जानिब एक निहायत बुलंद मक़ाम पर दो मंज़िला के ऊपर बना हुआ है। येह पूरब व पच्छिम 77 फ़ुट और शुमाल (यानी उत्तर) दक्खिन 21 फ़ुट है। आगे छज्जा लगा है जिसके ऊपर जालीदार कटहरा लगा हुआ है। दक्खिनी जानिब छः हवा दार दर खुले हुए हैं। मग़रिबी यानी पच्छिम की जानिब उस की छत पर चढ़ने के वास्ते ज़ीना बना है। छत के ऊपर यानी तीन मंज़िला पर एक कमरा 30 x 21 फ़ुट बना है। इस में तीन तीन दरवाज़े शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में और चार मशरिक़ (यानी पूरब) में खुले हुए हैं। मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार में चार दरवाज़ों के निशान बने हैं। कमरे की छत और आगे का बरामदा मुन्हदिम हो गया (यानी गिर गया) है इस में नफ़ीस चूने की अस्तर कारी पर बहुत ख़ूबसूरत रंगीन नक़्शो निगार बने हुए थे। जिनकी कुछ यादगार अब तक मौजूद है। येह मक़ाम निहायत बुलंद पुर फ़िज़ा और दिलचस्प है यहां से तमाम फ़तेहपुर की इमारात ख़ुसूसन जुनूबी यानी दक्खिनी हिस्से का मंज़र दूर दूर तक नज़र के सामने हो जाता है। नीचे ऊपर और भी बहुत से मकान बने हुए हैं मगर उनकी हालत कुछ ऐसी बदल गई है

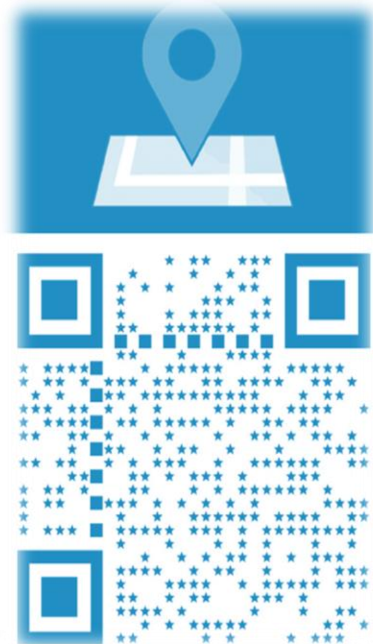
कि उनकी पैमाइश या इमारत का कुछ हाल तहरीर करना यानी लिखना फ़ुज़ूल मालूम होता है। महल के अंदर एक जगह ज़नाना यानी औरतों का हम्माम यानी गुस्ल खाना बना हुआ है जिसमें कई ग़ुस्ल ख़ाने मौजूद हैं उनके अंदर अब तक अच्छे अच्छे नक़्शो निगार बाक़ी हैं। क़ुर्बो जवार यानी आस पास में और भी कई हम्मामों के निशान हैं। उनमें एक वसीअ हम्माम किसी क़दर अच्छी हालत में है जो मशरिक़ (यानी पूरब) की तरफ़ मौजूद है इस में कई दर्जे और ग़ुस्ल ख़ाने हैं। अगर्चे येह शिकस्ता हालत में है मगर उस के बाक़ी मांदा ख़ूबसूरत नक़्शो निगार उस की गुज़श्ता नफ़ासत और ख़ूबसूरती का मंज़र आँखों के सामने पेश कर देते हैं। जुनूबी यानी दक्खिनी हिस्से के एक ग़ुस्ल ख़ाने में पुख़्ता और मज़बूत फ़र्श का एक टुकड़ा किसी तरह बाक़ी रह गया है वो देखने के काबिल है, लाल पत्थर में किसी दूसरे पत्थर की लहरिया दार पच्चेकारी निहायत ख़ुशनुमाई और सनअत से की गई थी जो अब बाक़ी नहीं है। दर्मियानी दर्जा में एक हश्त यानी आठ पहल हौज़ और ग़ुस्ल ख़ानों में नल नालियां अब तक मौजूद हैं मगर सब शिकस्ता हालत में हैं।

हर घड़ी मुन्क़लिब ज़माना है
येह ही दुनिया का कारख़ाना है

जौहरी बाज़ार

दीवाने आम के मशरिक़ी यानी पूर्वी फाटक से आगरा दरवाज़े तक सड़क के दोनों तरफ़ पुख़्ता और मज़बूत बाज़ार था। जो जौहरी बाज़ार के नाम से मशहूर था। दर्मियान में इस मक़ाम पर जहां नौबत ख़ाने की इमारत है चाँदनी चौक था। इस वक़्त तक गिरी हुई दूकानों के निशान मौजूद हैं। जिससे पता चलता है कि तमाम बाज़ार की दुकानों पर चूने की अस्तर कारी पर रंगीन गुल कारी की गई थी। दीवाने आम की पूर्वी दीवार से मिली हुई दक्खिन व पूरब की जानिब में कुछ इमारत और थीं जिसका कुछ हिस्सा अब तक बाक़ी है। इस की छत लदाओ की है। क्या तअज्जुब है कि बाज़ार के किनारे पर येह एक कारवां सराये मुअज़्ज़ज़ सौदागरों के क़ियाम यानी ठहरने के वास्ते तामीर की गई हो।

जौहरी बाज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



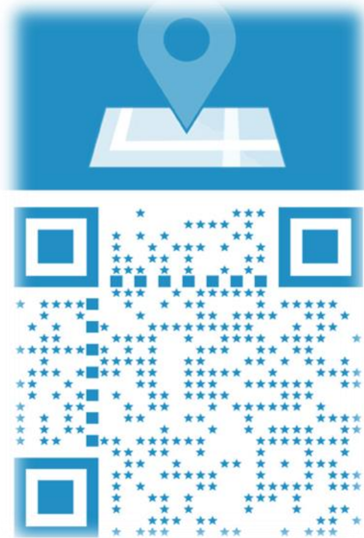


شارق الفلاح
شرح نور الایضاح
Shariq ul Falah
Sharah Noorul Izah
کلیات اقبال
جیلانی بکڈپو
JILANI BOOK DEPOT
1229, CHURI WALAN, JAMA MASJID, DELHI-110006
+919350046577,9212346577,8700033647
jilani.book.depot@gmail.com,jilanigraphic@gmail.com
jilanibks@gmail.com Website: www.jilanibooks.com
JILANI BOOK DEPOT +91 9350046577,9871209285
For Online Shop Visit: amazon
jilanibooks ₹:850/-

ख़ज़ाना

दीवाने आम से थोड़े ही फ़ासिले पर इसी जौहरी बाज़ार की सड़क के जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब ख़ज़ाना की इमारत है। इस का बड़ा हिस्सा मुन्हदिम यानी गिर चुका है दक्खिनी जानिब तीन दरवाज़े का एक कमरा और इस के आगे बरामदा बना है जिसमें पाँच दर हैं। कमरे की दोनों बग़लों में एक एक सींची बनी है। पस येह ही इमारत बाक़ी है लेकिन इस की भी छत अक्सर जगह से गिर गई है। मशरिक़ (यानी पूरब) और मग़रिब (यानी पच्छिम) में दालान दर दालान बने थे जिनकी छत राओटी नुमा पटी थी। अब मशरिक़ी यानी पूर्वी दालान के सिर्फ पेशानी और मग़रिबी यानी पच्छिमी दालान के पुश्त यानी पीछे की दीवार बाक़ी रह गई है। कमरे में एक दरवाज़ा जुनूबी यानी दक्खिनी दीवार में था जिसके आगे शह नशीन बनी थी जो गिर गई, मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब की सींची के अंदर एक कोठरी बनी है जिसमें गुज़श्ता नक़्शो निगार का कुछ नमूना अब तक बाक़ी है। मिन जुमला उस के मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार में एक ताक़ के अंदर निहायत नफ़ीस और ख़ूबसूरत गुलदस्ता बना हुआ है जो देखने के काबिल है। बयान किया जाता है कि फ़तेहपुर के सरकारी शिफाख़ाना (यानी अस्पताल) में इसी इमारत का पत्थर लगाया गया था।

खज़ाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



आँख मिचौली के सामने लगे हुए पत्थर की तख्ती में लिखा हुआ है कि तीन कमरों वाला येह भवन जो गलती से आँख मिचौली कहा जाता है हकीकत में सोने चाँदी के सिक्कों का खज़ाना था।



टकसाल

सड़क के शुमाली यानी उत्तरी जानिब ख़ज़ाना के सामने टकसाल की वसीअ इमारत है जिसका रकबा बाहर से 330x374 फ़ुट है। इस के चारों तरफ़ 45-45 फ़ुट चौड़े दालान दर दालान बने थे। जिनके दर मेहराब दार और छत अलैहिदा अलैहिदा लदाओ की गुंबद नुमा है, मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में 14,14 और शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में13,13 दर हैं, कुल इमारत में मोटे मोटे चूने की अस्तर कारी है, छत अक्सर जगह से गिर गई है, दर्मियान में भी कुछ इमारत के आसार यानी निशान हैं, इस इमारत का इफ़्तिताह यानी शुरुआत 985 हिजरी ब मुताबिक़ 1577 ईस्वी में हुआ था, टकसाल के चंद सिक्कों के नमूने लिखे जाते हैं :

(1)--- रुपया: वज़न साढ़े 11 माशा, इस में एक तरफ़ **'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'** हाशिया पर:

'ब सिदके अबू बकर, **ब अदल उमर,**

ब हयाए उस्मान, **ब इल्मे अली'**

और दूसरी तरफ़

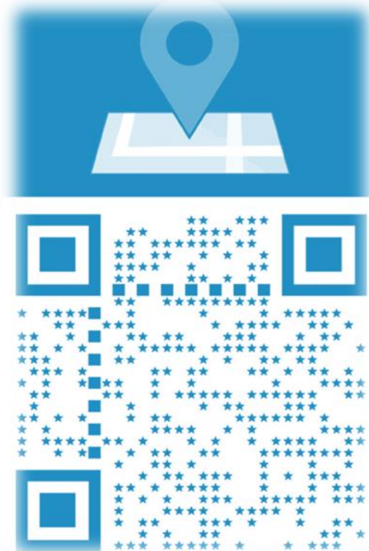
"जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ग़ाज़ी ख़ल्लदल्लाहु मुल्कहु ज़रबे दारुस्सुरूर, फ़तेहपुर 989"

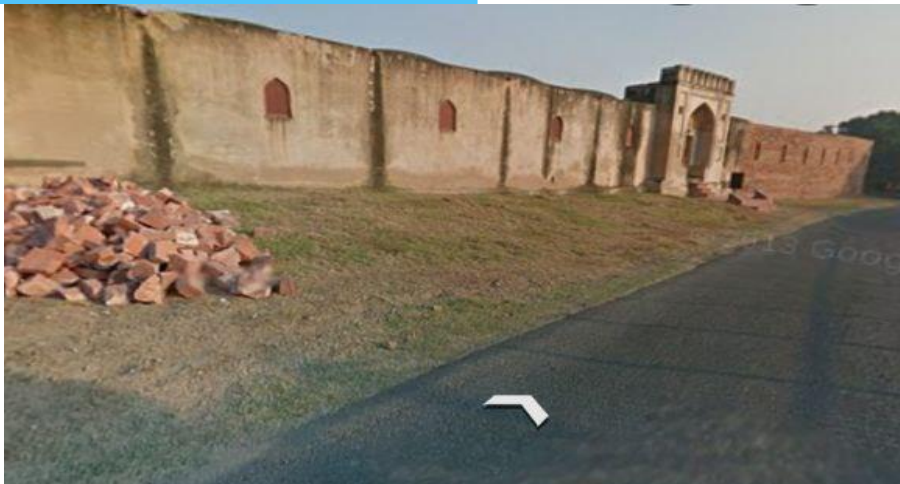
(2)---रुपया: वज़न साढ़े 11 माशा, नक़्श मुताबिक़ नंबर 1 हाशिया बुरीदा 992

(3)---पैसा: वज़न एक तौला 8 माशा 7 सुर्ख़ । एक तरफ़ दारुज़्ज़र्ब फ़तेहपुर । दूसरी तरफ़ मोहरे इलाही 48

टकसाल की इमारत से मिला हुआ मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब डाक बंगला तामीर किया गया है ।

टकसाल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

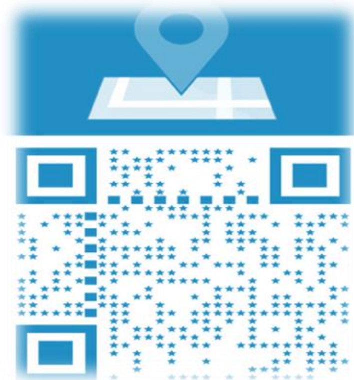




नौबत ख़ाना या नक़्क़ार ख़ाना

टकसाल और ख़ज़ाना के आगे नक्कार ख़ाने की इमारत है। येह दर अस्ल जौहरी बाज़ार का **चाँदनी चौक** था जिसमें चारों तरफ़ दुकानों के निशान अब तक मौजूद हैं। चूँकि इसके मशरिक़ी यानी पूर्वी दरवाज़ों पर शाही नक़्क़ार ख़ाना था और नौबत बजा करती थी। इस वजह से येह नौबत ख़ाना और नक्कार ख़ाने के नाम से मौसूम हो गई। शुमाल (यानी उत्तर) और जुनूब (यानी दक्खिन) और मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक एक और मशरिक़ (यानी पूरब) में बराबर बराबर तीन आलीशान संगीन दरवाज़े हैं। दर्मियान में 115 फ़ुट चौकोर चौक है जिसके इर्द गिर्द चार दीवारी थी। अंदर चारों तरफ़ दुकानें बनी थीं। पूर्वी दरवाज़ों की छत पर 60×22 फ़ुट बारह दरी बनी है जिसमें शाही नक्कार ख़ाना था। इस बारह दरी में 18 पिलर हैं जो इस तर्तीब से गड़े हैं कि बारह दरी दो दर्जों में मुन्क़सिम हो गई है। पूर्वी जानिब तीन दरवाज़े लगे हैं। छत के ऊपर पूर्वी जानिब पर दो गुंबद दार बुर्जियाँ बनी हैं। मशरिक़ी यानी पूर्वी दरवाज़ों के क़रीब दक्खिन व पूरब में एक चौकोर चबूतरे पर जिसका हर कोना 15 फ़ुट है एक बुर्ज बना हुआ है जिससे आगे थोड़े फ़ासिले पर एक छोटी सी कनाती मस्जिद बनी है।

नौबत खाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।






شارق الفلاح
شرح نور الایضاح
جیلانی بکڈپو
رفیق التدریس
مکتبہ دار السنہ دہلی
تدریس کے
26 طریقے
مکتبہ دار السنہ دہلی
نصاب مسائل نماز
(سوال جوابا)
خطبات مصطفائی
خطبات شفیقی
القول الأظهر
شرح
الفقه الأكبر
مکتبہ دار السنہ دہلی
تنظیمی
نصاب و بیانات
مکتبہ دار السنہ دہلی

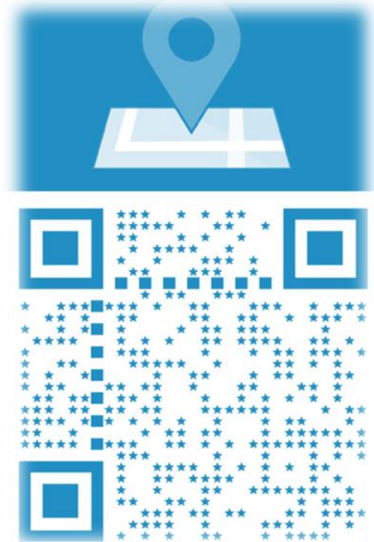
बारह दरी

नक़्क़ार ख़ाना से आगरा दरवाज़े तक बहुत सी इमारत मुन्हदिम (यानी गिरी) पड़ी हैं, जगह जगह पर ईंट चूने के अंबार, हम्मामों के दमदमे, दीवारों के आसार टूटी फूटी शह नशीनें दिखाई देती हैं। उनमें एक संगीन बारह दरी अच्छी हालत में है जो नक़्क़ार ख़ाना के सामने शुमाल (यानी उत्तर) व मशरिक़ी यानी पूर्वी गोशे में मौजूद है। येह बहुत बुलंद और पुर फ़िज़ा जगह पर बनी है जहां से दूर दूर का मंज़र नज़रों के सामने रहता है। इस में एक कमरा और इस के चारों तरफ़ बरामदा बना है। कमरा का रकबा 32 × 25 फ़ुट है, शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में 3-3 और मशरिक़ (यानी पूरब) और मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक एक दरवाज़ा लगा है। छत संगीन लदाओ की है। बरामदा पूरब व पच्छिम 56 फ़ुट और उत्तर व दक्खिन 48 फ़ुट है, इस की छत संगीन खपरैल नुमा है जो मुनक़्क़श पिलरों पर क़ाईम है। कमरे के बाहरी दीवारों पर जो बरामदा में हैं लाल पत्थर के अंदर सफ़ैद पत्थर की जाली दार पच्चेकारी की गई है।

बारह दरी के क़ुर्बो जवार यानी आस पास में कई हम्माम शिकस्ता यानी टूटे हालत में मौजूद हैं। उत्तरी जानिब पहाड़ के नीचे एक बड़ी बाउली टूटी हुई मौजूद है। जिसमें से ग़ालिबन इस जानिब के मकानात में पानी पहुंचता था, सबसे आख़िर में आगरा दरवाज़े के क़रीब एक आलीशान दरवाज़ा और इसी के सामने उत्तरी जानिब पहाड़ के किनारे पर एक पुर फ़िज़ा नशिस्त गाह यानी बैठने की जगह बाक़ी है। नशिस्त गाह में उत्तरी जानिब तीन दरवाज़े हैं और गुज़श्ता नक़्शो निगार के कुछ आसार यानी निशान भी अब तक नुमायां हैं। दरवाज़े की छत लदाओ की है जिसके दर्मियान में एक

बहुत बड़ा और ख़ूबसूरत फूल मुज़य्यन है जो देखने के काबिल है। येह बाक़ी आसार ख़ान ख़ानां मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम ख़ान की आलीशान हवेली के बताए जाते हैं। मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम ख़ान अकबरी और जहांगीरी ज़माने के सात हज़ार लश्कर के सिपह सालार के मंसब दार थे जिनकी इमारत और दरिया दिली और बड़े कारनामे हिन्दुस्तान में बहुत मशहूर हैं।

बारह दरी के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।

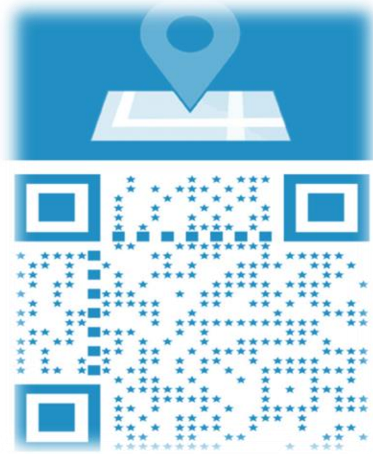


हम्माम मुहम्मद बाक़िर

दीवाने आम की शुमाली यानी उत्तरी दीवार और टकसाल की मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार के दर्मियान में किसी आलीशान इमारत के आसार हैं जिसे ग़लती से अक्सर तारीख लिखने वालों ने इबादत ख़ाने के आसार बताते हैं। इस के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब सीकरी खाटी से मिला हुआ येह हम्माम मौजूद है। इस के कत्बे से जो अब हम्माम के शुमाल (यानी उत्तर) व मग़रिबी यानी पच्छिमी गोशे में एक चबूतरा या क़ब्र पर रखा हुआ है और जो पहले इस इमारत पर नसब था ज़ाहिर होता है कि येह हम्माम मुहम्मद बाक़िर का बनाया हुआ है। मुहम्मद बाक़िर अकबरी ज़माने में तीन सौ लश्कर के सिपह सालार के मन्सब पर सरफ़राज़ थे। कत्बा नस्तालीक़ हुरूफ़ में है जिस पर एक इबारत लिखी हुई है।

येह हम्माम कई दर्जा का है, इस के कमरों और ग़ुस्ल ख़ानों के अंदर चूने के नफ़ीस संदले पर रंगा रंग के नक़्शो निगार और मन्बत कारी के फूल पत्ते बने थे जो कई जगह के अब तक अस्ली हालत पर क़ाईम हैं, चुनांचे बड़े कमरे की छत के बीच में एक बड़े दायरा नुमा फूल का आधा हिस्सा बाक़ी रह गया है जो सफ़ैद ज़मीन पर लाजूर्दी और मुख़्तलिफ़ रंगों से बनाया गया है। इस में अब तक ऐसी आबो ताब है कि अभी का तैयार किया हुआ मालूम होता है।

हम्माम मुहम्मद बाकिर के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



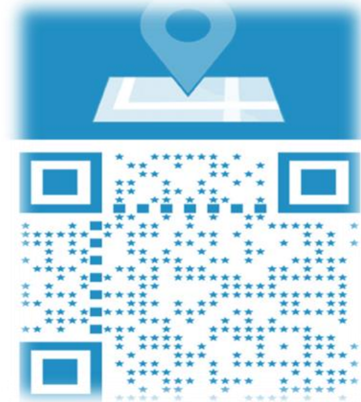


हौज़ शीरीं या सुख ताल

दीवाने ख़ास और आँख मिचौली के उत्तरी जानिब और हम्माम मुहम्मद बाक़िर के सामने पच्छिमी जानिब एक पुख़्ता तालाब मौजूद है जो सुख ताल और हौज़ शीरीं दोनों नाम से मौसूम है। येह 89 फ़ुट लंबा और 89 फ़ुट चौड़ा और 23 फ़ुट गहरा है। जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब पानी में उतरने के वास्ते सीढ़ियां बनी हैं और इर्द गिर्द साढ़े 9 फ़ुट चौड़ा पुख़्ता चबूतरा बना है। तालाब के जुनूबी जानिब 19 दर का वो संगीन दालान है जिसकी छत पर दीवाने ख़ास और आँख मिचौली का उत्तरी सेहन है। इसी दालान में पूर्वी जानिब 10 × 2 फ़ुट झरना लगा है। खास महल के हौज़ से पचीसी और दीवाने ख़ास के फ़र्श की नाली पर होता हुआ पानी इस झरने के ज़रिए से नीचे उतरता था और फिर नाली में होता हुआ इस तालाब में पहुंचता था। तालाब के नीचे उत्तरी जानिब 5 दर का और पच्छिमी जानिब 4 दर का दालान बना है जिसकी छत लदाओ की है। अबुल फ़ज़्ल अकबर नामा में 990 हिजरी ब मुताबिक़ 1882 ईस्वी के वाकिआत में लिखते हैं : फ़तेहपुर के पहाड़ के ऊपर उत्तरी जानिब एक निहायत दिलकुशा हौज़ अकबर के हुक्म से तामीर किया गया था। एक दिन अक्सर अकबर बादशाह के अमीर दोस्त इस हौज़ के किनारों पर बैठे हुए तफ़रीह कर रहे थे। बादशाह सलामत भी शाहज़ादों के साथ रौनक अफ़रोज़ थे। किसी जगह शतरंज का शुग़ल यानी खेल था, किसी जगह गंजिफ़ा खेला जा रहा था। ग़र्ज़ेकि मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इसी किस्म के दिल बहलाने वाले खेल जारी थे। यकायक हौज़ का एक कोना शक़ यानी फट गया और पानी जो हौज़ में लबालब भरा हुआ था तूफ़ान की तरह बहना शुरू हुआ, अमीर लोगों ने इस बला ख़ेज़ तूफ़ान से नजात पाई लेकिन मकानात और अवाम आदमियों को

नुक़्सान पहुंचा। बावजूद इस के कि अंबोह यानी भीड़ कसीर थी मगर एक के इलावा कोई आदमी नहीं मरा। बादशाह ने माबूदे हक़ीक़ी यानी अल्लाह पाक का शुक्रिया अदा कर के बहुत कुछ ख़ैरात किया।

सुख ताल के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

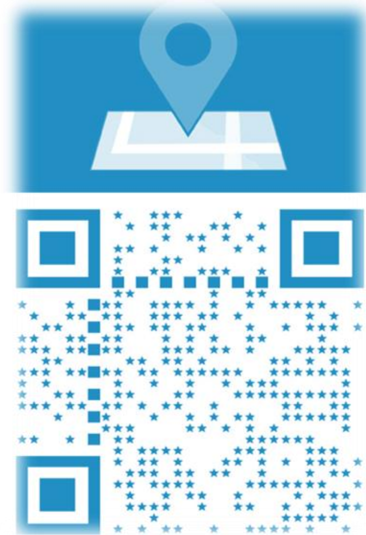




फ़ील ख़ाना (हाथी ख़ाना)

अकबर को हाथियों का बड़ा शौक़ था और येह शौक़ सिर्फ शाहों और शहज़ादों का सा मामूली शौक़ ना था बल्कि हाथियों की वजह से अक्सर मुहिमें क़ाईम हो गईं जिनमें लाखों करोड़ों रुपये सर्फ हो गए। हज़ारों सर कट गए। ख़ुद हाथी पर ख़ूब बैठता था। कैसा ही मस्त और आदमी को मार डालने वाला हाथी होता अकबर बिग़ैर डरे उस के पास जाता और कभी दाँत और कभी कान पकड़ कर फ़ौरन गर्दन पर सवार हो जाता था। फ़ील ख़ाना में हमेशा पाँच और छः हज़ार के दर्मियान में हाथी मौजूद रहते थे। फ़तेहपुर में सुख ताल (हौज़ शीरीं) के सामने नगर की सड़क के उत्तरी जानिब फ़ील ख़ाना की इमारत थी जो अब मुन्हदिम (यानी गिर) गई लेकिन बहुत से पिलर अब तक खड़े हुए हैं। जो फ़ील ख़ाना के नाम से मौसूम हैं।

फ़ील ख़ाना यानी हाथी ख़ाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





اعلی حضرت کا تذکرہ دل نواز قرآن، حدیث اور میتھ کی
روشنی میں خطبات شفیقی جلد دوم کا ایک منفرد بیان بنام

اعلی حضرت کا چرچا رهے گا

ہ اولیاء اللہ کے تذکرے کیوں باقی رہتے ہیں ہ تذکرے باقی رہنے کے چند اسباب
ہ اولیاء فنا ہو کر 9 کا عدد بن جاتے ہیں۔ ہ 9 کے عدد کی چار عجیب باتیں
ہ اعلیٰ حضرت کے پاس سب کچھ ہے ہ تعارف اعلیٰ حضرت



مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

مکتبہ دار السنہ، دہلی



PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
Mob.: +91-9368287284, 8808693818

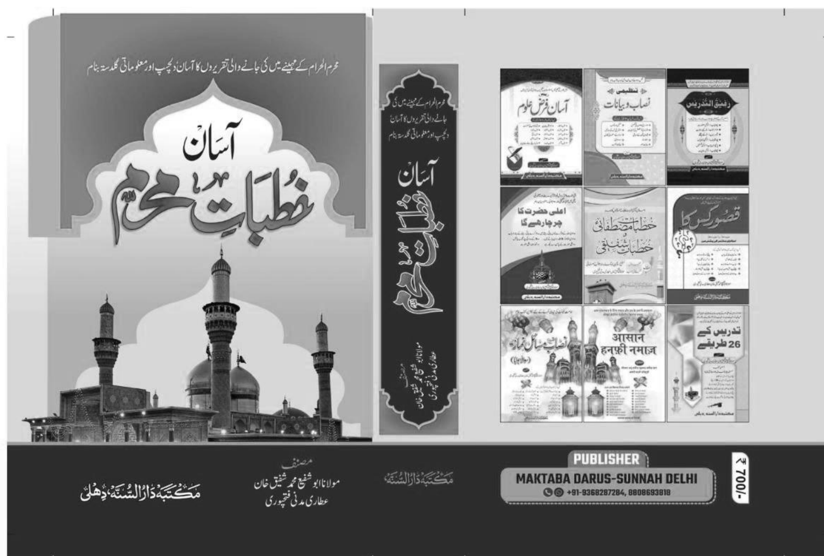
लंगर ख़ाना अहले इस्लाम

नगीना मस्जिद के नीचे मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब मुसलमानों का लंगर ख़ाना है जिसमें अकबर के ज़माने में मुसलमान फ़क़ीरों को खाना तक़सीम किया जाता था। इस में एक तीन दरी और इस के आगे बरामदा बना है जो 38×22 फुट है। छत संगीन खपरैल नुमा है। अबुल फ़ज़ल लिखते हैं कि जब अकबर बादशाह की हुकूमत को 23 साल हो चुके तो इस साल बादशाह ने दारुस्सल्तनत फ़तेहपुर के आस पास चंद आलीशान ग़रीब ख़ाने तामीर कराए और उन में गरीबों और मिस्कीनों के खाने पीने का इंतिज़ाम निहायत सैर चश्मी से किया और रहम दिल अमीर लोगों को इसका एहतिमाम सिपुर्द किया, मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी 999 हिजरी ब मुताबिक़ 1590 ईस्वी में लिखते हैं कि इस साल अकबर ने मुसलमान और हिंदू फ़क़ीरों को खाना खिलाने के वास्ते दो मकान बनवाए। पहले का ख़ैरपुरा और दूसरे का धरमपुरा नाम रखा। सब फ़क़ीरों को बादशाही लंगर से खाना मिलता था। उनका एहतिमाम शैख़ अबुल फ़ज़ल के नौकरों के मुताअल्लिक़ किया गया।

लंगर खाना अहले इस्लाम के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।



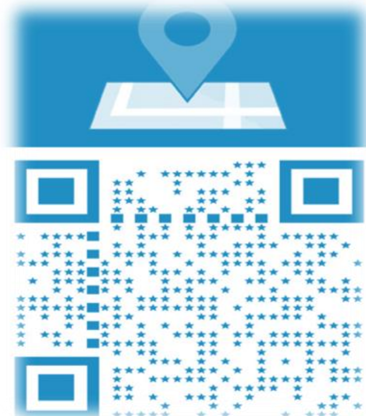



محرم الحرام کے مہینے میں کی جانے والی تقریروں کا آسان دلچسپ اور معلوماتی گلدستہ بنام
آسان
خطباتِ محرم
مکتبہ دارالسنۃ دہلی
مصنف
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان
عطاری مدنی فتحپوری
مکتبہ دارالسنۃ
PUBLISHER
MAKTABA DARUS-SUNNAH DELHI
+91-9368287284, 8808693818
₹ 700/-

लंगर ख़ाना अहले हुनूद

लंगर ख़ाना अहले इस्लाम के सामने सड़क के शुमाली यानी उत्तरी जानिब क़रीब क़रीब उसी नमूने की दूसरी इमारत है जो हिन्दुओं का लंगर ख़ाना मशहूर है। इस में हिंदु मोहताजों को पका पकाया खाना और ख़ुश्क ग़िज़ा मिलती थी। इस की लंबाई साढ़े 36 फ़ुट और चौड़ाई 13 फ़ुट है।

लंगर ख़ाना अहले हुनूद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





कबूतर ख़ाना

दुनिया में कोई खेल और कोई शौक़ ऐसा ना था जिसमें अकबर बादशाह को कुछ ना कुछ दख़ल ना हो। चुनांचे कबूतर बाज़ी का भी आशिक़ था, बहुत किस्मों के कबूतर शहर शहर बल्कि विलायतों से मंगा कर इकट्ठा किए थे। अब्दुल्लाह ख़ान उज़बक जो तूरान का वाली था उस को लिख कर वहां से गिरह बाज़ कबूतर मंगाए थे।

आईन अकबरी में जहां और कारख़ानों के आईन व ज़वाबित लिखे हैं वहां कबूतर बाज़ी का भी आईन आईने निशात बाज़ी के नाम से मौजूद है। शैख़ अबुल फ़ज़ल ने एक मक़ाम पर अकबर नामा में लिखा है कि एक दिन कबूतर उड़ रहे थे वो बाज़ीयां करते थे। अकबर बादशाह तमाशा देखते थे कि एक ख़ास्सा के कबूतर पर बहरी चील गिरी, अकबर ने लल्कार कर आवाज़ दी: कि ख़बरदार, बहरी चील झपटा मारते मारते रुक कर हट गई। और फिर ना आई, रुकआते अबुल फ़ज़ल में एक फ़रमान मिर्ज़ा अब्दुर्रहीम ख़ान ख़ानां के नाम है इस में कबूतरों ही का ज़िक्र है और एक एक कबूतर का नाम बनाम अब भी लिखा है।

फ़तेहपुर में हतिया पोल और संगीन बुर्ज के पास जो बुर्ज बना है वो कबूतर ख़ाना के नाम से मौसूम है। येह मुरब्बा यानी चौकोर है जिसका अंदर से हर कोना 47 फ़ुट है। चारों तरफ़ चार दरवाज़े और उन की बग़लों में दो दो अलमारियां (यानी बड़े ताक़) और उन के ऊपर ताक़ बने हैं। छत लदाओ की गुंबद नुमा है जिसके बीच में एक फूल बना है।

कबूतर खाना के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





संगीन बुर्ज

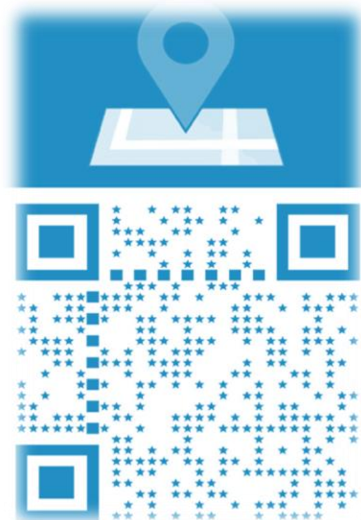
येह बुर्ज बाहर से लाल पत्थर और अंदर से पत्थर व चूने का बना है। जो हतिया पोल और कबूतर ख़ाने के क़रीब मौजूद है । बीच में एक कमरा 33 × 15 फ़ुट है । जिसमें 3.3 दरवाज़े मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब और एक एक दरवाज़ा शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) की जानिब लगा है । छत लदाओ की है जिसमें चूने की अस्तर कारी है । इस कमरे के मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक एक कमरा जुनूब (यानी दक्खिन) में तीन दर का बरामदा और शुमाल (यानी उत्तर) व मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब और शुमाल (यानी उत्तर) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक एक कोठरी बनी है । जिसमें एक दो मंज़िला है । कोठरियों में गुज़श्ता नक़्शो निगार का कुछ नमूना बाक़ी है । चारों तरफ़ गैलरी नुमा रास्ता बना है । दक्खिन जानिब के इलावा हर तरफ़ छज्जा लगा है जिस पर कटहरे के निशान मौजूद हैं।

मुंतख़बुत्तवारीख से वाज़ेह है कि जब 982 हिजरी ब मुताबिक़ 1574 ईस्वी में मिर्ज़ा सुलैमान हाकिम बदख़शाँ फ़तेहपुर में आए तो इसी बुर्ज में ठहराए गए थे, यहीं नक़्क़ार ख़ाना था जिस पर नौबत बजा करती थी । इस के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब किसी गिरी हुई इमारत के निशान दूर तक चले गए हैं ।

दारोगा का मकान

संगीन बुर्ज के क़रीब मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब और कारवां सराए के जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब पहाड़ के ऊपर येह मकान मौजूद है जिसकी निस्बत येह मशहूर है कि येह अस्तबल के दारोगा और कारवां सराये के मुहतमिम के रहने के वास्ते बनाया गया था। इस में एक कमरा पूरब पच्छिम 30 फ़ुट 5 इंच X 17 फ़ुट और दूसरा कमरा उस के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब शुमाल (यानी उत्तर) व दक्खिन में 21 फ़ुट 3 इंच X 16 फ़ुट 10 इंच, और मशरिक़ (यानी पूरब) में एक कोठरी और आगे 5 दर का बरामदा 50 फ़ुट X 18 फ़ुट बना है। मग़रिबी यानी पच्छिमी कमरे की दीवार गिर गई है। बाज़ बाज़ मक़ामात के नक़्शो निगार अस्ली हालत में अब तक मौजूद हैं जिनसे इस मकान की गुज़श्ता ख़ूबसूरती का अंदाज़ा किया जा सकता है। छत के ऊपर भी कुछ इमारत के आसार पाए जाते हैं।

दारोगा के मकान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।

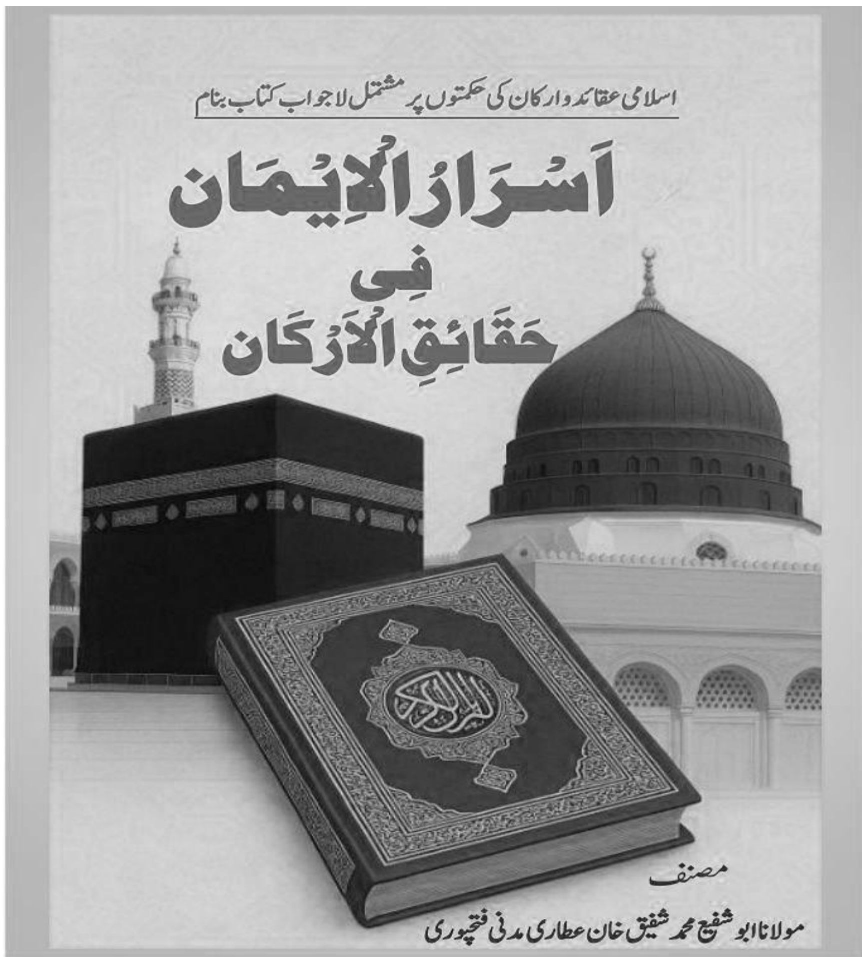





اسلامی تبلیغی خطبات کا ایک منفرد و مقبول گلدستہ
خطباتِ مصطفائی
و
خطباتِ شفیقی
خطیب اول
مبلغ اسلام پیرزادہ محمد رضا ثاقب مصطفائی
حصہ اول
خطیب ثانی و مرتب
مولانا محمد شفیق خان عطاری مدنی فتح پوری
مکتبہ دار السنۃ دہلی

मुसम्मन बुर्ज

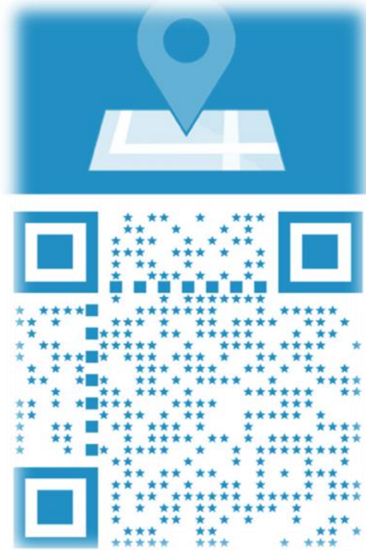
येह संगीन बुर्ज हतिया पोल के क़रीब मौजूद है। इस में चारों तरफ़ 11 दरवाज़े हैं। येह दर अस्ल उस ज़नाना यानी औरतों के रास्ता का एक दर्मियानी बुर्ज था जो जोधा बाई के महल से हरम मीनार तक गया था। इस रास्ते का हाल जोधा बाई के महल के बयान में तहरीर हो चुका है।



हाथी पोल या हतिया पोल

येह शाही महल्लात का मशहूर आलीशान दरवाज़ा है जो महल्लात के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब शुमाली यानी उत्तरी गोशे में मौजूद है। इस के नीचे का हिस्सा शुमाल (यानी उत्तर) व दक्खिन 40 फ़ुट और पूरब व पच्छिम 15 फ़ुट है। पूरब और पच्छिम गोशों में तीन दरियां और उन के अंदर एक एक कोठरी बनी है। इन तीन दरियों का रकबा 17 फ़ुट 10 इंच X 10 फ़ुट 3 इंच है। दरवाज़े की छत लदाओ की गुंबद नुमा कमर की बनावट की है जिसके दर्मियान में एक ख़ूबसूरत संगीन फूल दस पत्तियों का मुज़य्यन है। फाटक के आगे दोनों जानिब 12 फ़ुट की बुलंदी पर 2 संगीन हाथी चबूतरों पर बने हुए हैं। जो पत्थर के कई टुकड़ों से बनाए गए हैं। इन हाथियों की लंबाई 12 फ़ुट 8 इंच है और अंदाज़न 12 फ़ुट बुलंद है। दोनों हाथियों की सूंडें मिला कर मेहराब बनाई गई थी जो अब क़ाईम नहीं रही। छत के ऊपर एक मुस्ततील यानी लंबा कमरा 49 फ़ुट 2 इंच X 9 फ़ुट 10 इंच बना है जिसके दक्खिनी जानिब 24 फ़ुट 10 इंच चौड़ा सेहन है। कमरे में सात दरवाज़े और एक खिड़की दक्खिन की जानिब और 6 मोर्चे उत्तरी दीवार में बने हैं। दरवाज़े के अंदर यानी दक्खिनी जानिब चौक है जिस में दालान बने थे। उनमें कुछ गिर गए और कुछ बाक़ी हैं।

हाथी पोल या हतिया पोल दरवाज़े के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

चौथा बाब

उत्तरी इमारात

*बारह दरी	*कारखानए आब रसानी
*गेरुवा नल	*कारवां सराये
*हरम मीनार	*मैदाने चौगान
*मेवातियों की मस्जिद	*मस्जिद मस्त अली
*मस्जिद फ़तह मुहम्मद	*जामा मस्जिद नगर
*क़ाज़ी की हवेली	*मक़बरा मख्दूम साहिब
*मूसा गुंबद	*कोश खाना

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

चौथा बाब

उत्तर की जानिब की इमारतें

पहाड़ के नीचे की इमारतें

बारह दरी मुत्तसिल आबादी मौज़ा सीकरी

येह संगीन बारह दरी मौज़ा सीकरी की आबादी के दक्खिनी जानिब पहाड़ के नीचे मौजूद है। इस के बारे में कुछ पता नहीं चलता कि किस की तामीर की हुई है। इस में एक कमरा 24 फ़ुट 3 इंच X 17 फ़ुट 5 इंच है। जिसमें तीन दरवाज़े उत्तरी जानिब और एक एक पूरब व पच्छिम में है। छत संगीन लदाओ की थी जो गिर गई। अब बहुत थोड़ा हिस्सा बाक़ी रह गया है। अंदर बहुत से ताक़ और अलमारियां बनी हुई हैं। कमरे के आगे तीनों जानिब बरामदा था जिसमें पच्छिमी बरामदा गिर गया। उत्तरी बरामदा 54 x 11 फ़ुट 2 इंच है। इस में 6 दर हैं। पूर्वी बरामदा तीन दर का है जो 23 x 11 फ़ुट 2 इंच है। दोनों बरामदों की छत पत्थर की पटियों से पटी है। इमारत के गिर्द अब तार लग गए हैं और कुछ मरम्मत भी की गई है।

کئی لڑکیاں پیدا ہونے کے بعد لوگ کہتے ہیں "اس عورت کو طلاق دے دو"
آخر لڑکیوں کی پیدائش میں
قصور کس کا
مرد کا یا عورت کا
اسلام اور سائنس کی روشنی میں
صرف کے دلچسپ سوالات
سب سے پہلے سب سے افضل
مکتبہ دار السنۃ، دہلی
کی عنقریب منظر عام پر آنے والی کتابیں

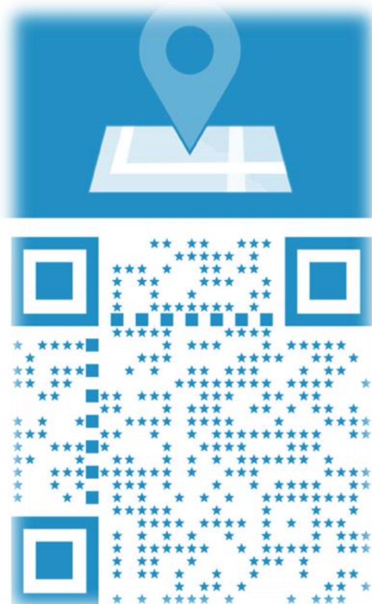
कार खाना आब रसानी (उत्तरी)

फतेहपुर के तमाम शाही महल्लात और कारखाने के मकानात पहाड़ के ऊपर तामीर किए गए हैं जहां पानी का नामो निशान भी मौजूद ना था और आब कशों यानी पानी पहुंचाने वालों के ज़रिये से इस क़दर बुलंदी पर इफ़रात यानी ज़्यादती के साथ पानी पहुंचना ना सिर्फ दिक़्क़त तलब बल्कि ना मुम्किन था, लिहाज़ा उस ज़माने के बा कमाल इंजीनियरों ने निहायत अक़्लमंदी और कारीगरी से पहाड़ के नीचे उत्तरी और दक्खिनी जानिब दो कारख़ाने पानी पहुंचाने के क़ाईम कर के पहाड़ पर पानी पहुंचाया और वहां से बेशुमार पुख़्ता नालियों, हौज़ों, नलों, तालाबों के ज़रिये से तमाम शाही मकानात बाग़ात और हम्मामों के अंदर पहुंचा दिया।

येह पानी पहुंचाने का उत्तरी कारख़ाना हतिया पोल के क़रीब मौजूद है। सबसे पहले एक वसीअ इमारत बाउली की है जो बाउली के चारों तरफ़ बनी है। बाउली में उतरने के वास्ते सीढ़ियां मौजूद हैं। ऊपर चार तोड़े लगे हैं जिनके ऊपर चर्ख़ का पत्थर रखा गया था। येह तोड़े बहुत बड़े बड़े हैं जो पत्थर के छः छः टुकड़ों से मुरक्कब हैं। बाउली के दर्मियानी हिस्से में जो इमारत है उस में शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) की तरफ़ एक एक हश्त यानी आठ पहल कमरा बना है जिसकी गोलाई 27 फ़ुट और हर कोना8 फ़ुट है। इसी तरह के कमरे हौज़ नंबर 1 व 2 के इर्द गिर्द भी बने हैं। इन कमरों में नीचे ऊपर दो दो पत्थर की शहतीर नुमा पट्टियाँ नसब की गई हैं जिनके दर्मियान में सुराख़ है। अब येह किसी कमरा में बाक़ी रह गई है और किसी में मौजूद नहीं रहीं। हर कमरे में नीचे ऊपर की पट्टियों के सुराख़ों के दर्मियान में कोई ख़ास कुल या किसी किस्म के चर्ख़दार पहिये जिनका समझना हमारी अक़्ल से बाहर है ऐसे लगाए गए थे जो पानी को पेंप के

ज़रिये बाउली के अंदर से खींच कर ऊपर पहुंचा देते थे। बाउली का क़ुतर यानी गोलाई साढ़े 22 फ़ुट और गहराई मौजूदा हालत में कि मलबा से पटी पड़ी है 44 फ़ुट है। बाउली से मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब 61 फ़ुट के फ़ासिले पर एक हौज़ बनाया है जिसके ऊपर कुवें का सा गोला क़ाईम कर के ऊपर से कुवें की शक्ल का बना दिया है। दर्मियान में दो रवैया आठ आठ संगीन पिलर नसब कर के उन की छत पर पुख़्ता नाली बनाई है। बाउली से पानी निकल कर इस नाली में होता हुआ पहले हौज़ में जमा होता था। फिर इसी तरह इस हौज़ से दूसरे हौज़ और दूसर से तीसरे और तीसरे से चौथे हौज़ में पहुंच कर 163 फ़ुट बुलंदी पर पहुंचता और फिर मुख़्तलिफ़ नल और नालियों के ज़रीये से तमाम शाही महल्लात में पहुंच जाता था।

कारखाना आब रसानी उत्तरी के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।






आगरा के 283 औलियाए किराम
WhatsApp group
Scan this QR code using the WhatsApp camera to join this group

गेरूवा नल

कारवां सराये और संगीन बुर्ज के दर्मियान पहाड़ के नीचे एक बड़ा नल बना हुआ है जो गेरूवा नल के नाम से मौसूम है। बयान किया जाता है कि इस के नीचे गेरू की कान है। इस का रास्ता मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब है।



कारवां सराये

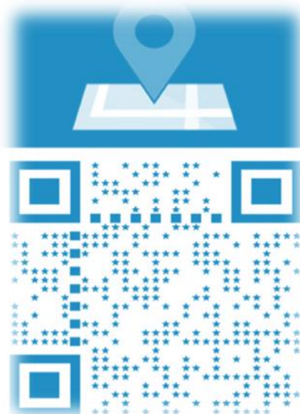
हतिया पोल के क़रीब कारवां सराये की वसीअ इमारत है जिसका रकबा बाहर से 3257 X 325 फ़ुट है। इस के चारों कोनों पर चार बुर्ज और चार दीवारी के ऊपर कंगूरे बने हैं। उत्तरी जानिब शानदार फाटक है। तीन जानिब यक मंज़िला और दक्खिनी जानिब तीन मंज़िला इमारत थी। दो मंज़िलें अब तक मौजूद और तीसरी मंज़िल की सिर्फ नमूद बाक़ी है। चारों तरफ़ कोठरियां और उन के आगे बरामदे हैं। चारों कोनों पर चौकोर शक्ल के चार मकान बने हैं जिनके चारों तरफ़ तीन दरियां और दर्मियान में छोटा सा सेहन छूटा हुआ है। चारों तरफ़ की इमारत के दर्मियान में वसीअ सेहन है जिसमें एक पुख़्ता कुँआं बना है। तमाम इमारत पर चूने की अस्तर कारी है और बाक़ी मांदा नक़्शो निगार से जो कहीं कहीं बाक़ी रह गए हैं, पता चलता है कि तमाम इमारत पर मुख़्तलिफ़ रंगों से निहायत ख़ूबसूरत गुल कारी की गई थी। इस की अंदरूनी इमारत बहुत मुन्हदिम (यानी गिर) गई है इस कारवां सराये में दुनिया भर के सौदागर क़िस्म क़िस्म के क़ीमती सामान और नफ़ीस नफ़ीस चीज़ें और उम्दा उम्दा हाथी, घोड़े बेचने के लिए लाते थे। सबसे नीचे के दर्जे में हाथी घोड़ों के सौदागर और आम सय्याह और मुसाफ़िर ठहराए जाते थे, दूसरी मंज़िल में क़ीमती चीज़ों के सौदागर रहते थे। और सबसे ऊपर की मंज़िल जवाहिरात के सौदागरों के वास्ते मख़्सूस और जौहरी ख़ाना के नाम से मौसूम थी। रात के वक़्त दरवाज़ा बंद हो जाता था। और हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम बादशाह की जानिब से किया जाता था। चुनांचे तीसरी मंज़िल से मिला हुआ पहाड़ के ऊपर कारवां सराये के मुहतमिम का मकान था जो अब दारोगा का मकान कहलाता है।

इसी कारवां सराये में जिस दिन ईरान का मशहूर सौदागर मलिक मसऊद आ कर ठहरा था। और उस के क़ाफ़िला के साथ एक मुसीबत ज़दा मगर शरीफ़ वालिदैन यानी माँ बाप अपनी नौ मौलूद लड़की के साथ ठहरे थे। कौन ख़्याल कर सकता था कि येह ही गुम नाम बच्ची चंद ही मुद्दत में हिन्दुस्तान की सल्तनत की मालिका बन कर तारीख़ी दुनिया में शोहरत हासिल करेगी। हमारे तारीख़ जानने वाले नाज़िरीन तो समझ ही गए होंगे। बक़िया नाज़िरीन को हम बताए देते हैं कि येह लड़की मिर्ज़ा ग़यास (एतिमादुद्दौला) की बेटी **महरुन्निसा** थी जो जहांगीरी ज़माने में महरुन्निसा से पहले नूर महल और इस के बाद **नूरजहाँ** हो कर तमाम सल्तनत की ऐसी मालिक हो गई कि सिक्कों, तमाम फरमानों पर मोहर उसी के नाम की लगने लगी। जिस दिन येह क़ाफ़िला फ़तेहपुर में वारिद हुआ यानी आया उस के दूसरे दिन मलिक मसऊद दरबारे अकबरी में हाज़िर हुआ, और ईरान के तहाइफ़ पेश करने के बाद मिर्ज़ा ग़यास और इस के बड़े बेटे अबुल हसन (आसिफ़ ख़ान मुम्ताज़ महल का बाप) को पेश कर के अर्ज़ किया कि हुज़ूर के वास्ते दो जानदार जवाहिर भी लाया हूँ, अगर येह तर्बीयत किए जाएं तो बेमिस्ल और लाजवाब होंगे। कमाल के जौहरी ने क़ियाफ़ा की कसौटी से उनकी लियाक़त का हाल मालूम कर के शाही मुलाज़िमत में मुंसलिक किया, आगे का हाल सबको मालूम है कि उन के कमाल ने कहाँ से कहाँ पहुंचा दिया।

कारवां सराये के मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब एक वसीअ ज़मीन में मुसाफ़िरों और सौदागरों की तफ़रीह के वास्ते एक बाग़ लगाया गया था। जिसमें एक बारह दरी और एक हम्माम शिकस्ता हालत में अब भी मौजूद है पच्छिमी दीवार से मिला हुआ एक दूसरा ईहाता था जिसकी अब सिर्फ

दक्खिनी दीवार बाक़ी है। इस के बीच में एक कनाती मस्जिद बनी हुई है। बाज़ लोग कहते हैं कि यहां बाज़ार था। बाज़ बाग़ बयान करते हैं।

कारवाँ सराये के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





हरम मीनार (हिरन मीनार)

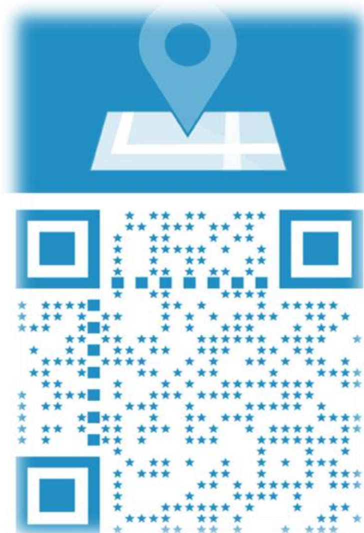
हतिया पोल के सामने और कारवां सराये के क़रीब येह मीनार मौजूद है जो आम तौर से हिरन मीनार के नाम से मशहूर है। चूँकि महल्लात से इस मीनार तक एक पर्दादार ज़नाना रास्ता बना हुआ था और बेगमात और शहज़ादियाँ तफ़रीह के वास्ते यहां तक आया करती थीं। इस वजह से येह हरम मीनार के नाम से मशहूर हो गया जिसे अवाम ने अब हिरन मीनार बना दिया है। इस के बारे में बहुत सी रिवायतें मशहूर हैं जिनमें से एक येह भी है कि अकबर बादशाह के किसी खास आदमी का कोई प्यारा हाथी मर गया था, अकबर को इस से बहुत मुहब्बत थी उस ने इस मक़ाम पर उसे दफ़न करा कर उस की यादगार में येह मीनार तामीर कराया था। और इसी वजह से मीनार में नीचे से ऊपर तक पत्थर के हाथी दांत बना कर नसब किए गए हैं।

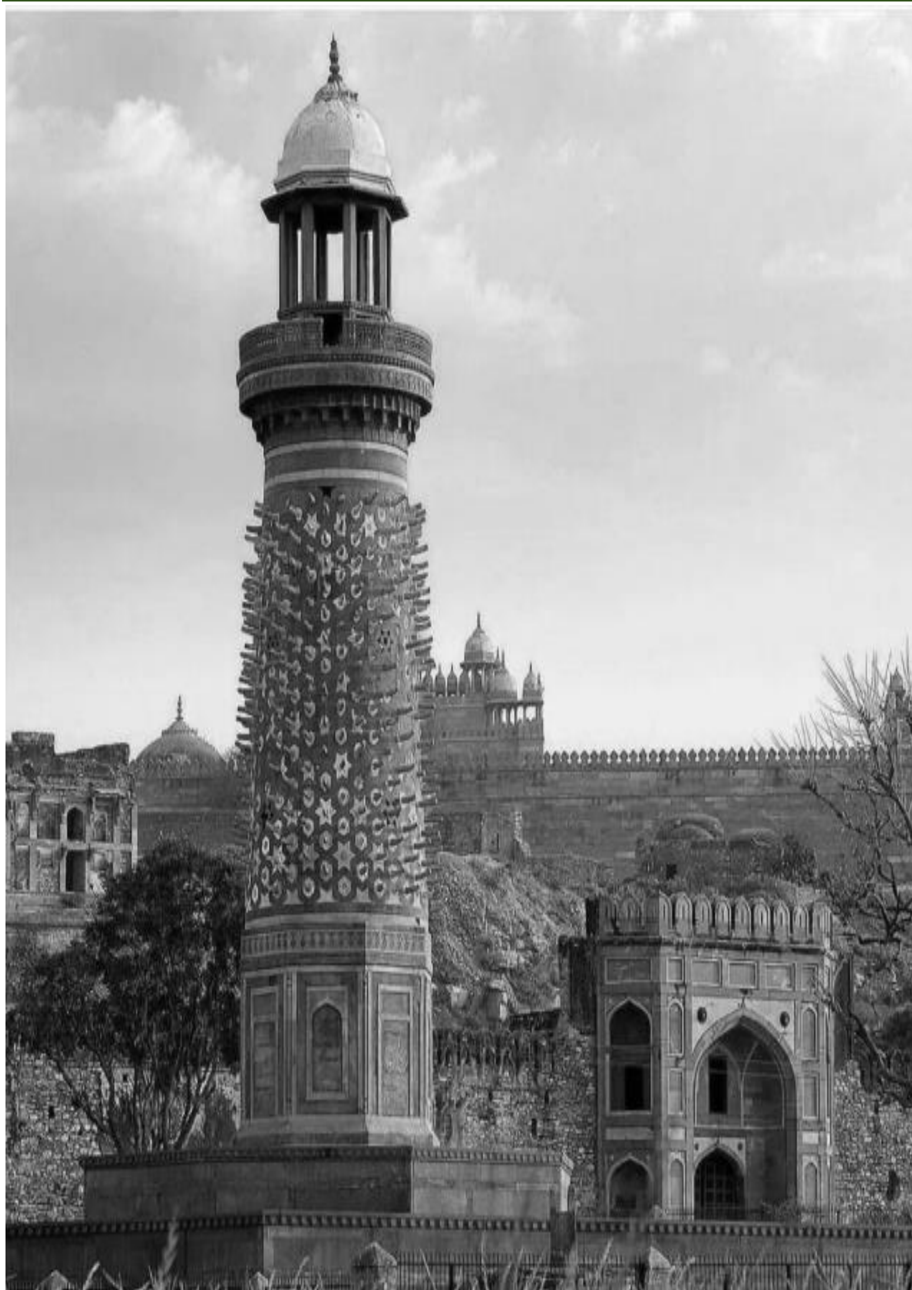
अबुल फ़ज़ल ने आईने अकबरी में लिखा है कि चौगां के मैदान में एक मीनार बना हुआ है जिसके ऊपर जहां पनाह बैठ कर हाथियों की लड़ाई का तमाशा देखा करते हैं। इस से मालूम होता है कि इस के क़रीब हाथियों की लड़ाई हुआ करती थी।

पहले एक संगीन चबूतरा है जो पौने 73 फ़ुट X पौने 73 फ़ुट बना है जो ज़मीन से 9 फ़ुट बुलंद है। इस के बीच में दूसरा ख़ूबसूरत हश्त पहल यानी आठ कोनों का चबूतरा बना है, जिसका हर कोना सवा 16 फ़ुट और बुलंदी 3 फ़ुट10 इंच है। इस हश्त यानी आठ पहल चबूतरे के दर्मियान में मीनार बना हुआ है। मीनार के नीचे का हिस्सा हश्त यानी आठ पहल है, जिसका हर कोना 6 फ़ुट 5 इंच और बुलंदी 13 फ़ुट है। हर पहल में मेहराब दार दरवाज़ों के निशान और एक पहल में मीनार पर चढ़ने के वास्ते ज़ीना बना हुआ है। चार दरवाज़ों के निशान में निहायत बारीक जालियाँ बनाई हैं

और चार सादा हैं, नीचे से ऊपर तक पत्थर के हाथी दांत मुज़य्यन हैं और निहायत नफ़ीस नक़्शो निगार बने हुए हैं अंदर चक्कर दार ज़ीना है जिसकी चार मंज़िलों में 53 सीढ़ियां तै कर के मीनार के ऊपर पहुंचते हैं। इस के बाद तीन सीढ़ियां चढ़ कर मीनार की गुंबद दार बुर्जी पर क़दम रखते हैं, बुर्जी का चबूतरा हश्त यानी आठ पहल है जिसके हर पहल में एक पत्थर के अंदर चार छोटे और एक बड़ा ताक़ तरशा हुआ है, शह नशीन के गिर्द कटहरा लगा था जो बाक़ी नहीं रहा सिर्फ़ निशान मौजूद है। मीनार की ऊंचाई ऊपर के चबूतरे से 50 + 7 = 57 फ़ुट है जिसमें अगर दोनों चबूतरों की बुलंदी 9 +13 = 22 फ़ुट और शामिल कर दी जाये तो कुल बुलंदी 79 फ़ुट हो जाती है। चबूतरे के चारों कोनों पर छोटे छोटे हौज़ और शुमाली यानी उत्तरी जानिब एक मुख़्तसर कुँआं बना है।

हरम मीनार (हिरन मीनार) के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





मैदाने चौगान

अकबर बादशाह के जहां और हज़ारों शौक़ थे वहां चौगां बाज़ी का भी बहुत शौक़ था। अक्सर ऐसा होता था कि खेलते खेलते शाम हो गई और बाज़ी तमाम ना हुई। अंधेरा हो गया, मजबूरन खेल बंद करना पड़ता था। इसलिए 974 हिजरी ब मुताबिक़ 1566 ईस्वी में गोये आतिशीं ईजाद यानी बनाई गई कि अंधेरे में शोला की तरह जलती मालूम होती थी। वो एक किस्म की लकड़ी की तराशी थी। ऊपर कुछ दवाएं मल दी जाती थीं। जब एक मर्तबा उसे आग दे देते थे तो चौगां की चोट और ज़मीन पर लुढ़कने से ना बुझती थी। जब फ़तेहपुर में क़ियाम हुआ तो एक वसीअ हमवार मैदान चौगान के वास्ते बनाया। चारों तरफ़ चार दीवारी और गोशों पर बुर्ज बनाए गए। जिसमें मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार का कुछ हिस्सा और उत्तर व पच्छिम जानिब का शिकस्ता बुर्ज अब तक मौजूद है। इस मैदान की वुसअत का इस बात से अंदाज़ा हो सकता है कि जब 987 हिजरी ब मुताबिक़ 1579 ईस्वी में जुमा के दिन मुल्क के तमाम उल्मा और मशाइख़ इनाम तक़सीम करने की ग़रज़ से फ़तेहपुर में जमा किए गए तो उस के वास्ते यही मक़ाम तजवीज़ किया चुना गया। जिस वक़्त इनाम तक़सीम होना शुरू हुआ तो एक लाख मर्द औरत का मजमा था। अब इस मक़ाम पर ज़राअत यानी खेती होती है लेकिन यहां के सब खेत चौगान वाले खेत के नाम से मौसूम हैं।

991 हिजरी ब मुताबिक़ 1583 ईस्वी में इसी मैदान में चौगांबाज़ी हो रही थी कि बीरबल को घोड़े ने फेंक दिया जिससे सख़्त सदमा पहुंचा, अकबर पास आया बड़ी मुहब्बत से सर सहलाया और उठवा कर घर भिजवा दिया। इसी साल चौगां के मैदान में बादशाह हाथियों की लड़ाई का

तमाशा देख रहा था, दिल चाचर नाम एक हाथी सर शौरी और बद मिज़ाजी में मशहूर था यकायक दो पैदल आदमियों पर दौड़ पड़ा। वो भागे हाथी उनके पीछे दौड़ा। सामने कहीं से बीरबल आ गया, हाथी पैदलों को छोड़ कर बीरबल पर झपटा, अकबर ने दूर से देख लिया था, फ़ौरन घोड़ा मार कर ख़ुद बीच में आ गया। हाथी चंद क़दम बादशाह के पीछे आ कर थम गया।

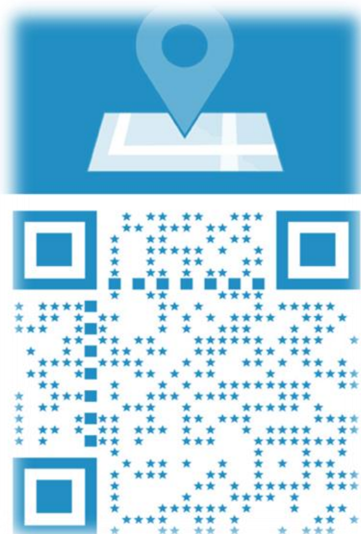
एक मर्तबा जहांगीर ने समोगर की शिकार गाह से 641 हिरन ज़िंदा गिरफ़्तार किए मिन जुमला उनके 488 हिरन इसी चौगां के ईहाते में छोड़े जाने के वास्ते फ़तेहपुर रवाना किए। उनमें 84 हिरनों की नाक में चांदी की नथियां पहनाई गई थीं। (तोज़क जहांगीरी पेज 99)

जहांगीर तख्त नशीन होने के 14 साल बाद जब फ़तेहपुर में मुक़ीम था। एक दिन रूप बाँस की शाही शिकार गाह में क़मुरग़ा (जानवरों को चारों तरफ़ से घेर कर शिकार करने का तरीक़ा) के शिकार का इंतिज़ाम था। दूर दूर तक के हिरन सरा परदों में घिरे हुए थे। ना मालूम बादशाह का क्या ख़्याल पल्टा कि शिकार से तौबा कर के अह्द कर लिया कि आज से किसी जानवर को अपने हाथ से नहीं सताऊंगा। उसी वक़्त राय मान को जो पैदल चलने वाले सिपाहियों का सरदार था हुक्म दिया कि यहां से फ़तेहपुर की चौगां तक (अब साढ़े 4 कोस का फ़ासिला है) दोनों तरफ सरा परदे खड़ा करा कर इन तमाम हिरनों को वहां पहुंचा दो ताकि उनके देखने से शिकार का ज़ौक़ भी हासिल हो और हिरनों को भी कोई तकलीफ ना पहुंचे। फ़ौरन हुक्म की तामील हो गई और 1500 हिरन चौगां के मैदान में भरने लगे।

(तोज़क जहांगीरी पेज 268)

येह मक़ाम हरम मीनार और कारवां सराये से मिला हुआ है।

मैदाने चौगान के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।



हरम मीनार और कारवाँ सराए से मिला हुआ खेत मैदाने चौगान



मेवातियों की मस्जिद

सीकरी की आबादी के अंदर मेवातियों के मुहल्ले में येह तीन दर की मस्जिद मौजूद है। इस का रकबा अंदर से 20 फ़ुट 8 इंच X 10 फ़ुट 8 इंच है। छत चार चार सुतूनों के दर्मियान में लाल पत्थर की पटियों से पटी है। सुतून निहायत ख़ूबसूरत और मुनक़्क़श हैं। अंदरूनी मेहराब जहां इमाम के खड़े होने की जगह है बहुत ख़ूबसूरत है जिसके दर्मियान में एक नफ़ीस कटाओ का फूल कँगूरों के दर्मियान में बना हुआ है जो खास तौर से देखने के काबिल है। रौशनी के वास्ते संगीन डियूट दीवारों में नसब हैं। नक़्शो निगार अपने तर्ज़ में बे नज़ीर और उस पुराने तर्ज़ के हैं जो मुग़लिया ज़माना से पहले राइज था। सेहन का फ़र्श बिल्कुल उखड़ गया। अंदर का कुछ उखड़ गया कुछ बाक़ी है। मस्जिद से मिला हुआ मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब संगीन बाज़ार था। जिसकी कुछ दुकानें मौजूद हैं।



मस्जिद मस्त अली

सीकरी में लाल दरवाज़े के क़रीब रास्ते के शुमाली यानी उत्तरी जानिब येह छोटी सी लाल पत्थर की मस्जिद मौजूद थी जो अब बहुत शिकस्ता हालत में है। और क़रीब क़रीब बिल्कुल मुन्हदिम (यानी गिर) चुकी है। इस के दरवाज़े की बाहरी पेशानी पर कत्बा का पत्थर लगा था जो आधा टूट कर नीचे गिर गया है इस पर एक इबारत लिखी हुई है।

मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार पर दर्मियानी मेहराब में एक शेअर लिखा हुआ है :

रोज़े महशर की जां गुदाज़ बुवद
अव्वलीं पुर्सिश अज़ नमाज़ बुवद

और जुनूबी यानी दक्खिनी मेहराब में निहायत ख़ुश ख़त तुग़रे में **"अल्लाह, मुहम्मद, अबूबकर, उमर, उस्मान, अली"** लिखा हुआ है।

मस्जिद फ़तह मुहम्मद

मस्जिद मस्त अली के सामने जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब एक दूसरी संगीन मस्जिद है जिसका रकबा 14 फ़ुट X सवा 9 फ़ुट है। इस में तीन दर हैं छत पत्थर की पटियों से पटी है। आगे 19 फ़ुट चौड़ा संगीन फ़र्श का सेहन है। इस की चार दीवारी भी क़ाईम है। दरवाज़े की बाहरी पेशानी पर **"या अल्लाह"** और **"या करीम"** के दर्मियान में **"शुद मस्जिद फ़तह मुहम्मद दर अह्दे बादशाह आलमगीर ब तारीख़ हशतुम शहर शाबान 49 सन (जलूस)** लिखा हुआ है।

दोनों मस्जिदों के इर्द गिर्द काछी लोग आबाद हैं। सिर्फ एक घर मुसलमान फ़क़ीर का है।

जामा मस्जिद नगर

येह मस्जिद नगर की आबादी के अंदर मौजूद है और जामा मस्जिद, क़ाज़ी की मस्जिद, बावन खम्मी मस्जिद, इन तीनों नामों से मौसूम है, मौजूदा इमारत का रकबा 95 फ़ुट 9 इंच X 21 फ़ुट 7 इंच है। और इस में कुल 33 सुतून हैं। जो 11 की तर्तीब से इस तरह नसब हैं कि मस्जिद तीन दर्जों में तकसीम हो गई है येह सुतून 10 फ़ुट के क़रीब बुलंद हैं। छत पत्थर की पटियों से पटी है। आगे 43 फ़ुट 8 इंच चौड़ा सेहन है जिसके शुमाल (यानी उत्तर) में दरवाज़ा है। अंदरूनी मेहराब के अंदर कलिमा तय्यिबा और अतराफ़ में पारा 10, सूरह तौबा की आयत नंबर 18,19,20 लिखी हुई है, ऊपर के कुछ हुरूफ़ ख़राब हो गए हैं, उन आयतों का तर्जमा येह है :

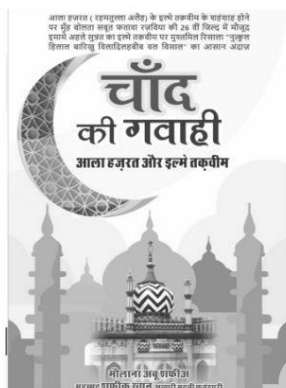
तर्जमा कंज़ुल ईमान:अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाईम रखते और ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते तो क़रीब है कि येह लोग हिदायत वालों में हों। तो क्या तुमने हाजियों की सबील और मस्जिदे हराम की ख़िदमत उस के बराबर ठहरा ली जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया वो अल्लाह के नज़्दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता। वो जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहां उनका दर्जा बड़ा है और वही मुराद को पहुंचे।

क़ाज़ी की हवेली और ज़नानी मस्जिद

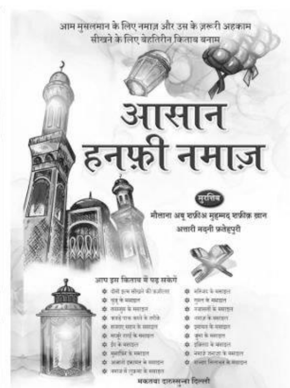
जामा मस्जिद के दरवाज़े के सामने मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब एक आलीशान हवेली है जो क़ाज़ी की हवेली कहलाती है। येह क़ाज़ी

बुरहान शाह की हवेली थी जो इस्लामी लश्कर के साथ यहां तशरीफ़ लाए थे पुराने आसार में एक संगीन तीन दरी कुछ कोठरियां और एक तीन दर की छोटी सी ज़नानी मस्जिद जो बीबियों की मस्जिद के नाम से मशहूर है बाक़ी है। इस मस्जिद की लंबाई 18 फ़ुट 4 इंच और चौड़ाई 10 फ़ुट 9 इंच है।

मगर अफ़सोस कि अब इस ख़ानए ख़ुदा में बैल बाँधे जाते हैं। एक ज़ईफ़ुल उमर शख़्स ने हवेली के अंदर एक मक़ाम बतलाया कि इस जगह नज़र बाग़ था। जिसके नल और फ़व्वारे ख़ुद उस ने देखे थे। बाग़ का कुँआं अब पटा पड़ा है। एक छोटा सा संगीन हौज़ 2 फ़ुट 8 इंच लंबाई चौड़ाई का रखा हुआ है जो एक पत्थर में तरशा हुआ और एक फ़ुट 7 इंच गहरा है। इस में झरने के निशान मौजूद हैं। इसी तरह के कई हौज़ यहां थे जिसकी बारे में उस शख़्स ने बयान किया कि लोग उठा कर ले गए। मिन जुमला उन के एक बड़ा हौज़ गांव के किसी कुवें पर रखा हुआ है। हवेली के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बहुत से मुनक़्क़श और सादा सुतून पत्थर तोड़े वग़ैरा पड़े हुए नज़र आते हैं।







मक़बरा मख़दूम साहिब

नगर की आबादी के बाहर भरतपुर की सड़क पर और दिल्ली दरवाज़े से ठीक शुमाल (यानी उत्तर) की जानिब एक मक़बरा मौजूद है जो मख़दूम साहिब के मक़बरा के नाम से मौसूम है। इस के चारों तरफ़ सीकरी की पहली आबादी के खन्डर दिखाई देते हैं। येह दर अस्ल मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी जो आबादी के बीच में मौजूद थी। अब येह क़ब्रिस्तान है, दर्मियान में शैख़ ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का संगीन रौज़ा बना हुआ है जिसकी जालियाँ लाल पत्थर की और गुंबद गच का है। तर्ज़े इमारत बता रहा है कि मुग़लिया ज़माने से बहुत पहले का बना हुआ है। ख़ानकाह की चार दीवारी और इर्द गिर्द के दालान और हुजरे शिकस्तगी के नज़र हो चुके हैं। सिर्फ कहीं कहीं की नमूद बाक़ी रह गई है। रौज़ा मुबारक चौकोर शक्ल का है जिसका हर कोना 14 फ़ुट 8 इंच है।

शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) और मशरिक़ (यानी पूरब) में तीन तीन दर हैं जो संगीन जालियों से बंद हैं। सिर्फ जुनूब (यानी दक्खिन) का दर्मियानी दर खुला हुआ है, गुंबद के नीचे दो मज़ार हैं जिनके संगीन तावीज़ पुरानी बनावट के हैं। पच्छिमी तावीज़ पर कलिमा तय्यिब और अल्लाह और पूर्वी तावीज़ पर सिर्फ अल्लाह लिखा हुआ है। पच्छिमी मज़ार मुबारक मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का बताया जाता है। पूर्वी मज़ार के बारे में कुछ हाल नहीं मालूम हो सका। सीकरी और क़ुर्बो जवार यानी आस पास के लोगों से मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के हालात पूछे तो जोशे एतिक़ादी की बहुत सी रिवायतें मालूम हुईं। लेकिन सिवाए नाम के कि वो भी बहुत मुश्किल से मालूम हो सका और कुछ हाल ना खुला। इस के बाद बहुत सी किताबें देखीं, जवाहिरे फ़रीदी से सिर्फ इतना

पता चला कि मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का विसाल मुबारक 29 जुमादस्सानी 721 हिजरी ब मुताबिक़ 1321 ईस्वी को हुआ। जो नासिरुद्दीन ख़ुसरो ख़ां का ज़माना था।

ख़ानक़ाह के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक वसीअ मस्जिद थी जो मुन्हदिम हो गई यानी गिर गई है। मगर ख़ुश क़िसमती से इस के कत्बा का एक टुकड़ा अब तक मौजूद है इस के अक्सर हुरूफ़ पढ़ने में नहीं आते लेकिन मस्जिद और तारीख़ साफ़ पढ़ ली गई वो येह है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाहु

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

मस्जिद सन अरबआ अशर व सबआ मिअत

अल ख़ामिस वल ईशरीन अल रमज़ान

इस से मालूम होता है कि इस मस्जिद की तामीर 25 रमज़ान 714 हिजरी ब मुताबिक़ 1314 ईस्वी को ख़त्म हुई। यानी मख़दूम शैख ताजुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात से सात आठ साल पहले सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने में येह मस्जिद तामीर हुई थी।

रौज़ा मुबारक के इर्द गिर्द बहुत सी क़ब्रें हैं जिनके संगीन और ख़ूब सूरत तावीज़ साफ़ बता रहे हैं कि हम ज़ी मर्तबा बुज़ुर्गों के आराम गाह हैं, मगर कत्बा से अक्सर ख़ाली हैं और जिन पर कत्बा है भी उन पर भी कलिमा तय्यिबा, अल्लाहु अकबर, ला तकनतू मिन रहमतिल्लाह, आयतुल कुर्सी वग़ैरा लिखी हुई है। नामो निशान का कुछ पता नहीं। निहायत शौक़ो ज़ौक़ से एक एक क़ब्र को देखा तो तीन गुमनामों का नाम मिला। मिन जुमला उनके गुंबद के गोशए शुमाल (यानी उत्तर) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक

तर्ज़ के बराबर बराबर चार तावीज़ ज़मीन दोज़ हैं उनमें एक पर कलिमा तय्यिबा के नीचे येह इबारत अरबी ख़त में लिखी हुई है:

वफ़ात याफताह शैख़ नज्मुद्दीन आला फ़ी शहरि रमज़ान ब तारीख़ नवाज़ दहुम सन सबआ ख़मसीन तिसआ मिअत (19 रमज़ान 957 हिजरी ब मुताबिक़ 1550 ईस्वी)

गोशए जुनूब (यानी दक्खिन) व मशरिक़ (यानी पूरब) में चार दीवारी के क़रीब दो तावीज़ों पर कलिमा तय्यिबा के नीचे येह इबारत लिखी है:

हाजी बेगम कूच शैख़ अज़ीज़ुर्रहमान ब तारीख़ 18 शहर रबीउल आख़िर 1011 हिजरी ब मुताबिक़ 1602 ईस्वी

दूसरी क़ब्र पर येह इबारत लिखी है :

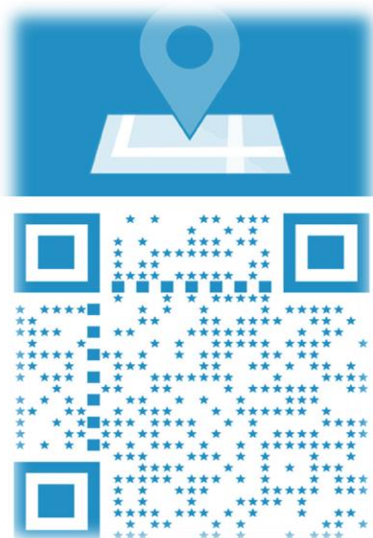
हाजी शैख़ अज़ीज़ुर्रहमान इब्न शैख़ अब्दुर्रहमान वाइज़

येह शैख़ अब्दुर्रहमान इसी सीकरी के रहने वाले और सुल्तान सिकन्दर लोदी के मुक़र्रबाने ख़ास में से थे, हमेशा बादशाह के साथ रहते थे।

इस मक़बरे के सामने भरतपुर की सड़क की शुमाली यानी उत्तरी पटरी पर एक छोटा सा गुंबद बना है जिसके अंदर एक क़ब्र है और इसी के बराबर एक बच्चे की क़ब्र है जिसका तावीज़ मुनक़्क़श और बहुत ख़ूबसूरत है और इस पर आयतुल कुर्सी लिखी हुई है।

गुंबद गच का है और इस के नीचे जो पत्थर लगे हैं उन पर चारों तरफ़ **या अल्लाह या फ़त्ताह** लिखा हुआ है। क़ुर्बो जवार यानी आस पास में मूसा गुंबद तक बहुत सी क़ब्रें हैं।

मकबरा मख्दूम साहिब के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं ।





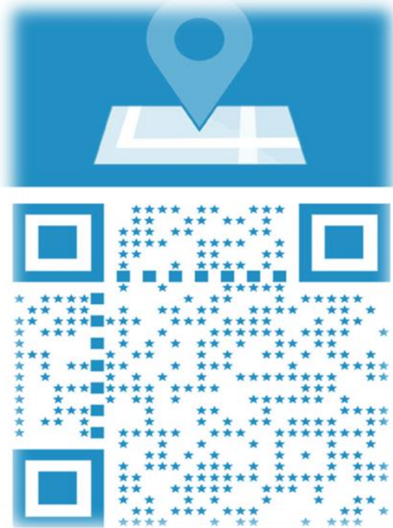
मूसा गुंबद

हज़रत शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के बड़े भाई और नवाब इब्राहीम ख़ान के बाप हैं । आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा सीकरी में तेराह मोरियों के पास भरतपुर की सड़क पर मौजूद है और मूसा गुंबद के नाम से मौसूम है और फ़तेहपुर से दिखाई देता है। इसे अकबर के ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे नवाब इब्राहीम ख़ां ने तामीर कराया था। उस के क़ुर्बो जवार यानी आस पास के निशानात से ज़ाहिर होता है कि पहले इस के इर्द गिर्द चार दीवारी थी और इस के अंदर कुछ और इमारत भी थी जो मुन्हदिम हो गई यानी गिर गई है। अब मक़बरा का सिर्फ दर्मियानी संगीन गुंबद बाक़ी है जो 3 फ़ुट बुलंद चबूतरे पर बना हुआ है।

बाहरी जानिब चारों तरफ़ एक एक मेहराब दार दर, दर्मियान में और इस के दोनों जानिब नीचे ऊपर दो दो मेहराब दार दरों के निशान बने हैं। दर्मियानी दरों के दोनों बालाई सिरों पर बजाये फूलों के इस्मे **अल्लाह** निहायत ख़ुश ख़त से लिखा है । सबसे ऊपर चारों तरफ़ मुनक़्क़श कंगूरे मुज़य्यन हैं । गुंबद गच का है, चारों तरफ़ दरवाज़े हैं । जिनमें जुनूबी यानी दक्खिनी दरवाज़ा खुला हुआ है। बाक़ी बंद हैं। पहले उनमें जालियाँ लगी थीं। अब सिर्फ पूर्वी दरवाज़े में किसी क़दर टुकड़ा जाली का बाक़ी रह गया है। गुंबद के नीचे का रकबा 24 फ़ुट 10 इंच X 24 फ़ुट 10 इंच है। और 4 फ़ुट के क़रीब दरवाज़ों का आसार है । दरवाज़ों के दर्मियान में दो दो बड़े ताक़ बने हैं। इस के ऊपर हश्त यानी आठ पहल हिस्सा है जिसके हर पहल में मेहराब दार सींचियों के निशान हैं इस से ऊपर 16 पहल क़ाईम किए हैं जिसके हर पहल में मेहराब दार खिड़कियों के निशान बने हुए हैं। इस के

ऊपर संगीन लदाओ की छत है जिसे लाल पत्थर के दर्मियान में सफ़ैद पत्थर से 16 फाँकें बना कर ख़ुशनुमा बनाया गया है। दर्मियान में एक संगीन ख़ूबसूरत फूल नसब है, गुंबद में कुल 16 संगीन तावीज़ हैं, 8 बड़े और 8 बच्चों के हैं मगर किसी पर कत्बा नहीं है। मशरिक़ (यानी पूरब) में एक चौखंडी के अंदर जो सवा 7 x सवा 7 फ़ुट है एक तावीज़ है। क़ुर्बो जवार यानी आस पास में और भी कई संगीन तावीज़ पड़े हुए हैं। मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक पुख़्ता कुँआं मौजूद है। बयान किया जाता है कि सीकरी में हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि और उन के वालिदैन यानी माँ बाप का मकान इसी मक़ाम पर था जहां अब येह मक़बरा मौजूद है।

मूसा गुंबद के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आप आसानी के साथ वहाँ तक पहुँच सकते हैं।





मकतबा दारुस्सुन्ना की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुंचाने, दीनी जानकारी को आम करने और मुसलमानों के दिलो में नबी ﷺ का इश्क़ पैदा करने और सुन्नतों का आमिल बनाने की पहली कोशिश बनाम :

आँखों का तारा नामे मुहम्मद

मुसन्निफ़
मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान
अत्तारी मदनी फतेहपुरी

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की खिदमत

मुहब्बत और इश्क़ में फर्क़
इश्क़े रसूल की निशानियां
मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं
प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतें
आँखों का तारा नामे मुहम्मद
सुन्नतों पर अमल का सवाब
हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख्लूक़ है
सहाबए किराम का अंदाज़े इश्क़
दुरूद शरीफ कि अनोखी फ़ज़ीलत
नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

PUBLISHER
MAKTABA DARUSSUNNA
Near Faizan-e-Madina Block, F-1, Tajnagri
Phase -2 Taj Ganj Agra - 282001
Mob. 6395069872, 8808693818
e:mail:shafiqmadani26@gmail.com

Rs. 170/-

अंदारे वाली बावली

13 जुमादस्सानी 933 हिजरी ब मुताबिक़ 1526 ईस्वी को मेवाड़ के मशहूर राजा राना सांगा (सिंह राम) और बादशाह बाबर से सीकरी के क़रीब मौज़ा ख़ानवां (रियासत भरत पुर) में लड़ाई हुई थी। उस वक़्त शाही फ़ौज इसी सीकरी के मैदान में जो फ़तेहपुर की पहाड़ी के नशेब में मौजूद और कोल या तालाब के नाम से मौसूम है मुक़ीम थी उस वक़्त राना सांगा की फ़ौज में 80 हज़ार सवार और 500 हाथी, सात राजा, महाराजा, नौराओ, 104 रावल और रावत कुल दो लाख एक हज़ार सिपाही थे। इस के मुक़ाबला में बाबर के पास दस बारह हज़ार से ज़ाइद फ़ौज ना थी। ऐन लड़ाई के दिन जबकि शाही फ़ौज दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत की वजह से बद दिल हो रही थी काबुल के एक नौ वारिद नुजूमी मुहम्मद शरीफ़ नामी ने येह पैशन गोई कर के कि मिर्रीख़ मग़रिब (यानी पच्छिम) में है लिहाज़ा शाही लश्कर को शिकस्त होगी तमाम सिपाही में और भी हिरास और तज़ल्ज़ुल पैदा कर दिया। येह हाल देख कर बाबर बादशाह को भी निहायत परेशानी पैदा हुई। लेकिन इस शुजाअ और बा हिम्मत बादशाह ने हिम्मत ना हारी और फ़ौरन तमाम लश्कर के चीदा चीदा उमरा और सिपाहियों को जमा कर के निहायत पुर जोश तक़रीर की और उसी वक़्त शराब और डाढ़ी मुंडाने से तौबा कर के तमाम शराब को फ़िक़वा दिया और शराब नोशी के क़ीमती बर्तनों को मुस्तहिक़्क़ीन फकीरों में तक़सीम करा दिया। बादशाह की इस तक़रीर और तौबा से मुताअस्सिर हो कर उसी वक़्त तीन हज़ार उमरा और अहले फ़ौज भी ताइब हो गए। उस के बाद बाबर ने हुक्म दिया कि जिस जगह येह शराब फेंकी गई है इस जगह बतौरे यादगार एक बाउली तामीर की जाये, चुनांचे बावली खुदना तो उसी वक़्त शुरू हो

गई और फ़तह के बाद शाही क़ियाम गाह यानी बाउली के अतराफ़ में एक बाग़ संगीन इमारत के साथ तामीर हो कर **"बाग़े फ़तह"** के नाम से मौसूम किया गया।

बाबर उस की सैर के वास्ते अक्सर आगरा से आया करता था। अब बाग़ या उस की किसी इमारत का तो कोई ख़ास निशान बाक़ी नहीं रहा लेकिन बाउली अब तक मौजूद और अंदारा घाटी के क़रीब होने की वजह से अंदारे वाली बाउली के नाम से मशहूर है।

इस की इमारत दक्खिनी कारख़ाना आब रसानी की बाउली की इमारत से मिलती जुलती है। येह हश्त यानी आठ पहल है। जिसका हर कोना 12 फ़ुट और क़ुतर यानी गोलाई साढ़े 27 फ़ुट है। और 45 फ़ुट गहरी है। बाउली के अंदर पूर्वी जानिब एक छोटा सा पुख़्ता गोला और क़ाईम है जिसकी मस्लिहत समझ में नहीं आती। बाउली में दो मंज़िला इमारत है। नीचे की मंज़िल में चारों तरफ़ हश्त यानी आठ पहल गैलरी बनी है जिसकी छत लदाओ की है और चारों तरफ़ चार दरवाज़े बाउली में खुले होते हैं। पहली मंज़िल से 16 सीढ़ियां ऊपर चढ़ कर दूसरी मंज़िल की गैलरी है जिस में चारों तरफ़ तीन दरियां बनी हुई हैं। सीढ़ियों के इर्द गिर्द दो मंज़िला दालान बने हैं। नीचे के दालान में 3-3 दर और एक एक कोठरी और ऊपर के दालानों में 5-5 दर हैं। बाउली के ऊपर 8 बड़े बड़े तोड़े नसब हैं। इन तोड़ों और सुतूनों और दरवाज़ों के ऊपर मुख़्तलिफ़ नक़्शो निगार और फूल पत्ते कुंदा यानी बने हुए हैं। दूसरी मंज़िल की सामने की तीन दरी के ऊपर कत्बा का पत्थर लगा हुआ है मगर कत्बा ऐसा मिट गया है कि एक हर्फ़ भी नहीं पढ़ा जाता। 25-30 साल पहले बाज़ बाज़ हुरूफ़ बाक़ी थे जिनके देखने वाले बयान करते हैं कि येह कत्बा खत्ते नस्ख़ में कुंदा था। इस के क़ुर्बो

जवार यानी आस पास में राजपूत राजाओं के महल थे जो टूटे पड़े हैं इन में हाडा का महल (ग़ालिबन राय सर्जन हाडा का महल होगा) सीतल महल, काला महल बहुत मशहूर हैं। मगर अब कोई इमारत बाक़ी नहीं अक्सर जगह चूने पत्थर के अंबार अलबत्ता नज़र आते हैं।

कोश खाना

अकबर बादशाह को इब्तिदाई उम्र ही से शिकारी जानवरों का ख़ास शौक़ था, बहुत से शेर जीते, गेंडे वग़ैरा निहायत मुहब्बत से पाल रखे थे। मस्त हाथी, शेर और हाथी, अरने भैंसे, गेंडे, हिरन लड़ाया करता था। चीतों से हिरन का शिकार करता था। बाज़ बहरी, जर्रे, बाशे उड़ाया करता था। और यहां तक शौक़ था कि शिकारी जानवर सफ़र में भी साथ रहते थे सबसे ज़्यादा चीतों का शौक़ था। सैंकड़ों चीते जमा किए। ऐसे सुधे हुए थे कि इशारों पर काम देते थे और देखने वाले हैरान रहते थे। कम ख़्वाब और मख़मल की झूलें ओढ़े, गले में सोने की ज़ंजीरें डाले, आँखों पर ज़रदोज़ी चश्मे चढ़े हुए बहलियों में साथ साथ चलते थे, उम्दा उम्दा चीते आते। उन में से इंतिख़ाब हो कर आला से आला ख़ास्सा में दाख़िल किए जाते थे। मगर येह अजीब इत्तिफ़ाक़ था कि उनकी तादाद कभी हज़ार तक नहीं पहुंची जब एक दो की कसर यानी कमी रहती कुछ ना कुछ ऐसा आरिज़ा होता था कि चंद चीते मर जाते थे। सब हैरान थे और अकबर बादशाह भी मुतअज्जिब रहता था। जहां येह सब शिकारी जानवर रहते थे वो कोश खाना के नाम से मौसूम और अजमेर दरवाज़े के क़रीब मौजूद है। इस के बीच में एक कमरा और इस के गिर्द बरामदा और चारों तरफ़ ग़ुलाम गर्दिश के तौर पर दालान बने थे। ग़ालिबन उन्हीं दालानों में या उन की पुश्त की

गिरी हुई इमारत में शिकारी जानवरों के वास्ते अलैहिदा अलैहिदा हिस्से क़ाईम थे। दर्मियानी कमरा हश्त यानी आठ पहल है जिसका हर कोना 7 और क़ुतर यानी गोलाई 19 फ़ुट है। छत संगीन लदाओ की गुंबद नुमा है। चारों तरफ़ 8 दरवाज़े और उन के ऊपर एक एक खिड़की लगी है। जुनूबी दरवाज़े में छत पर चढ़ने के वास्ते ज़ीना बना है। कमरे के गिर्द का बरामदा भी हश्त यानी आठ पहल है, जो 9 फ़ुट चौड़ा है। इस का हर कोना 18 फ़ुट है। हर पहल में 3-3 दर हैं जिनमें दर्मियानी दर बड़ा और इर्द गिर्द के इस से छोटे हैं। छत के ऊपर 7 फ़ुट बुलंद हश्त यानी आठ पहल चबूतरा बना है। बरामदे से 50 फ़ुट 2 इंच के फ़ासिले पर चारों तरफ़ ग़ुलाम गर्दिश के तौर पर 6 फ़ुट 5 इंच चौड़े दालान बने थे जिसमें 8 पहल थे। हर पहल में 77 मेहराब दार दर दो रवैया थे और 62 फ़ुट का दौर यानी गोला था। तीन पहल सही सलामत और चौथे पहल के सिर्फ 5 दर बाक़ी रह गए हैं बाक़ी गिर गए। दालानों की पुश्त पर यानी पीछे भी कुछ इमारत के निशान पाए जाते हैं जिसका एक सुतून 17 फ़ुट के फ़ासले पर अब तक मौजूद है और क़ुर्बो जवार यानी आस पास में भी गिरी हुई इमारत के निशानात हैं जिससे मालूम होता है कि येह बहुत वसीअ यानी लंबी चौड़ी इमारत थी।

बारह दरी मुत्तसिल अजमेर दरवाज़ा

कोश खाना के गोशए जुनूब (यानी दक्खिन) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में उस मक़ाम पर जहां फ़सील ख़त्म हुई है एक ख़ूबसूरत दो मंज़िला इमारत मौजूद है जो बारह दरी के नाम से मशहूर है। इस के सुतून मुनक़्क़श और सह दरियों की दीवारों पर निहायत नफ़ीस व चमकदार संदला किया हुआ है। बाज़ बाज़ मक़ामात पर गुज़श्ता नक़्शो निगार का बेहतिरीन हिस्सा बाक़ी और देखने के काबिल है। अफ़सोस कि येह ख़ूबसूरत इमारत

कई जगह से गिर गई है। अगर हुक्काम की नज़र से येह ख़ूबसूरत इमारत गुज़रती तो ना मुम्किन था कि इस की मरम्मत ना की जाती क्योंकि सनअतो ख़ुशनुमाई के लिहाज़ से येह किसी तरह उन इमारतों से कम नहीं है जिनकी मरम्मत हुई और हो रही है। इस के क़ुर्बो जवार यानी आस पास में और भी आसारे क़दीमा के निशान पाए जाते हैं। शुमाली यानी उत्तरी जानिब एक पुख़्ता कुँआं भी बना है।

PUBLISHER
Rs. 80/-
MAKTABA DARUSSUNNA
Near Faizan-e-Madina Block, F-1, Tajnagri
Phase -2 Taj Ganj Agra - 282001
Mob. 6395069872, 8808693818
e:mail:shafiqmadani26@gmail.com
Maktaba Darussunna Agra ki kitabon ka QR code

दीने इस्लाम की अहमियत, ज़रुरत और अक़्ली व नक़्ली ख़ूबियों और रूहानी ईलाज पर मुश्तमिल फ़िक्र अंगेज़ किताब बनाम
दीने इस्लाम की ख़ूबियाँ
आप इस किताब में पढ़ सकेंगें
अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेमत कौन सी है ?
दीन और इस्लाम का माना क्या है ?
दुरूदे पाक की अनोखी फ़ज़ीलत
हमारा दीन और हमारी हालत
दीने इस्लाम की क्या ख़ूबियाँ हैं ?
मुसलमानों से दर्दमंदाना अपील
कौन सा दीन मक़बूल है ?
इस्लाम क्यों आया ?
रूहानी ईलाज
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

पाँचवाँ बाब

दक्खिनी इमारात

*हकीमों के नल
*जुनूबी कारखानए आब रसानी
*मज़ार फ़तह ख़ान व नूर ख़ान शहीद
*मस्जिद शाह क़ुली
*रेलवे स्टेशन
*मस्जिद ख़लील
*बारह दरी राजा टोडरमल
*मस्जिद बहाउद्दीन
*मकबरा बहाउद्दीन

तरतीब व तस्हील
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

पाँचवाँ बाब

दक्खिनी इमारात

पहाड़ के नीचे की दक्खिनी जानिब की इमारतें

हकीमों के नल

हम्माम हकीम अबुल फ़तह गीलानी फ़तेहपुर की आबादी से थोड़ी दूर आगे बढ़ कर आगरा की पुख़्ता सड़क के उत्तरी जानिब एक निहायत आलीशान और वसीअ हम्माम मौजूद है जो हकीमों के नल के नाम से मौसूम और यहां के सब हम्मामों से ज़्यादा ख़ूबसूरत है। बयान किया जाता है कि येह हम्माम रफ़ाहे आम के तौर पर हर ख़ास व आम लोगों के इस्तिमाल के वास्ते तामीर किया गया था। और इस के अक्सर दर्जे हिक्मत से पुर कर के ख़ास ख़ास बीमारियों के ईलाज के वास्ते बनाए गए थे। येह अकबरी ज़माने के मशहूर तबीब मसीहुद्दीन हकीम अबुल फ़तह गीलानी की मसीहाई का नतीजा और तिलस्मस कारी का नमूना है। हकीम अबुल फ़तह मौलाना अब्दुर्रज़्ज़ाक़ गीलानी के बेटे थे। हकीम अबुल फतह 982, 983 हिजरी ब मुताबिक़ 1574 से 1575 ईस्वी में अपने भाईयों हकीम हम्माम और हकीम नूरुद्दीन के साथ हिन्दुस्तान में वारिद हो कर कमाल के जौहरी के दरबार में आला दर्जा का तक़र्रुब हासिल किया, 987 हिजरी ब मुताबिक़ 1579 ईस्वी में बंगाला की सदारत पर सरफ़राज़ी पाई। अगर्चे मन्सब हज़ारी से कम रहा मगर हर वक़्त की हुज़ूरी और मुसाहिबत के सबब से जो बात उन्हें हासिल थी वो बड़े बड़े अमीर लोगों को मयस्सर ना थी। चुनांचे बड़े बड़े उमरा उनकी हालत पर रश्क करते थे। 990 हिजरी ब मुताबिक़ 1586

ईस्वी के जशन में उन्हें की राय से मुल्क के बड़े बड़े शहरों में दारुश्शिफ़ा यानी अस्पताल क़ाईम होने की तजवीज़ मंज़ूर हुई।

997 हिजरी ब मुताबिक़ 1588 ईस्वी में कश्मीर के सफ़र में अकबर बादशाह के साथ थे। वापसी के वक़्त हसन अब्दाल के मक़ाम पर पेट के दर्द और इस्हाल में गिरफ़्तार हो कर सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया यानी इंतिक़ाल हो गया। अकबर बादशाह को सख़्त सदमा हुआ, उनकी तसानीफ़ से फ़त्ताही शरह कानून्चा, कयासिया, चार बाग़ बहुत मशहूर हैं। तमाम तारीख लिखने वाले उनके इल्मो फ़ज़्ल और कमालात के बाब में मुत्तफ़िक़ुल लफ़्ज़ हैं। उर्फ़ी ने उनकी तारीफ़ में कई क़सीदे बड़ी धूम धाम के कहे। हकीम साहिब ने भी उन्हें इस तरह रखा कि जब तक जिए और के पास जाने की ज़रूरत ना हुई।

मलिकुश्शुअरा फ़ैज़ी ने अपनी अर्ज़ दाश्त में इस हम्माम की बाबत एक फ़िक़रा तहरीर किया था।

इस बे नज़ीर हम्माम में इस किस्म के मुतअद्दद दर्जे और ग़ुस्ल ख़ाने हैं कि इस के अंदर दाख़िल हो कर भूल भुलैयां का सा आलम हो जाता है। अक्सर दर्जों में हौज़ और फ़व्वारे मौजूद और ऐसा नफ़ीसो ख़ुशनुमा नक़्क़ाशी का काम बाक़ी है जिसकी चमक दमक से आँखें ख़ीरा होती हैं, हम्माम की पूर्वी दीवार से मिला हुआ एक पुख़्ता कुँआं बना है जिसमें से इस हम्माम में पानी पहुंचाया जाता था, हम्माम के तमाम ग़ुस्ल ख़ानों और कमरों के दरो दीवार में नल लगे हुए हैं। जिस वक़्त तमाम दर्जों में पानी जारी होगा हौज़ों में फ़व्वारे छूटते होंगे, ख़ुशनुमा झरनों के ज़रिये से पानी नीचे उतर कर एक दर्जा से दूसरे दर्जे में जाता होता हम्माम में हर किस्म की आराइशो

ज़ेबाइश के सामान मौजूद होंगे। क्या उस वक़्त ग़ुस्ल और सैर करने वालों की निगाहों में खूबसूरती का मंज़र ना फिर जाता होगा।

दक्खिनी कारख़ाना आब रसानी (बाउली सड़क आगरा)

उत्तरी कारख़ाना आब रसानी यानी पानी पहुंचाने का कारखाना की तरह येह कारख़ाना आब रसानी पहाड़ के दक्खिनी जानिब आगरा की पुख़्ता सड़क पर मौजूद है जो आगरा की सड़क वाली बाउली के नाम से मौसूम है। इसी के क़रीब वो पुख़्ता तालाब बना हुआ है जो ज़मानए हाल में चूंगी की जानिब से तामीर किया गया है। इस कारख़ाना की बाउली की इमारत निहायत ख़ूबसूरत मज़बूत और आलीशान है। फ़तेहपुर में बहुत सी बाउलियां हैं मगर किसी की इमारत ऐसी नफ़ीस और ख़ूबसूरत नहीं। ज़मीन के अंदर चारों तरफ़ लाल पत्थर की तीन मंज़िला इमारत बनी हुई है। ऊपर चौथी मंज़िल पर भी एक कमरा बना हुआ है। उत्तरी जानिब पच्छिमी गोशे में सदर दरवाज़ा है। अंदर दरवाज़े से मिली हुई मशरिक़ (यानी पूरब) व मग़रिबी यानी पच्छिम में दो सींचियाँ 16 x 6 फ़ुट बनी हैं। पच्छिमी सींची से मिला हुआ ज़ीना और उस के बराबर तीन दर का बाउली का पच्छिमी दालान साढ़े 18 x 9 फ़ुट 5 इंच है जिसका सिल्सिला दक्खिनी दालान से मिल गया है।

पच्छिमी दालान के आगे एक छोटा सा चौकोर शक्ल का चबूतरा जिस पर दरवाज़ा की जानिब से चार सीढ़ियां बनी हुई हैं। जिनके शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में दर्मियानी मंज़िलों में पहुंचने के वास्ते रास्ते और उन के बाद दालान बने हैं। चुनांचे 13 सीढ़ियों के बाद एक चौड़ी सीढ़ी बनी है। जिसके दोनों किनारों पर दूसरी मंज़िल में पहुंचने के वास्ते रास्ते बने हैं। इस के बाद 14 सीढ़ियां उतर कर एक चबूतरा 9 फ़ुट 8

इंच x 7 फ़ुट 10 इंच बना है जिसके शुमाल (यानी उत्तर) व जुनूब (यानी दक्खिन) में एक एक सींची है और एक सीढ़ी उतर कर पहली मंज़िल को रास्ते गए हैं। इस के बाद 16 सीढ़ियां उतर कर बाउली के मेहराब दार दर में पहुंच जाते हैं। येह सवा 7 फ़ुट चौड़ा है। नीचे से ऊपर तक कुल बाउली में 51 सीढ़ियां चबूतरों के साथ हैं। इस दर के नीचे बाउली का हिस्सा गोल दायरा नुमा है जिसकी बुलंदी मौजूदा हालत में जबकि बाउली बहुत बट गई है 22 फ़ुट है, इस बाउली की इमारत चार मंज़िला है और इस के क़ुर्बो जवार यानी आस पास में पहाड़ पर पानी पहुंचाने के वास्ते इसी तरह के हौज़ और नालियां बनी थीं जैसे कि उत्तरी कारखाना आब रसानी में हैं।

मज़ार फ़तह ख़ान व नूर खान शहीद

फ़तह ख़ान और नूर खान दोनों भाई थे जो काबुल के बाशिंदे बयान किए जाते हैं। दोनों के मज़ार आगरा की पुख़्ता सड़क के क़रीब फ़सील के अंदर मौजूद हैं। क़स्बा के लोग इन मज़ारों से ख़ास अक़ीदत रखते और उन्हें बा फ़ैज़ बताते हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि येह बादशाह बाबर की फ़ौज में शरीक थे और राना सांगा की लड़ाई में शहीद हुए। बाज़ का बयान है कि दोनों भाई सिकरवारों की लड़ाई में इसी मक़ाम पर जहां अब मज़ार मौजूद हैं शहीद हुए थे।

मस्जिद शाह कुली

शाह कुली महरमे दरबारे अकबरी के एक बहादुर और नामी अमीर थे, जो मन्सब तीन हज़ारी और पाँच हज़ारी पर सरफ़राज़ थे और बादशाही ख़िदम्तें निहायत मेहनतो जाँ फ़िशानी से बजा लाते थे। बैरम ख़ान ख़ान ख़ानां ने उन्हें अपने बच्चे जैसा पाला था उन्होंने भी इस का ख़ूब हक़ अदा

किया। चुनांचे येह मिन जुमला इन चार अमीरों के थे जिन्होंने बुरे वक़्त में बैरम ख़ान का साथ दिया और मुसीबत के वक़्त रफ़ाक़त से मुँह ना मोड़ा। हेमों की लड़ाई में येह ही हेमों को उस के हवाई हाथी के साथ गिरफ़्तार कर के लाए थे।

एक मर्तबा आशिक़ मज़ाजी के मैदान में भी उन्होंने ख़ूब बहादुरी दिखाई। क़बूल ख़ान नामी एक खूबसूरत नौजवान था जो रक़्स यानी नाचने में मोर और आवाज़ में कोयल को मात करता यानी हराता था, येह उस पर दीवाने थे। जब अकबर को येह हाल मालूम हुआ, क़बूल ख़ान को नज़र बंद कर दिया। उन्हें बड़ा रंज हुआ, घर में आग लगा दी और जोगियों का भेस बदल कर जंगल में जा बैठे। ख़ान ख़ानां अब्दुर्रहीम जो उनके मुरब्बी थे दरबार में मौजूद थे, उन्होंने अकबर के दरबार में भी सिफ़ारिश की और जोगी जी की दिलदारी के लिए एक ग़ज़ल मौज़ूं कर के जा कर सुनाई और समझा बुझा कर फिर जोगी से अमीर बना कर दरबार में दाख़िल किया।

फ़तेहपुर में मौजूदा आबादी के किनारे पर आगरा की सड़क के दक्खिनी जानिब उनकी आलीशान हवेली थी। हवेली तो क़ाईम नहीं रही लेकिन वो मक़ाम अब तक शाह कुली के नाम से मौसूम चला आता है। पुराने आसार में सिर्फ एक टूटी हुई मस्जिद लाल पत्थर की बाक़ी रह गई है जो कारखाना आब रसानी की बाउली के सामने सड़क के दक्खिनी जानिब दिखाई देती है। येह पाँच दर की दोहरे दर्जा की मस्जिद है जिसका रकबा 46 x 26 फ़ुट है। इस की छत पत्थर की पटियों से पटी है। अंदरूनी दर्जा की छत गिर गई सिर्फ़ बाहरी दर्जा की बाक़ी है। मिंबर वग़ैरा कुछ बाक़ी नहीं रहा।

रेलवे स्टेशन

आगरा बयाना रेलवे जिस पर फ़तेहपुर सीकरी का स्टेशन मौजूद है। सेंट्रल इंडिया रेलवे की शाख़ है जो दिसंबर 1913 ईस्वी से जारी हुई है। फतेहपुर सीकरी का येह रेलवे स्टेशन आबादी के क़रीब फ़सील के अंदर मौजूद है। इस की इमारत मामूली है मगर वेटिंग रुम (यानी आराम कमरा) निहायत ख़ुशनुमा और देखने के काबिल है जिसके फ़र्श और हाशियों में मुख़्तलिफ़ रंग की चीनी की ईंटें लगाई गई हैं।

मस्जिद ख़लील

इसी शाह कुली के मुक़ाम पर मस्जिद के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक ईहाते के अंदर एक छोटी मस्जिद और क़ब्रिस्तान मौजूद है जो मस्जिद ख़लील के नाम से मौसूम है। येह तीन दर की लाल पत्थर की मस्जिद है जो 19 x 10 फ़ुट है। इर्द गिर्द दो एक दरें हैं जिनमें एक एक क़ब्र है। मस्जिद के अंदर दर्मियानी मेहराब के ऊपर अरबी इबारत के नीचे एक फ़ारसी कत्बा लिखा है।

मस्जिद के आगे सेहन में कई क़ब्रें हैं जिन के तावीज़ लाल पत्थर के हैं और उन पर फ़ारसी की तारीखें लिखी हुई हैं। इसी ईहाते के क़रीब दूसरा ईहाता है इस में भी एक तीन दर की मस्जिद और क़ब्रिस्तान है।

बारह दरी राजा टोडरमल

फतेहपुर के बाज़ार की सड़क से जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब दो तीन फ़र्लांग के फ़ासिले पर ग्वालियर और तेहरा दरवाज़े के दर्मियान में एक इमारत मौजूद है जो बारह दरी राजा टोडरमल के नाम से मौसूम है। राजा टोडरमल ज़ात के टनन गौत के खत्री और लाहरपुर इलाक़ा अवध का रहने

वाला था। बेवा माँ ने बड़ी तंगदस्ती और गरीबी की हालत में पाला था। पहले आम आदमियों के ज़मुरे में मुलाज़िम हुए। लेकिन अपनी लियाक़त और कार गुज़ारी यानी काम की बदौलत बहुत जल्द तरक़्क़ी पा कर दीवाने कुल के मुअज़्ज़ज़ ओहदे पर सरफ़राज़ हुए। चित्तौड़, रनथंबोर, सूरत, गुजरात, बंगाला वग़ैरा के मारकों में सिपाह गिरी और सरदारी के भी ख़ूब जौहर दिखाए, 990 हिजरी ब मुताबिक़ 1582 ईस्वी में बादशाह का जशने ज़ियाफ़त अपने घर (ग़ालिबन इसी बारह दरी) में सर अंजाम दिया।

अकबर बादशाह बंदा नवाज़ और वफ़ादारों का कारसाज़ था। इस के घर पर आया, उनकी इज़्ज़त एक से हज़ार हो गई। 993 हिजरी ब मुताबिक़ 1584 ईस्वी में मन्सब चार हज़ारी अता हुआ। 997 हिजरी ब मुताबिक़ 1588 ईस्वी में ब मक़ाम लाहौर इंतिक़ाल किया। अकबरी ज़माने के बहुत से आईन और क़वानीन और दफ़्तर दीवान के दस्तूरुल अमल उन से मंसूब हैं जो कि तारीख़ों में नक़ल होते चले आते हैं।

इस इमारत के दर्मियान में एक हश्त यानी आठ पहल कमरा है जिसका क़ुतर यानी गोलाई साढ़े 25 फ़ुट और हर कोना 10 फ़ुट है। छत लदाओ की गुंबद नुमा है। चारों तरफ़ चार बड़े दरवाज़े 8 फ़ुट चौड़े और उन के दर्मियान में चार छोटे दरवाज़े 3 फ़ुट चौड़े बने हैं। बड़े दरवाज़ों की बग़लों में ख़ोल हैं, जिससे मालूम होता है कि इन दरवाज़ों में जो किवाड़ लगे थे वो दरवाज़े के खोलने के वक़्त उन खोलों में चले जाते थे। कमरे के आगे चारों तरफ़ 3,3 दर का बरामदा और उन के गोशों में चार चार दरवाज़ों की बग़ली में कोठरियां या सींचियाँ और कोठरियों के आगे एक एक सह दरी बनी है। बरामदे के सुतून मुनक़्क़श और निहायत आला दर्जे के नक़्शो निगार से सजे हुए हैं। बरामदों में छोटे बड़े ताक़ और फूल पत्ते बने हुए हैं। दूसरी मंज़िल पर

जाने के वास्ते दो ज़ीने हैं जहां बरामदों और कोठरियों की छत पर इसी तरह के बरामदे और कोठरियां बनी हैं। उन के सुतून और तोड़े भी मुनक़्क़श और बहुत ख़ूबसूरत हैं। चारों तरफ़ चार ज़ीने बने हैं जिनके ज़रिये से इस इमारत की बालाई छत पर पहुंचते हैं। जहां सिर्फ एक हश्त यानी आठ पहल चबूतरा बना है। इमारत के चारों तरफ़ बाग़ था जिसकी रविशों के निशान अब तक नुमायां हैं।

मस्जिद बहाउद्दीन

बहाउद्दीन नाम के एक शख़्स जहांगीर के ज़माने में शाही चूना पज़ था। जो मालूम होता है कि निहायत आली हौसला और बा हिम्मत आदमी था। इस ने तेराह दरवाज़े के पास एक संगीन मस्जिद और मक़बरा तामीर कराया था जो निहायत ख़ूबसूरत और फतेहपुर की देखने के काबिल इमारतों में शुमार होता है। मस्जिद का रकबा 23 x 13 फ़ुट है। आगे 29 x 29 फ़ुट सेहन है। छत पत्थर की पटियों से पटी है। सुतून और तोड़े ख़ूबसूरत और मुनक़्क़श हैं। छत के ऊपर चार मरमर के पत्थर के गुलदस्ते मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब और चार लाल पत्थर के मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार के ऊपर मुज़य्यन हैं।

मकबरा बहाउद्दीन

मस्जिद से मिला हुआ शुमाली यानी उत्तरी जानिब मक़बरा है, येह एक ख़ूबसूरत संगीन ईहाते से जिसकी दीवारें 5 फ़ुट बुलंद हैं महसूर यानी घिरा हुआ है। ईहाते की जुनूबी यानी दक्खिनी और मशरिक़ी यानी पूर्वी दीवार ख़ूबसूरत चालियों से जिनमें निहायत ख़ूबसूरती से मेहराब दार ताक़ बनाए गए हैं मुज़य्यन है। मग़रिबी यानी पच्छिमी दीवार के दर्मियान में

कनाती मस्जिद और ताक़ और मुसल्लों के निशान बने हैं। दीवारों के ऊपर निहायत नफ़ीस ख़ूबसूरत और मुनक़्क़श कंगूरे बने हुए हैं। जो कुल इमारत की ज़ेबो ज़ीनत का बाइस हैं। येह ईहाता दक्खिन व पूरब के सिवा जो किसी क़दर आगे को निकला हुआ है मुरब्बा यानी चौकोर शक्ल का है जिसका हर कौना सवा 75 फ़ुट है। अंदर संगीन फ़र्श है, दर्मियान में गुंबद और अतराफ़ में 5,5 दर का बरामदा है।

गुंबद के नीचे का दर्जा 20×20 फ़ुट है जिसमें संग मरमर के दो तावीज़ हैं । एक मर्दाना बहाउद्दीन का जिस पर क़लम दान बना है दूसरा ज़नाना उन की बीवी का जिस पर तख़्ती बनी है । दोनों पर बिस्मिल्लाह शरीफ, आयतुल कुर्सी और कलिमा तय्यिबा और दीगर आयात कुरआनी लिखी हुई हैं। चारों तरफ़ चार दरवाज़े हैं जिसमें सिर्फ दक्खिनी जानिब का दरवाज़ा खुला है। बाक़ी तीनों में अंदर लाल पत्थर की और बाहर संग मरमर की दोहरी जालियाँ लगी हुई थीं जिसमें अब सिर्फ उत्तरी दरवाज़े की दोनों जालियाँ बाक़ी रह गई हैं । बाक़ी दो दरवाज़ों में सिर्फ लाल पत्थर की जालियाँ बाक़ी हैं। चारों तरफ़ का बरामदा 42 x 42 फ़ुट है जिसके सुतून और तोड़े मुनक़्क़श और बहुत ख़ूबसूरत हैं। दीवारों में ताक़ और सुराहियाँ तरशी हुई हैं। सुराहियों के ऊपर इस्म **अल्लाह** निहायत ख़ुशख़त मनक़ूश है।

दर्मियानी हुजरे के ऊपर लाल पत्थर का गुंबद और चारों कोनों पर संग मरमर के चार गुलदस्ते और बरामदों की छत पर इसी तरह के चारों तरफ़ 6-6 गुलदस्ते बहुत ख़ूबसूरत मुज़य्यन हैं, बरामदा में वही कत्बा लगा हुआ है जो मस्जिद में है इस के कई मिसरे मिट गए हैं। दरवाज़े पर एक पुख़्ता कुँआं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

छठा बाब

आस पास की इमारातें

*ईदगाह
*क़दीम यानी पुराना क़ब्रिस्तान
*मज़ार बीबी आईशा व बीबी ज़ेबा
*मक़बरा नवाब इब्राहीम ख़ान
*मज़ार आदम शहीद
*मज़ारात मौज़ा चुरयारी
*पवनचक्की
*गूँगा महल

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

छठा बाब

फतेहपुर के आस पास की इमारातें

ईदगाह

फतेहपुर की फ़सील के बाहर चोर खिड़की के सामने पहाड़ के ऊपर एक छोटी सी मस्जिद बनी हुई है जो ईदगाह के नाम से मौसूम है। मुम्किन है कि अकबरी ज़माने में जबकि फ़तेहपुर की आबादी कोसों तक फैली हुई थी वहां कोई ईदगाह की इमारत हो । लेकिन येह मौजूदा मस्जिद इस क़दर मुख़्तसर है कि किसी तरह समझ में नहीं आता कि येह किसी ज़माना में ईदगाह के वास्ते मख़सूस हो। येह बिल्कुल ऐसी है जैसी अक्सर क़ब्रिस्तानों में बना दी जाती हैं। चुनांचे उस के आगे जो सेहन का चबूतरा बना हुआ है उस पर तीन क़ब्रें मौजूद हैं । जिनके तावीज़ निहायत ख़ूबसूरत हैं जो मोअज़्ज़िज़ीन के मालूम होते हैं। उनमें दो ज़नाने और एक मर्दाना है। और तीनों पर आयतुल कुर्सी मनक़ूश यानी लिखी हुई है। मस्जिद 25 x 7 फ़ुट है जिसमें तीन दर संगीन सुतूनों के क़ाईम हैं, चबूतरे के नीचे कई क़ब्रें हैं जिनमें सिर्फ एक के तावीज़ पर कलिमा तय्यिब और सूरह इख़लास मनक़ूश यानी लिखी हुई है। मस्जिद चारों तरफ़ से पुख़्ता ईहाता से महसूर यानी घिरी हुई है। चार दीवारी की दक्खिनी दीवार से मिली हुई एक ज़मीन दोज़ कोठरी निकली है जो पहले एक पुख़्ता चबूतरा मालूम होती थी, ना मालूम किस तरह से इस की छत का थोड़ा सा हिस्सा खुल गया है तो मालूम हुआ कि एक बड़ी कोठरी सी बनी है जिसके अंदर चूने की अस्तर कारी की हुई है। येह नीचे से देखने में अब भी एक चबूतरा ही मालूम होता है। ना मालूम येह किस ग़र्ज़ से और कब बनाई गई थी। अक्सर लोगों का ख़्याल है कि इस में

किसी ज़माना का ख़ज़ाना दफ़न था। ईहाते के दक्खिनी जानिब एक गुंबद बना हुआ है।

क़दीम यानी पुराना क़ब्रिस्तान

ईदगाह से लेकर मौज़ा जूताना बल्कि मंडवी मिर्ज़ा ख़ां तक पहाड़ के ऊपर ज़माने की बेवफ़ाई का नक़्शा और इबरत का मुरक़्क़ा खिंचा हुआ है। मीलों तक एक वसीअ शहरे ख़मोशाँ आबाद है। दर्मियान में जिन जिन मक़ामात पर चकीरों (संग तराशों, चक्की बनाने वालों) ने पत्थर निकालने के वास्ते सुरंगें बारूद से उड़ाई हैं। वहां की क़ब्रें कुछ पत्थर के टुकड़ों में दब दबा गईं। अक्सर तावीज़ इधर उधर पड़े अब तक नज़र आते हैं। जहां जहां ज़्यादा क़ब्रें थीं वो अलबत्ता बाक़ी रह गई हैं। ग़र्ज़कि अजीब हसरत का मक़ाम है।

गुज़र नागाह जब मेरा हुआ शहरे ख़मोशाँ में
अजब नक़्शा मुझे आया नज़र शाहाने आलम का
कहीं आईना दिलबर शिकस्ता था सिकन्दर का
कहीं टूटा पड़ा था कासाए सर ख़ाक में जम का

ईदगाह से मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब एक बुलंद टीले पर एक कनाती मस्जिद और सैकड़ों हज़ारों क़ब्रें बनी हुई हैं। हमने निहायत ग़ौर से हर एक संगीन तावीज़ को पास से जाकर देखा ताकि फ़तेहपुर की गुज़श्ता आबादी के किसी बाशिंदे का हाल मालूम करें। मगर अफ़सोस कि हर जगह ना कामयाबी हुई। दोपहर का वक़्त, गर्मी का मौसम, ख़ुश्क पहाड़ का मक़ाम, हसरतो ना कामयाबी, इन सब बातों ने मिल कर हमारी हिम्मत पस्त कर दी और हम नाकाम ही वापस हुआ चाहते थे कि एक बुज़ुर्ग के मज़ार के बुलंद चबूतरे ने हमारी रहनुमाई की, हम निहायत इश्तियाक़ से उधर बढ़े, जब

चबूतरे पर चढ़ कर तावीज़ को देखा और स पर कत्बा नज़र आया तो इस हसरत-ओ-इबरत के मुक़ाम पर भी जो मुसर्रत हुई उस का बयान इमकान से बाहर है। एक पुख़्ता चबूतरा पर जो 30×30 फ़ुट है एक मज़ार मौजूद है जिसका तावीज़ लाल पत्थर का निहायत मज़बूत है। और इस पर आयाते कुरआनी और येह कत्बा कुंदा है:

अली असग़र गुल बाग़े सियादत
कि औसाफ़श ना गंजद दर रसाइल
दर ऐहसानो फ़ज़ाइल बूद गंजे
- - - ख़ाक रा हाइल
चू रेहलत कर्द अज़ दुनिया ब जन्नत
बजू तारीख़ अज़ गंजे फ़ज़ाइल

मुंतख़बुत्तवारीख से इतना पता चलता है कि सैय्यिद अली असग़र बदायूं के रहने वाले थे और 976 हिजरी ब मुताबिक़ 1568 ईस्वी में साहिब मुंतख़बुत्तवारीख के साथ शैख़ निज़ामुद्दीन अमेठवी की ख़िदमत में गए थे।

मज़ार बीबी आईशा और बीबी ज़ेबा

बीबी आईशा और बीबी ज़ेबा दोनों बहनें और हज़रत शैख़ुल इस्लाम शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की साहिब ज़ादियाँ थीं। दोनों के मज़ार मौज़ा जूताना की आबादी के मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब पहाड़ के ऊपर जहां एक वसीअ और पुराना क़ब्रिस्तान मौजूद है एक चौखंडी के अंदर जो साढे 9 × साढे 9 फ़ुट है बने हुए हैं। तावीज़ सफ़ैद पत्थर के हैं जिन पर ज़नाना निशान यानी तख़्तियाँ बनी हुई हैं। पूर्वी जानिब बीबी आईशा और पच्छिमी जानिब बीबी ज़ेबा का मज़ार है।

इसी क़ब्रिस्तान में चौखंडी के क़रीब एक गुंबद बना है जिसके अंदर सात संगीन तावीज़ हैं। उनमें चार ज़नाने और तीन मर्दाना हैं। चंद तावीज़ बरामादे में भी हैं। मगर कत्बा किसी पर नहीं। ना पूछने से पता चला कि येह किस के मज़ार हैं। गुंबद के नीचे का कमरा मुरब्बा यानी चौकोर शक्ल का है जिसका हर कोना 24 फ़ुट है। इस में चूने की अस्तर कारी पर मंबतकारी के नक़्शो निगार थे जिसका कुछ नमूना अब भी बाक़ी है। कमरा के आगे चारों तरफ़ 41 फ़ुट लंबा बरामदा है जिसमें चारों तरफ़ 5,5 दर हैं। इस से मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब थोड़े फ़ासिले पर एक और गुंबद बना है जिसके नीचे का कमरा 20 × 20 फ़ुट है। चारों तरफ़ 34 फ़ुट लंबा बरामदा है। इस के अंदर चकीरों ने कूड़ा भर दिया है।

तीसरा गुंबद इस से थोड़े फ़ासिला पर मंडवी मिर्ज़ा ख़ान की आबादी के क़रीब जो किसी ज़माने में फ़तेहपुर का एक मुहल्ला था मौजूद है। इस के अंदर चकीरों ने इस क़दर कूड़ा भर दिया है कि येह ऊपर तक पट गया है। इस का रकबा बाहर से 20 × 20 फ़ुट है। अंदर बाहर बहुत ख़ूबसूरत नक़्शो निगार बने हुए थे जिनका कुछ हिस्सा अब भी मौजूद है। दो संगीन तावीज़ मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब बाहर पड़े हैं। अजीब दुनिया का कारख़ाना है। ज़िंदगी में क्या आलम होगा मरने के बाद किस शान का मक़बरा तामीर हुआ। आज कोई नाम लेवा भी मौजूद नहीं, गुंबद में कूड़ा करकट भरा है। तावीज़ मारे मारे फिर रहे हैं। अफ़सोस!

थे जो मशहूर क़ैसरो फ़ग़फ़ूर
बाक़ी उन के नहीं निशाने क़ुबूर
ताज में जिनके टिकते थे गौहर
ठोकरें खाते हैं वो कासए सर

पहाड़ के नीचे जुनूबी यानी दक्खिनी जानिब बयाना की सड़क पर इन दोनों गुम्बदों के दर्मियान में एक बड़ी पुख़्ता बाउली बनी हुई है जिसका क़ुतर यानी गोलाई 21 फ़ुट है येह किसी बाग़ की बाउली मालूम होती है, किनारों पर पुख़्ता नालियों के निशान बने हैं।

मक़बरा नवाब इब्राहीम ख़ान

नवाब इब्राहीम ख़ान हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के भतीजे और दरबारे अकबरी के एक काबिल अमीर थे उनका मक़बरा मौज़ा रसूलपुर में जो फ़तेहपुर से शुमाली यानी उत्तरी जानिब कोस डेढ़ कोस के फ़ासिले पर मौजूद है बना हुआ है। मक़बरा में चारों तरफ़ पुख़्ता चार दीवारी है जिसकी दीवारों के ऊपर ख़ूबसूरत कंगूरे और चारों गोशों पर बुर्ज और उन के नीचे कोठरियां बनी हुई हैं। ईहाते का रकबा अंदर से 166 x 141 फ़ुट है। चार दीवारी की दीवारें 3 फ़ुट आसार की हैं। और उन पर चूने की अस्तर कारी है। अंदर संगीन फ़र्श था जिसके अब सिर्फ कहीं कहीं के पत्थर बाक़ी रह गए हैं। एक छोटा दरवाज़ा मशरिक़ (यानी पूरब) की जानिब और सदर दरवाज़े शुमाली यानी उत्तरी जानिब बनता है जिसके बाहरी जानिब रंगीन बैल और ताक़ के अंदर का लाल पत्थर का फूल अब तक बाक़ी है, मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब मक़बरा से मिली हुई कनाती मस्जिद बनी है जो 35 ×22 फ़ुट है। दीवार में तीन ताक़ बने हैं। दर्मियानी बड़े ताक़ के इर्द गिर्द दायरा नुमा फूल और छोटे ताक़ों के इर्द गिर्द दायरा नुमा प्लेट पर कलिमा तय्यिबा मनक़ूश यानी लिखा हुआ है।

एक पुख़्ता चबूतरा पर जो 60 फ़ुट 6 इंच x 60 फ़ुट 6 इंच और 2 फ़ुट बुलंद है, मक़बरा का आलीशान गुंबद बना हुआ है। बाहर चारों तरफ़

बड़े बड़े मेहराब दार दर 12 फ़ुट 10 इंच चौड़े बने हैं जिनके अतराफ़ में निहायत ख़ूबसूरत सफ़ैद बैल चूने की बनी हुई है जो पाएदारी में संगीन बैल से किसी तरह कम नहीं है। दर्मियानी खिड़कियों के दोनों सिरों पर **"या अल्लाह"** और कहीं **"या फ़त्ताह"** लिखा हुआ है।

उन्हीं मेहराब दार दरों के अंदर दरवाज़े हैं जिनमें तीन जानिब के दरवाज़े लाल पत्थर की जालियों से बंद हैं सिर्फ जुनूबी दरवाज़ा खुला है। गुंबद के नीचे का हिस्सा 25 फ़ुट 10 इंच x 25 फ़ुट 10 इंच और दरवाज़ों का आसार 4 फ़ुट 5 इंच है। दरवाज़ों की बग़लों में दो दो बड़े बड़े ताक़ बने हैं। इस से ऊपर का हिस्सा हश्त यानी आठ पहल है जिसमें चारों तरफ़ चार मेहराब दार सींचियाँ (बड़े ताक़) और गोशों में ताक़ बने हैं। इस के ऊपर 16 पहल क़ाईम कर के मेहराब दार खिड़कियों के निशान बनाए हैं। इस के ऊपर लदाओ की छत है। छत के दर्मियान में एक बड़ा दायरा नुमा फूल जिसके अतराफ़ में 8 छोटे छोटे फूल बने हैं निहायत बारीक और ख़ूबसूरत बना हुआ है। तमाम दरो दीवार और छत पर ख़ूबसूरत रंगीन बैलें, मुख़्तलिफ़ नक़्शो निगार बने हुए थे जिसमें बहुत कुछ अब भी बाक़ी है। फ़र्श लाल पत्थर का था जिसके पत्थर लोग उखाड़ कर ले गए। अब बहुत थोड़ा हिस्सा बाक़ी रह गया है। 9 बड़े और 7 बच्चों के तावीज़ गुंबद के अंदर हैं जिनमें तीन संग मरमर के हैं। उनमें दर्मियानी तावीज़ नवाब इब्राहीम ख़ान का है। गुंबद के अंदर सराए फ़ानी की बेवफाई का नक़्शा और दुनियाए दना के कारख़ाने का मुरक़्क़ा नज़र आता है।

अजीब इबरत का मक़ाम और हसरत की जगह है
हसरत बरस रही है येह किस का मज़ार है ?

वही नवाब इब्राहीम ख़ान जो किसी वक़्त में अकबर बादशाह के मंज़ूरे नज़र, मुसाहिब और दारुल ख़िलाफ़त के सूबादार थें। वही नवाब साहिब जिन्होंने मरते वक़्त 25 करोड़ रुपये अपने ख़ज़ाने में छोड़े थे। वही नवाब शाह जिनकी औलाद अल्लाह पाक के फज़्ल से आज भी मुअज़्ज़ज़ और आम मुसलमानों की हालत देखते हुए बा हैसियत है कसमपुर्सी के आलम में कंजे लहद में पड़े हैं, मज़ार पर रौशनी, ख़ुश्बू, फूल पत्ते, आराइशो ज़ेबाइश के बजाये बिला मुबालग़ा सैरों, कबूतरों की बीट और कूड़े करकट का अंबार लगा हुआ है। अफ़सोस !

इत्र मिट्टी का जो ना मलते थे
ना कभी धूप में निकलते थे
गर्दिशे चर्ख़ से हलाक हुए
इस्तिख़्वां तक भी उनके ख़ाक हुए

मक़बरा के मशरिक़ी यानी पूर्वी जानिब बहुत बड़ा पुख़्ता तालाब था जिसमें अब ज़राअत यानी खेती होती है।

मज़ार आदम शहीद

मौज़ा रसूल पुर के पहाड़ के नीचे उत्तर और पच्छिम की जानिब उस रास्ते के ऊपर जो रसूलपुर से पतसाल को गया है एक चबूतरा पर शहीदों के मज़ार हैं। जो सिकरवारों की लड़ाई में शहीद हुए थे। उनमें एक मज़ार के ऊपर हुजरा बना हुआ है जिसकी छत पत्थर की पटियों से पटी है। क़ुर्बो जवार यानी आस पास के देहात वाले इस मज़ार से बहुत अक़ीदत रखते हैं। जब किसी की भी भैंस, गाय बच्चा देती है तो वो ख़ीर और बेवसी ले जा कर इस मज़ार पर चढ़ाता है। साहिबे मज़ार का नाम आदम शहीद मशहूर है। तीन क़ब्रों के तावीज़ लाल पत्थर के हैं जो बाद के मालूम होते हैं।

मज़ारात मौज़ा चुरयारी

फतेहपुर के उत्तरी जानिब डेढ़ कोस के फ़ासिले पर और सीकरी के सिवानह से मिला हुआ मौज़ा चुरयारी मौजूद है। इस की आबादी के मशरिक़ी यानी पूर्वी जानिब पहाड़ी और मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब एक बहुत बड़ा और बुलंद खेड़ा है जिसके क़ुर्बो जवार यानी आस पास में बहुत से आसारे क़दीमा के निशान हैं। ख़्याल किया जाता है कि मुसलमानों और सिकरवार ठाकुरों से 512 हिजरी ब मुताबिक़ 1118 ईस्वी में इसी मक़ाम पर लड़ाई हुई थी। खेड़ा के ऊपर दर्मियान में एक बुज़ुर्ग का मज़ार मौजूद है। जिसका बालाई तावीज़ तीन पुख़्ता चबूतरों पर जो यके बाद दीगर खेड़े के सबसे बुलंद मक़ाम पर बनाए गए हैं और खेड़े से साढ़े 14 फ़ुट बुलंद हैं मौजूद है। येह तावीज़ संग मरमर का है मगर अब शिकस्ता हालत में है। बालाई चबूतरे के इर्द गिर्द लाल पत्थर लगा हुआ है जिस पर निहायत उम्दा कटाओ का काम है।

नीचे तहख़ाने में पुख़्ता क़ब्र है, नीचे के चबूतरे के चारों गोशों पर बुर्जों के निशान हैं। मग़रिब (यानी पच्छिम) की जानिब थोड़े फ़ासिला पर एक और मक़बरा निहायत बुलंद बना हुआ है जिसके ऊपर दो लाल पत्थर के तावीज़ नज़र आते हैं। मगर उस के ऊपर चढ़ने का रास्ता अब मुन्हदिम हो गया यानी गिर गया है। और कोई जगह ऐसी बाक़ी नहीं कि जहां से कोई आदमी चढ़ सके, क़ुर्बो जवार यानी आस पास में अक्सर संगीन तावीज़ पड़े हुए हैं। येह मज़ार बहुत पुर फ़िज़ा जगह पर मौजूद है, कोसों तक का मंज़र वहां से दिखाई देता है। मैंने बहुत कोशिश की, गांव वालों और क़ुर्बो जवार यानी आस पास के लोगों से मिला मगर इन मज़ारों में आराम करने वालों के

हाल पर से गुमनामी का पर्दा ना उठा। इस से ज़्यादा कुछ ना मालूम हो सका कि खेड़े वाला मज़ार पीर पंच के नाम से मौसूम है।

नोटः क़ुर्बो जवार यानी आस पास के मुसलमान इन बुज़ुर्ग का नाम सरवर सुल्तान बताते हैं, इसी नाम का एक मज़ार मौज़ा रुन्कता में भी है जहां सालाना बहुत भारी मेला लगता है।

गांव वाले जो सब ग़ैर मुस्लिम हैं इस मज़ार से ख़ास अक़ीदत रखते हैं और नज़रो नियाज़ चढ़ाते रहते हैं। ग़ालिबन येह उसी लड़ाई के शहीदों के मज़ार हैं। आबादी से थोड़े फ़ासिले पर गोशा जुनूब (यानी दक्खिन) व मशरिक़ (यानी पूरब) में एक पुख़्ता चबूतरे पर जो 45 ×45 फ़ुट है एक लाल पत्थर का मक़बरा बना हुआ है जिसमें निहायत नफ़ीस पत्थर लगा है। इस का रकबा साढ़े 26 × साढ़े 26 फ़ुट है। चारों तरफ़ तीन तीन दर हैं। छत अब खुली हुई है, दर्मियान में संग मरमर का तावीज़ है, ऊपर के पत्थर कुछ मुनक़्क़श भी हैं। कुल इमारत की साख्त यानी बनावट फ़तेहपुर की इमारत से मिलती जुलती है। इमारत के चारों तरफ़ और अंदर करेल, जाल, पीलू, हिंगोट के दरख़्त इस क़दर घने लगे हैं कि मक़बरे को तिलस्म बका वली बना दिया है। क़रीब से भी कुछ नज़र नहीं आता, ना किसी तरफ़ से अंदर जाने का रास्ता बाक़ी है। निहायत दिक़्क़त और मुश्किल से दरख़्तों को साफ़ कर के गिरते पड़ते अंदर तक पहुंचे, जब मालूम हुआ कि मक़बरा है और दर्मियान में संग मरमर का तावीज़ उलटा पड़ा है, आबादी के गोशए जुनूब (यानी दक्खिन) व मग़रिब (यानी पच्छिम) में एक और लाल पत्थर का मक़बरा है जिसका रकबा सवा 16 x सवा 16 फ़ुट है। चारों तरफ़ तीन तीन दरवाज़े हैं। छत पत्थर की पटियों से पटी है, 2 लाल पत्थर के तावीज़ अन्दर

हैं और दो तीन बाहर रखे हुए हैं। गांव वाले इन दोनों मक़बरों को चौखंडी के नाम से मौसूम करते हैं। इन गुमनामों का नाम भी मालूम ना हो सका आबादी से जुनूब (यानी दक्खिन) की जानिब रास्ते के क़रीब एक मज़ार है जिसका तावीज़ लाल पत्थर का निहायत मज़बूत, मुनक़्क़श और ख़ूबसूरत है। ख़ुश क़िस्मती से इस पर कत्बा मौजूद था और कत्बा भी ऐसी बनावट का कि आज तक हज़ारों कत्बे देखे मगर इस बनावट का कत्बा कहीं नज़र नहीं पड़ा। तावीज़ पर मशरिक़ी यानी पूर्वी जानिब निहायत ख़ुशख़त खत्ते नस्ख़ में आयतुल कुर्सी लिखी हुई है। मग़रिबी यानी पच्छिमी जानिब बिल्कुल उसी ख़त में ब खत्ते मअकूस आयतुल कुर्सी लिखी हुई है। मैंने बहुत देर तक अपने हम राहियों के साथ दोनों का एक एक लफ़्ज़ मिलाया मगर कहीं फ़र्क़ नज़र ना आया। बिल्कुल येह मालूम होता है कि जो एक जानिब लिखा है वही दूसरी जानिब पत्थर पर जमा दिया है। हुरूफ़ उभरे हुए और बड़े बड़े हैं। सिरहाने पर जुदागाना ख़त में दो जगह कलिमा तय्यिबा और पावं पर येह तारीख़ लिखी हुई है:

मुहम्मद यार दर कश्मीर जां दाद
कि चूँ रुस्तम दिलेर व सफ़ शिकन बूद

सन कुछ मिट सा गया है मगर तारीख़ से 944 हिजरी ब मुताबिक़ 1537 ईस्वी निकलते हैं जो बादशाह हुमायूँ का ज़माना है।

पवन चक्की

इसी मौज़ा चुरयारी में पहाड़ी की सबसे बुलंद चोटी पर एक इमारत के कुछ आसार बाक़ी हैं जो पवन चक्की के नाम से मशहूर हैं। एक हश्त यानी आठ पहल गच का मकान है जिस का हर कोना 7 फ़ुट 4 इंच और क़ुतर यानी गोलाई 11 फ़ुट है। हर पहल में एक दरवाज़ा है, छत लदाओ की

है जिसके ऊपर 3 फ़ुट 4 इंच बुलंद चबूतरा है। येह चबूतरा भी हश्त यानी आठ पहल है जिसका हर कोना 10 फ़ुट 7 इंच है। आस पास और भी इमारतों के आसार हैं। बहुत से संगीन और मुनक़्क़श सुतून और पत्थर इर्द गिर्द पड़े नज़र आते हैं फ़ारसी तारीख़ों से मालूम होता है कि मीर फ़तहुल्लाह शीराज़ी ने फ़तेहपुर में पवन चक्की बनाई थी जो हवा से ख़ुद ब ख़ुद चलती थी। ग़ालिबन येह उसी चक्की की इमारत है। फ़ारसी तारीख़ों में इस का नाम **बादे आसिया** यानी हवा की चक्की लिखा है। साहिब मासरुल उमरा मीर मौसूफ़ के हाल में लिखते हैं : **“आसियाए साख्ता कि ख़ुद हरकत मी कर्द व आरद शुद”**

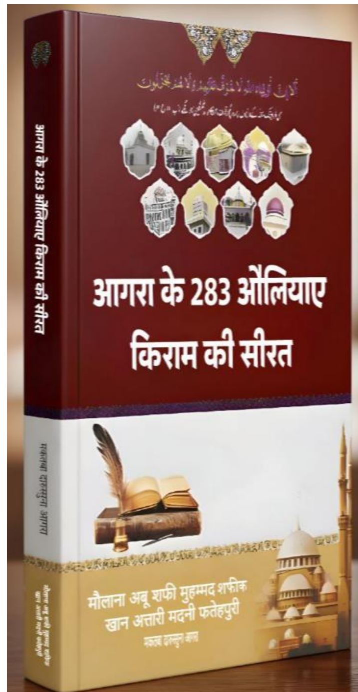
गूँगा महल (गुंग महल)

मौज़ा चुरयारी के खेड़ा के क़रीब एक मकान के आसार हैं जो गूँगा महल के नाम से मौसूम है, इसकी अस्लीयत येह है कि दरबारे अकबरी में एक दफ़ा येह सवाल पेश हुआ कि इन्सान की तबई और मादरी ज़बान क्या है ? और हदीस शरीफ़ में आया है कि सब बच्चे मज़हबे इस्लाम पर पैदा होते हैं। इस की अस्लीयत क्या है ? 988 हिजरी ब मुताबिक़ 1580 ईस्वी में इस की तहक़ीक़ के लिए बीस शीर ख़ार यानी दूध पीते बच्चे उन के माँ बाप को बहुत सा रुपया दे कर लिए गए और शहर फ़तेहपुर से बाहर एक वसीअ इमारत उन के रहने के वास्ते बनवाई गई और वहां ले जा कर रखा। उन की परवरिश के लिए जो औरतें रखी गई थीं उन्हें हुक्म दिया गया कि किसी किस्म की इन को तालीम ना दी जाये, ना उनके सामने कुछ गुफ़्तगु की जाये। बच्चों और ख़िदमत गारों के वास्ते हर किस्म के आसाइश के समान मुहय्या किए गए। मकान का नाम गुंग महल रखा गया, तीन चार साल के अरसे में कई बच्चे मर गए जो बाक़ी बचे बादशाह उन को देखने के लिए गया।

ख़िदमत गारों ने बच्चों को ला कर आगे छोड़ दिया, चलते फिरते खेलते कूदते थे बोलते भी थे मगर एक लफ़्ज़ भी समझ में नहीं आता था, जानवरों की तरह गाएं बाएं करते थे ग़ालिबन येह वही गुंग महल है जो देहात की बोली में गूँगा महल मशहूर हो गया है। (दरबारे अकबरी, मुंतख़बुत्तवारीख वग़ैरा)

उर्स मुबारक शैख सलीम चिश्ती

हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि का सालाना उर्स रमज़ान में होता है, 20 रमज़ान को बाद नमाज़ ज़ोहर मज़ार शरीफ़ का ग़ुस्ल होता है और 21 से 28 रमज़ान तक रोज़ाना दो मर्तबा मजलिसे क़व्वाली मुन्अक़िद होती है। अव्वल 10 बजे से 2 बजे तक ख़ानक़ाह सज्जादा नशीन साहिब में और दोबारा 5 बजे से 6 बजे तक बुलंद दरवाज़ा में। 29 रमज़ान को सुबह क़ुल हो कर उर्स ख़त्म हो जाता है।



मुरत्तिब की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाजों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाजों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	क़ुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	क़ुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96

21	आसान फ़र्ज़ उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज़ उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720
24	आसान खुत्बाते मुहर्रम	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400

44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435
50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख साज़ शख्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मते मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीकिया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200

67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक़्हे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फलाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375

किताबों की PDF डाउनलोड करने के लिये इस QR कोड को स्कैन कीजिए



याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		

याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		